हिन्दी सांध्य दैनिक

# प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 241, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 4 मार्च, 2024 दिन सोमवार गाजीपुर/वाराणसी

## पिछली सरकारों में लोगों को गुंडे-माफिया तबाह करते थे, अब ऐसा नहीं है : सीएम योगी

### पीएम मोदी के नेतृत्व में आज के नए भारत की ताकत का डंका पूरी दुनिया में बज रहा

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को गोरखपुर के ताल नदोर में पूर्वी उत्तर प्रदेश के पहले पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय का भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया। 80 एकड़ में बनने वाले इस महाविद्यालय के निर्माण पर करीब 350 करोड़ रुपये की लागत आएगी। भूमि पूजन एवं शिलान्यास के अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि जब अच्छी सरकार होती है तो वह जनता जनार्दन को सिर-माथे पर बैठाकर सेवा करती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार ऐसी ही है। इस सरकार में विकास है तो गरीब कल्याण भी। इसमें सुरक्षा, आजीविका, आस्था के सम्मान के साथ समृद्धि भी है। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भूमि का पूजन तथा बटन दबाकर शिलान्यास करने के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि पिछली सरकारों में लोगों को गुंडे-माफिया तबाह करते थे। योजनाओं का लाभ चंद लोगों को मिलता था और बाकी पब्लिक देखती रह जाती थी। आज डबल इंजन सरकार में

ऐसा नहीं है। हर किसी को योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में आज के नए भारत की ताकत का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। ऐसी सरकार कभी नहीं आई। इस समझ को बनाए रखना है और लोकसभा चुनाव में फिर एक बार मोदी सरकार तथा अबकी बार चार सौ पार के नारे को साकार करना है। सीएम योगी ने लोगों को यह भरोसा दिलाया कि ताल नदोर में बनने वाला पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय भविष्य में विश्वविद्यालय बना दिया जाएगा। तब गोरखपुर में पांच विश्वविद्यालय हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस महाविद्यालय में पशुओं के इलाज के साथ नस्ल सुधार के कार्य भी होंगे। यहां फिशरीज से जुड़े कार्यक्रम को भी आगे बढ़ाया जाएगा। यहां पढ़ाई कर युवा पशु चिकित्सक बन सकेंगे, उनके पास करियर बनाने का नया प्लेटफार्म होगा। मुख्यमंत्री ने बताया कि इस महाविद्यालय की ड्राइंग श्रावस्ती के राजा शालिहोत्र की परिकल्पना पर डिजाइन की गई है। राजा शालिहोत्र ने तीसरी सदी में शालिहोत्र संहिता रचकर पशुधन के क्षेत्र को समृद्ध किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लंबे समय तक पिछड़े रहे दक्षिणांचल को डबल इंजन की सरकार विकास की नई रफ्तार के साथ आगे बढ़ा रही है। वाराणसी फोरलेन और पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के साथ जल्द ही इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम बनाया जाएगा।

महाविद्यालय के पास नगर निगम 50 एकड़ में गोशाला बनवाने जा रहा है। गोरखपुर के विकास की चर्चा करते हुए सीएम ने कहा कि जो खाद कारखाना कांग्रेस सरकार में बंद हो गया था, उसे मोदी सरकार ने शुरू कर दिया। गोरखपुर में एम्स बन गया है। लिंक एक्सप्रेस वे चालू होने वाला है। गीडा में बड़े पैमाने पर उद्योग लगने से पांच हजार युवाओं को यहीं रोजगार मिल गया है। मुख्यमंत्री ने अयोध्या में प्रभु रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उल्लेख करते हुए लोगों से सवाल किया कि क्या सपा-बसपा की सरकार अयोध्या में मंदिर बनवा पातीं? लोगों ने समवेत जवाब दिया- नहीं। इस ओर मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले अयोध्या में रामभक्तों पर गोली चलती थी, आज पलक पांवड़े बिछाकर उनका स्वागत होता है। लंगर चल रहे हैं। भगवान का आशीर्वाद भी मिल रहा है और प्रसाद भी। सीएम योगी ने लोकसभा चुनाव में गोरखपुर से घोषित प्रत्याशी, सांसद रविकिशन शुक्ल के पक्ष में समर्थन की अपील करते हुए कहा कि हर कार्यकर्ता रविकिशन बनकर घर घर जाएगा और वोट मांगेगा।

### ऐसे अपराधियों को पुलिस भेजेगी जेल, बाप-दाद की संपत्ति तक होगी जब्त- सीएम योगी ने की घोषणा

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश भर के युवाओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि प्रदेश में कोई भी युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। यदि किसी ने ऐसा किया तो वह जिंदगी भर के लिए जेल में सड़ेगा। यही नहीं, उसके बाप-दादा की प्रॉपर्टी भी सरकार जब्त कर लेगी। सीएम योगी रविवार को राजकीय जुबली इंटर कॉलेज के मैदान में विद्यार्थियों को स्मार्टफोन/टैबलेट वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में 1500 विद्यार्थियों को टैबलेट और 3000 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गए। मुख्यमंत्री ने 15 विद्यार्थियों को टैबलेट और 10 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन अपने हाथों से प्रदान किया। इस अवसर पर सीएम ने 26 माध्यमिक विद्यालयों में 17.35 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट अलंकार के कार्यों तथा 141 माध्यमिक विद्यालयों में 7.58 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 330 प्रीमियम स्मार्ट क्लास रूम का शिलान्यास भी किया। चार इंटर कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को उन्होंने स्मार्ट क्लास का प्रमाण पत्र भी सौंपा। समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी में सिर्फ स्मार्ट सिटी ही नहीं होगी बल्कि स्मार्टफोन और स्मार्ट क्लास से जुड़कर यूपी के युवा पूरी दुनिया के सामने स्मार्ट युवा बनेंगे।

## उम्मीदवारों के एलान के बाद अखिलेश यादव ने दी पहली प्रतिक्रिया, बोले- 'जो बोरिया-बिस्तर बांधकर...'

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। समाजवादी पार्टी द्वारा प्रत्याशियों की घोषणा के बाद भाजपा ने भी 195 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। जिसमें उत्तर प्रदेश की 51 सीटें भी शामिल हैं। भाजपा द्वारा प्रत्याशियों की घोषणा के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव ने अपनी पहली प्रतिक्रिया दी। अखिलेश ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा- भाजपा की उम्मीदवारों की सूची, भाजापी की नाउम्मीदगी की घोषणा है। 'भाजपा की लोकसभा उम्मीदवारों की पहली सूची बता रही है कि ह्यप्रथम दृष्टयाह्न जिन सीटों पर भाजपा के जीतने की थोड़ी सी भी संभावना है केवल उन 195 सीटों पर ही ये सूची आई है। इसका मतलब साफ है बाकी पर भाजपा साफ है।'

**पहली ही सूची में भाजपा ने मानी हार: अखिलेश**- सपा मुखिया ने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा- 'पहली सूची में ही भाजपा ने अपनी हार मान ली है क्योंकि वो बगावत के डर से उन लोगों को भी दुबारा उम्मीदवार बना रही है जो अपने-अपने संसदीय क्षेत्रों में कोई काम नहीं करवाने की वजह से या फिर भ्रष्टाचार में लिप्तता के कारण खुद ही अपनी टिकट के लिए कोई उम्मीद नहीं कर रहे थे। जो

बोरिया-बिस्तर बांध कर निकलना चाहते थे उन्हें दुबारा दबाव बनाकर लड़ने के लिए कहा जा रहा है। ये अनमने लोग क्या विपक्ष का सामना करेंगे।' अखिलेश ने कहा- भाजपा के कार्यकर्ताओं के बीच भी इस सूची के आने से गहरी हताशा है क्योंकि वो जनता के बीच अपने अधिकांश सासंदों के खिलाफ चल रही हवा से वाकिफ हैं। जो युवा भाजपाई टिकट की उम्मीद में भाजपा के हर गलत काम में साथ दे रहे थे, वो भी निराश होकर, निष्क्रिय हो जाएंगे।

### ब्लू सफायर मॉल में बड़ा हादसा, ग्रिल गिरने से दो लोगों की हुई मौत

ग्रेटर नोएडा। दिल्ली से सटे ग्रेटर नोएडा वेस्ट में दर्दनाक हादसा हुआ है। ग्रेनो वेस्ट के ब्लू स्क्वायर मॉल में ग्रिल गिर गई। ग्रिल की चपेट में आने से दो लोगों की मौत हो गई। घटना से मॉल में अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के अनुसार, बिसरख थाना इलाके स्थित अस्पताल से सूचना मिली की ब्लू स्क्वायर मॉल पर छत से लोहे का स्ट्रक्चर गिरने से दो व्यक्तियों की मौत हो गई है। जिसमें हरेंद्र भाटी (35) पुत्र राजेंद्र भाटी निवासी गौशाला फाटक के पास विजय नगर, थाना विजयनगर जिला गाजियाबाद की मौत हो गई। इसके अलावा, शकील(35) पुत्र छोटे खान निवासी केला, खेड़ा थाना विजयनगर जिला गाजियाबाद ने भी दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव का पंचायतनाम भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मौके पर अधिकारी मौजूद हैं। अन्य आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

## महिला अधिकार सम्मेलन का भव्य आयोजन

प्रखर वाराणसी। बनारस के शास्त्री घाट (कचहरी) पर महिला अधिकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन के आयोजन में बनारस के तमाम महिला संगठन, छात्र संगठन और नागरिक समाज ने हिस्सा लिया। हम बनारस की महिलाएं बराबरी, सम्मान, सुरक्षा और रोजगार के अधिकार के लिए एकजुट होकर सरकार तथा सभी राजनीतिक दलों से यह अपील करते हैं कि आने वाले लोकसभा चुनाव मन्दिर-मस्जिद और नफरती मुद्दों के बजाय रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सामाजिक न्याय जैसे असल मुद्दों पर लड़ा जाए। इस सम्मेलन के माध्यम से हमनें अपना 13 सूत्रीय महिला घोषणापत्र जारी किया। इस घोषणापत्र में दर्ज मांगें हमारी आगामी संघर्ष का आधार बनेगा। सम्मेलन की शुरूआत से पूर्व जेपी मेहता इंटर कॉलेज से शास्त्री घाट तक हम महिलाओं द्वारा मार्च भी निकाला गया। जनजागरण अधिकार मंच से कमायानी जी, सामाजिक कार्यकर्ता ऋतु जी, ऐपवा की राष्ट्रीय सचिव प्रो. सुधा चौधरी जी, पत्रकार और गाँधीवादी कार्यकर्ता मणिमाला जी, यूपी महिला कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष प्रतिभा अटल पाल जी, समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नेहा यादव जी तथा आम आदमी

पार्टी से मोहिनी जी से अपनी बात रखी। इसके अलावा महिला अधिकार से संबंधित मुद्दों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। कार्यक्रम में सूरज एंड टीम ने अपना इमेज थियेटर प्रस्तुत किया, दस्ता के साथी विवेक सुलतानवी ने अपने क्रांतिकारी गीतों से कार्यक्रम में ऊर्जा भरा, संस्कृति ने नृत्य पेश किया तथा प्रेरणा कला मंच का नाटक भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय जी, गुरुचरण कौर, अनुराधा यादव, बिंदु, संध्या जी, ऋतु पांडेय, गाँव के लोग से अपर्णा जी, जागृति राही, फादर आनंद, अफलातून जी, ज्योति,कुसुम वर्मा, रैनी, इंदु, नीति आदि मौजूद रहे। इस सम्मेलन का आयोजन दखल, ऐपवा, लोक समिति, महिला चेतना समिति, साझा संस्कृति मंच, आइसा, बीएसएम, प्रिस्मैटिक फाउंडेशन और मनरेगा मजदूर यूनियन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

## पीएम मोदी ने भाजपा फंड में दान किए रु. 2000; राष्ट्र निर्माण और विकसित भारत के लिए सहयोग का आह्वान

नई दिल्ली। आम चुनाव-2024 के लिए मतदान चंद हफ्ते बाद शुरू होने वाले हैं। निर्वाचन आयोग की घोषणा के बाद आचार संहिता लागू हो जाएगी और औपचारिक रूप से सियासी बिगुल बज जाएगा। हालांकि, राजनीतिक पार्टियां चुनावी तैयारियों में जुट गई हैं। राजनीतिक दल पूरे दम-खम से चुनाव प्रचार की रणनीति बना रहे हैं। बड़े नेताओं की जनसभाएं भी शुरू हो गई हैं। भाजपा ने भी लोकसभा चुनाव 2024 के लिए प्रत्याशियों की पहली सूची जारी करने के साथ अभियान की अनौपचारिक शुरूआत कर दी है।

**प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा को मजबूत बनाने का आह्वान किया**- ताजा घटनाक्रम में पीएम मोदी और अन्य भाजपा नेताओं की तरफ से दिया जा रहा आर्थिक सहयोग चर्चा में है। पीएम मोदी ने पार्टी फंड में दो हजार रुपये का चंदा दिया है। पीएम मोदी के सहयोग का प्रमाण भी सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी पार्टी फंड में आर्थिक दान दिया है। खास बात यह है कि पार्टी की तरफ से चुनावी बिगुल फूंके जाने के अगले ही दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा को मजबूत बनाने का आह्वान किया। पीएम मोदी ने भाजपा के फंड में दो हजार रुपये दान कर आम लोगों से भी मोबाइल एप का इस्तेमाल करते हुए बढ़-चढ़कर आर्थिक सहयोग करने की अपील की। पीएम मोदी ने

आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म- एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, 'मुझे भाजपा के फंड में योगदान देने और विकसित भारत के निर्माण के हमारे प्रयासों को मजबूत करने की खुशी हो रही है।' बकौल पीएम मोदी 'मैं सभी से NaMoApp के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के लिए दान का हिस्सा बनने का आग्रह करता हूं।'

## पवन सिंह ने चुनाव लड़ने से किया इनकार तो टीएमसी ने कसा तंज, लिखा- ये ही बंगाल के लोगों की ताकत

कोलकाता। भोजपुरी गायक पवन सिंह के बंगाल की आसनसोल सीट से चुनाव लड़ने से इनकार के बाद इस पर राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई है। वहीं विपक्षी पार्टियों को भी भाजपा पर निशाना साधने का मौका मिल गया है। संदेशखाली के मुद्दे पर बैकफुट पर गई हुई ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी को भी पलटवार का मौका मिल गया है। टीएमसी ने पवन सिंह के चुनाव लड़ने से इनकार के बाद तंज कसा है और इसे बंगाल के लोगों की ताकत बताया है। पवन सिंह ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा कर आसनसोल से चुनाव नहीं लड़ने के फैसले की जानकारी दी। पवन सिंह के इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए टीएमसी के वरिष्ठ नेता अभिषेक बनर्जी ने लिखा कि 'यही पश्चिम बंगाल के लोगों की कभी न हार मानने वाली भावना और लोगों की ताकत है।' टीएमसी नेता डेरेक ओ ब्रायन ने अभिषेक बनर्जी की पोस्ट पर प्रतिक्रिया में

लिखा कि 'ये होता है खेल शुरू होने से पहले ही खेला हो गया।' शनिवार को भाजपा ने लोकसभा चुनाव के लिए 195 उम्मीदवारों वाली अपनी पहली लिस्ट जारी की थी। इस लिस्ट में बंगाल की आसनसोल सीट से भोजपुरी अभिनेता और गायक पवन सिंह को उम्मीदवार बनाया गया था। पवन सिंह ने आसनसोल से उम्मीदवार बनाए जाने के लिए पार्टी नेतृत्व को धन्यवाद भी दिया। हालांकि पवन सिंह को लेकर विवाद हो गया। दरअसल विपक्षी नेताओं ने पवन सिंह के अपने गानों में बंगाल की महिलाओं के चित्रण को लेकर आपत्ति जताई और पवन सिंह को बंगाल से चुनाव लड़ाने के भाजपा के फैसले की आलोचना शुरू कर दी। अब जब पवन सिंह ने अपनी उम्मीदवारी छोड़ने का एलान किया है तो इस फैसले को विवाद से जोड़कर ही देखा जा रहा है। वहीं, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने भी पवन सिंह के चुनाव न लड़ने के एलान पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, चुनाव लड़ने या न लड़ने का फैसला उनकी पार्टी का आंतरिक मामला है। मैं इस पर टिप्पणी नहीं करूंगा।

## शहबाज शरीफ दूसरी बार चुने गए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री, आज होगा शपथ ग्रहण समारोह

इस्लामाबाद। पीएमएल-एन के वरिष्ठ नेता शहबाज शरीफ दूसरी बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री चुन लिए गए हैं। शहबाज शरीफ ने शनिवार को पीएम पद के लिए नामांकन दाखिल किया। रविवार को पीएम पद का चुनाव हुआ, जिसमें शहबाज शरीफ को देश का अगला पीएम चुना गया। शहबाज शरीफ के अलावा पीटीआई नेता उमर अयूब खान ने भी पीएम पद के लिए अपना नामांकन दाखिल किया था। हालांकि रविवार को हुए चुनाव में उमर अयूब खान को पर्याप्त समर्थन नहीं मिल सका। पीएमएल-एन ने पीपीपी और एमक्यूएम के साथ गठबंधन में सरकार बनाई है। शहबाज शरीफ, पाकिस्तान के पूर्व पीएम नवाज शरीफ के छोटे भाई हैं। शहबाज शरीफ अप्रैल 2022 से अगस्त 2023 तक भी पाकिस्तान के पीएम रह चुके हैं। उस वक्त भी उन्होंने पीपीपी के साथ गठबंधन में सरकार चलाई थी। शहबाज शरीफ को पीएम चुने जाने के लिए 336 सदस्यों वाली सीनेट में 169 वोट चाहिए थे, जिन्हें शहबाज शरीफ ने आसानी से जुटा लिया। पीएमएल-एन और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के संयुक्त उम्मीदवार शहबाज (72) को 336 सदस्यीय सदन में 201 वोट मिले। जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के उम्मीदवार प्रतिद्वंद्वी उमर अयूब खान को 92 वोट मिले। इस दौरान पीटीआई समर्थित सांसदों ने नारेबाजी की। शहबाज शरीफ का शपथ ग्रहण समारोह सोमवार को राष्ट्रपति भवन में होगा। पाकिस्तान के पीएम बनने की उम्मीद में पीएमएल-एन के मुखिया नवाज शरीफ बीते साल अक्तूबर में करीब चार साल बाद पाकिस्तान लौटे थे। नवाज शरीफ को उम्मीद थी कि उनकी पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलेगा और वे चौथी बार देश के प्रधानमंत्री का पद संभालेंगे। हालांकि बीती 8 फरवरी को हुए आम चुनाव में पीएमएल-एन को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और जेल में बंद इमरान खान की पार्टी के समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार 90 से ज्यादा सीटें जीतने में सफल रहे।

## लालू ने खेल दिया हिंदू कार्ड, पीएम मोदी को हिंदू मानने से किया इनकार; राजद अध्यक्ष ने उदाहरण भी बताए

पटना। भारतीय जनता पार्टी अबतक हिंदू कार्ड खेलने के लिए जानी जाती रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सनातन धर्म का संरक्षक बताती रही है। लेकिन, राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने दोनों मोर्चों पर अब लड़ाई छेड़ दी है। रविवार को पटना के गांधी मैदान में महागठबंधन की जन विश्वास महारैली को संबोधित करते हुए लालू ने कहा कि पीएम मोदी तो हिंदू ही नहीं हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि कोई हिंदू यह-यह काम नहीं कर सकता, जो पीएम मोदी ने किया है। उन्होंने पीएम मोदी की पारिवारिक जिंदगी पर भी हमला बोला। शनिवार को पीएम मोदी बिहार में आए थे तो उन्होंने बिना नाम लिए परिवारवाद के बहाने लालू प्रसाद पर हमला बोला था। लालू प्रसाद ने कहा कि "मंडल कमीशन का नतीजा है कि आज हर पिछड़ा वर्ग, दलित, वंचित और गरीब सत्ता के दरवाजे पर खड़ा है। यह नरेंद्र मोदी क्या चीज है? यह मोदी आजकल परिवारवाद पर हमला कर रहे हैं। आप बताओ न, आपको क्यों नहीं संतान हुआ? ज्यादा संतान होने वाले लोगों को बोलता है कि परिवारवाद है। परिवार के लिए लड़ रहा है। आपके पास परिवार नहीं है और आप हिन्दू भी नहीं हैं। जब आपकी माताजी का देहावसान हो गया तो हर हिन्दू अपनी मां के शोक में केस दाढ़ी

मुंडवाता है। आपने क्यों नहीं छिलवाया? यह बताओ।" राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद ने पीएम पर हमला कायम रखा। बोले- "देश भर नफरत फैला रहे हो। कहता है कि भगवान में प्राण प्रतिष्ठा कर दिया। बताओ कि बिना प्राण प्रतिष्ठा के ही भगवान ही अब तक थे?" उन्होंने पीएम मोदी को हिंदू मानने से इनकार करते हुए अपनी बातें पूरी कीं तो राम-सीता होते हुए बेटी-बेटा तक पहुंचे। उन्होंने कहा- "जनकपुर में श्रीराम चंद्र जी की शादी हुई। बिहार जैसे राज्य में एक से एक सूरमा पैदा लिए। इसी गांधी मैदान में न जाने कितनी बार देश भर नेताओं का सभाएं हुईं। यहीं से देश भर संदेश गया। बिहार के हवा में इतना दम हैं कि जो देश के लोग इसका अनुकरण करते हैं। मेरा किडनी का ट्रांसप्लांट हुआ है। हमारी बेटी रोहिणी ने अपनी किडनी मुझे दान दी। मुझे जीवनदान दिया। तेजस्वी यादव काफी मेहनत कर रहे हैं। लोगों को इतनी नौकरी दी। हम रोज पूछते थे- आज कितनी नौकरी दी? सिपाही में कितनी नौकरी दी? फिर यह भी कहा कि आरक्षण जोड़ लो, जब सिपाही को नौकरी दो।" उन्होंने सीएम नीतीश के प्रकरण पर भी बात की। कहा- "नीतीश कुमार को हमने कोई गाली-गलौज नहीं किया। वह पहली बार निकले तो तब भी गाली नहीं दी थी। तब हमने कहा था कि वह पलटूराम हैं। नहीं पलटना चाहिए था। दुबारा हमसे गलती हो गई। तेजस्वी से गलती हो गई। नरेंद्र मोदी के पैरों के नीचे चले गए।"

## शहाबुद्दीन रजवी बोले: टिकट बंटवारे में मुसलमानों की अनदेखी बर्दाश्त नहीं, अखिलेश यादव पर बरसे

बरेली। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने कहा कि मुसलमानों के कंधों पर सवार होकर वोट बैंक की राजनीति करने वाले राजनीतिक दल मुसलमानों को उनकी आबादी के हिसाब से लोकसभा में प्रत्याशी के तौर पर टिकट दें। उन्होंने कहा कि अगर अनदेखी की तो मुसलमान बर्दाश्त नहीं करेगा। अब मुसलमान सियासी और समाजी तौर पर जागरूक हो गया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में अक्सर ये देखा गया है कि जिनकी आबादी छह फीसदी है, समाजवादी पार्टी उस बिरादरी से संबंध रखने वाले लोगों को सबसे ज्यादा टिकट देती है। दूसरी तरफ सबसे बड़ी आबादी जिसका वोट प्रतिशत 22 फीसद है, उसको सपा सबसे कम टिकट देती है, मगर अब हम ऐसा नहीं होने देंगे। मौलाना ने कहा कि सपा के संस्थापक मुलायम सिंह यादव इन बातों का ध्यान रखते थे। हर आबादी के हिसाब से विधानसभा और लोकसभा में टिकटों का वितरण करते थे। मगर जब से सपा का नेतृत्व अखिलेश यादव करने लगे तब से सपा ने अपनी सोच में काफी हद तक बदलाव पैदा किया है। अखिलेश यादव नरम हिंदुत्व की लाइन पकड़ कर चल रहे हैं। यही वजह है कि हर चुनाव में उनको हार का मुंह देखना पड़ रहा है। मुलायम सिंह ने कभी भी नरम हिंदुत्व की तरफ कदम नहीं

बढ़ाया जिसकी वजह से उनको कामयाबी मिलती रही है। शहाबुद्दीन रजवी ने आगे कहा कि सपा ने मुसलमानों को सिर्फ एक वोट बैंक के तौर पर इस्तेमाल किया। मुसलमानों के लिए बुनियादी तौर पर कोई काम नहीं किया। जब अखिलेश यादव को मुसलमानों ने मुख्यमंत्री बनाया। अखिलेश ने अपने दौरे में मुसलमानों की तरफ से मुंह फेर लिया।

## संपादकीय

# वफादारी परखने की नयी कसौटी

आपको वफादारी परखनी है तो इस कसौटी पर परखकर देखिए। यूं वफादारी की जरूरत किसको पड़ती है जी? बेचारे आम आदमी को वफादारी की क्या जरूरत? उसे कौन-सी गद्दी चाहिए। रिश्तेदारों और दोस्तों के भरोसे जिंदगी कट जाती है। उनमें भी कभी कोई नाराज हो गया, कोई रूठ गया तो मना लिया और क्या। रही-सही कसर चुगलखोर पूरी कर देते हैं, जो घर-गांव सब जगह पाए ही जाते हैं। वे न तो वफादारी की कमी रहने देते हैं और न गद्दारी की। अलबत्ता कभी डाकुओं में वफादारी जरूर परखी जाती थी कि देखें सरदार का वफादार कौन है। कहीं कोई गद्दार न निकल जाए। गिरोह का ही सफाया न करा दे। फिर भाई लोग परखने लगे कि मेरी गैंग में वफादार कौन है और गद्दार कौन। कहीं कोई मुझे ही न टपका दे। वफादारियां परखने के उनके अपने तरीके थे। बताते हैं कि डाकुओं के गिरोह में या भाई लोगों के गैंग में वफादारी साबित करने के लिए कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता था। वैसे गुजरे जमाने में राजाओं और बादशाहों के दरबारों में वफादारों और गद्दारों की परख चलती रहती थी। राजाओं और बादशाहों का इतिहास बताता है कि वहां वफादारियां कम और गद्दारियां ज्यादा थीं। ऐसी गद्दारियों के किस्से कम नहीं हैं। आपने सुने ही होंगे। बहरहाल, अब दिक्कत हमारे नए राजाओं तथा बादशाहों यानी पार्टी हाईकमानों के लिए हो गयी है कि वे अपने विधायकों या सांसदों की वफादारियां कैसे परखें। अब यह कोई दूध-घी तो होता नहीं कि कोई यंत्र लगाकर देख लो कि असली या नकली। खुद सरकारों ने असली-नकली की परख की व्यवस्था कर रखी है। इसके बावजूद बाजार में मिलावटी चीजें ही ज्यादा मिलती हैं। यहां तक कि ब्रांड भी नकली मिलते हैं। लेकिन पार्टी हाईकमान कैसे परखे कि मेरा फलां विधायक या सांसद या काउंसलर वफादार है। ऐसे में इसे खुशखबरी की तरह ही लिया जाना चाहिए कि जब राज्यसभा चुनाव हों तो कम से कम विधायकों की वफादारी तो जरूर ही परखी जा सकती है। बस इतना ही देखना होता है कि आपका विधायक कहां वोट कर रहा है- पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार को या क्रॉस वोटिंग कर रहा है या फिर एबस्टेन। वैसे भी राज्यसभा के चुनाव के लिए पांच साल तो इंतजार करना नहीं पड़ता। हर दो साल में एक-तिहाई सीटों के लिए चुनाव होता ही है। कई बार एक-आध सीट के लिए बीच में भी चुनाव हो जाता है। तो वफादारियों और गद्दारियों की निरंतर पहचान चलती रहती है। अच्छी बात यही है कि क्रॉस वोटिंग करने वालों को या एबस्टेन करने वालों को गद्दार कोई नहीं मानता। गद्दारी दरबारों की अवधारणा थी। लोकतंत्र की नहीं।

# फाग, फगुआ,फगुनहटा, फुहार, फब्तियां और फक्कड कबीरा

अंग्रेजी महीने से इतर भारतीय जनमानस में विशेष कर हिन्दी हृदय क्षेत्र में प्रचलित फाल्गुन मास को हिन्दी पंचांग का आखिरी महीना माना जाता है। अलबेला, अल्हड़ , मनभावन और जन-जन के मन मस्तिष्क और हृदय को मदमस्त तथा बसंती बयार से रोम-रोम रोमांचित कर देने वाला फागुन का महीना हर बार नयी उमंग, नयी तरंग नयी आशा, नया विश्वास और नयी उम्मीद लेकर आता है। धरती से अम्बर तक नूतन परिवेश निर्मित करने का हुनर और हौसला लिए फगुआ का महीना बेहतर सामाजिक जन-जीवन के लिए प्यार-मुहब्बत की आगोश में लिपटे बेहतर संदेश लेकर आता है। फाल्गुन का महीना अपनी आदत, फितरत और हरकतों के अनुरूप बाग-बगीचे में अमराई, लोकजीवन में अंगड़ाई, तन बदन को गुदगुदाने वाली हवा-बयार में फगुनाहट और घर-आंगन में अपनों के आने की आहट के साथ रसभरी शरारत, अल्हड़पन के साथ अपनापन और प्यासे बिछड़े दिलो में मिलन की आस लेकर आता है। बहुरंगी आनंद से पूरी तरह सराबोर इस नवरंगी मौसम वाले बसंत को ऋतुराज कहा जाता हैं। श्रीकृष्ण ने कुरूक्षेत्र में खड़े होकर उद्घोष किया था कि- मैं ऋतुओं में बसंत हूँ'। साहित्यकारो ने भी सबसे अधिक रचनाए वसंत ऋतु को समर्पित की है। समृद्ध भारतीय साहित्य परम्परा में भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अनगिनत साहित्य सरिताएं मनोहारी वसंत ऋतु की गंगोत्री से निकल कर भारतीय लोकमानस को अभिसिंचित कर रही हैं। साहित्य रस के प्यासे हृदयो को वसंत ऋतु से प्रवाहित सरिताएं सदियों से तृप्त कर रही है। प्राचीन भारतीय इतिहास में छक कर लगभग एक माह तक वसंतोत्सव मनाने का उल्लेख मिलता है।

ऋतुराज बसंत के शुभागमन से ही बसुन्धरा का प्राकृतिक श्रृंगार और सौन्दर्य अपनी पराकाष्ठा पर होता हैं । सम्पूर्ण लोक-जीवन बसंत की मादक बयारों के मधुर स्पर्श से गहरे रूप से स्पनंदित होने लगता है। प्रकृति के अद्भुत श्रृंगार और सतरंगी सौन्दर्य में हर चंचल मन रंगने लगता है। सृष्टि और प्रकृति का स्वर, व्यंजन और व्याकरण पूरी तरह नवलता के कलेवर में ढल जाता हैं। बाग-बगीचे , खेत खलिहानों में चहकते पक्षियों,और महकते फूलो से मधुर संगीत झंकरित होने लगता है। पेड़ पौधों की लचकती, बहकती और झूलतीं डालियों में मन मस्तिष्क को उमंगित करने वाला नृत्य प्रस्फुटित होने लगता हैं। बच्चे, बुढे, जवान, अनपढ़ ,गंवार बुद्धिमान शहरी देहाती और लगभग हर नर-नारी अपना शराफती चोला ताखा पटनी पर रख देते हैं तथा सादगी और भलमनसाहत को खूंटी पर टांग देते हैं । चेहरे पर झुर्रिया और मुंह में दांत नहीं पर हमारे अपने घर-घराने कुटुंब कबीले कुल-खानदान के बूढे बुजुर्ग दादा परदादा काका चाचा भी अपने हम-उम्र हमजोली आस-पडोस, गाँव-देहात, टोला मुहल्ला की काकी, दादी, परदादी और अपने समकक्ष वृद्ध महिलाओं को देखकर फब्तियां कसें बिना नहीं रहते हैं। अपने पारिवारिक गवॅई रिश्तों-नातों की बुनियाद पर बोलीं-टिबोली बोलना पारम्परिक हक हूकूक समझते हैं। इस अल्हड़ ,अलबेले और मदमस्त मौसम का मिजाज उम्र-दराज बुढे-बुजुर्गों में बुढापे की सिहरन तथा थकन को अचानक आश्चर्यजनक तरीके से मिटा देता है। इस बसंती बयार और फागुनी बहार में हर नर-नारी के अन्दर हम-उम्र और हम जोलियो संग छिछोरापन करने का अद्भुत जोश और जुनून आ जाता हैं। ऋतुओं और मौसमों को ध्यान में रखकर बनाये गये हर तीज त्यौहारों और उत्सवों को आम हिन्दुस्तानी पूरे उत्साह और उल्लास के साथ मनाते हैं।

इधर कुछ वर्षों से आम जनमानस में यह धारणा तेजी से प्रचलित होती जा रही है कि-फगुआ का त्यौहार पूरी तरह से मौज-मस्ती और आनंद का त्यौहार है। बढ़ती उच्छृंखलता के दौर में लोगो मन मस्तिष्क में यह धारणा घर करती जा रही है इसमें किसी के साथ किसी तरह का व्यवहार और बर्ताव करने की पूरी आजादी है। जनमानस में व्याप्त इस धारणा के कारण फगुआ का असली उद्देश्य और असली संदेश हमारे लोकमानास के मन मस्तिष्क और मानसिक चिंतन और विचार- विमर्श से कोसों दूर हो गया है। फगुआ नाचने गानें झूमने मौज मस्ती और आनंद लेने के साथ-साथ हिरण्यकश्यप , होलिका जैसे दुराचारियों दम्भियों और अंहकारियो की दूषित, प्रदूषित और कलुषित व्यक्तित्वो के विनाश से सबक सीखने का भी त्यौहार है। भारतीय परम्परा में होली , होलिका और हिरण्यकश्यप जैसे अनगिनत दुष्कर्मियो के अन्दर विविद्यमान दुष्प्रवृत्तियों के नाश की कामना तथा भारतीय लोकवृत में महिमामंडित भक्त प्रह्लाद जैसे भक्ति भावना रखने वाले दृढ निश्चयी, सत्यवादी और सच्चरित्र व्यक्तित्वो को स्मरण करते हुए और उनसे अनुप्रेरित और अनुप्राणित होने का पवित्र पावन त्यौहार हैं। होलिका दहन के साथ-साथ हमे अपने मन मस्तिष्क मिजाज और हृदय में घर बना चुके ईर्ष्या, द्वेष ,घृणा ,अहंकार और क्रूरता जैसे मनोविकारों को जलाकर भस्म कर देना चाहिए और हमारे आचरणो व्यवहारों और आदतों में समाहित दुर्व्यसनो और दुर्रव्यवहारो को जड-मूल से समाप्त कर देना चाहिए और यही होलिका दहन का मौलिक और वास्तविक निहितार्थ और निष्कर्ष हैं।आग में न जलने का वरदान प्राप्त होलिका हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद को जलाने के लिए सजायी गयी अग्नि चीता में जलकर खाक हो गई और भक्त प्रह्लाद सकुशल बच गया। वस्तुतः सच्चाई, सचरित्रता ,ईमानदारी नैतिकता ,पवित्रता और निर्मलता कभी किसी आग से नहीं जलती है और झूठ, फरेब, छल ,कपट, मक्कारी , धूर्तता, और ढोंग ढकोसला की उम्र हर सभ्य और सुसंस्कृत समाज में बहुत कम होती हैं और इस तरह की मानसिकताऐ अंततः जलकर खाक हो ही जाती हैं।

होली की पूर्व संध्या पर होलिका दहन का चलन-कलन इसलिए प्रचलित हुआ कि-हर्ष उल्लास उमंग आशा और विश्वास जैसे विविध रंगों से परिपूर्ण रंगों का त्यौहार होली ईर्ष्या द्वेष घृणा अहंकार क्रूरता जैसे समस्त मनोविकारों को पूरी तरह मिटाकर विविध प्रकार के रिश्तों नातों में अंतर्निहित मधुरता का एहसास करने और हर किसी को एहसास कराने के साथ मनाया जाय। फगुआ का त्यौहार टूटे छूटे भूले भटके सभी रिश्तों नातों को याद करते हुए सबसे गले मिलने का त्यौहार है। इसलिए होली के एक दिन पूर्व होलिका दहन के अग्नि कुंड में हम अपने समस्त मनोविकारों दुगुणो दुर्व्यसनो को जला देते हैं तथा किसी भी प्रकार दुश्मनी को भुलाकर और किसी भी तरह की दुर्भावना मिटाकर हर्षित हृदय से होली मनाते हैं। किसी के जीवन में मस्ती और आनंद जरूरी है परन्तु सबके जीवन में मस्ती और आनंद तभी आयेगा जब हंसी ठिठोली और मौज मस्ती का तौर-तरीका अनुशासित मर्यादित और हमारी संस्कृति और सभ्यता के दायरे में हो। यह सर्वविदित है कि-हमारा देश पूरी दुनिया में उत्सवधर्मी देश के रूप में जाना जाता रहा है और लोग-बाग यहाँ हर उत्सव छक कर मनाते हैं परन्तु अश्लीलता और फूहडता हमारे तीज त्यौहारों और उत्सवों का हिस्सा कभी नहीं रहें । हमारे पुरबिया माटी में मस्ती के साथ- साथ लोग-लुगाई अपने अपने मीठे रिश्तो नातों को याद करते हैं। पुरबिया माटी के गाँवो और अर्द्ध ग्रामींण और अर्द्ध शहरी संस्कृति वाले कस्बों में ढोल झाल करताल मृदंग मंजीरा के साथ लगभग एक महीना मस्ती के फाग और चौताल गाते हैं।

हमारे गाँवो में फगुआ और फाग गाने का चलन-कलन बहुत पुराना है। फाग और चौताल सहकार समन्वय साहचर्य सहिष्णुता के साथ-साथ स्वस्थ्य मनोरंजन का साधन रहा है। हमारी देशज लोक संगीत लोक नृत्य और लोक साहित्य की मिठास भरी परम्परा में फगुआ,फाग और चौताल को मस्ती के साथ मिलन-जुलन का लोक संगीत और लोक नृत्य माना जाता रहा है । आज सिल्वर स्क्रीन द्वारा लगातार परोसें जाने वाले पॉप और रॉक संगीत तथा गाँवो कस्बों में तेजी से बढती आर्केस्ट्राई और डीजे संस्कृति के कारण मस्ती और मिलन की लोक संस्कृति को जीवंत रखने वाले फगुआ फाग और चौताल के ऊपर गहरा संकट मंडराने लगा है। अपनी माटी की महक को सहेजे समेटे फगुआ फाग और चौताल को जीवंत रखने की आवश्यकता है। क्योंकि लोक संगीत और लोक साहित्य के माध्यम से लोगों का दुःख ,दर्द ,हर्ष विषाद सहित सम्पूर्ण लोक जीवन अभिव्यक्त होता है।

मध्ययुगीन भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाए , कुरीतिया, विवेक, विकास और इंसानियत रूढ़ियों और समस्त अंधविश्वासों के रूप में लगे झाड-झंखाडो पर सबसे करारा प्रहार कबीर ने किया। फक्कड़ कबीर ने कर्मकांडों तथा पाखंडो पर तार्किक, बौद्धिक और दूरदर्शितापूर्ण हमला किया। होली के दिन लोगों की टोली साज बाज के इस मध्ययुगीन क्रांतिकारी फक्कड़ कवि कबीर का नाम लेकर कबीरा और जोगीरा गाते रहते हैं। वस्तुतः अनपढ़ कबीर अपने दौर के सामाजिक संचेतना के सबसे प्रखर और उत्कट दार्शनिक थे। जिन्होंने ने दकियानूसी ख्यालो और धूर्तता पर आधारित कर्म-काण्डो पर निर्भिकता से प्रहार करते हुए मानवता मानव समाज और मानवीय जीवन की सच्चाइयों और वास्तविकताओ से लोगों को रूबरू कराया। कबीरा गाते हुए लोग शायद अन्दर और बाहर की हकीकतों से लोगों को रूबरू कराने का प्रयास करते रहते हैं और लोक जीवन को आनन्दित और आन्दोलित करते रहते हैं। यह एक सर्वविदित सच्चाई है जो समाज अपने समाज के नैतिक मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं और सच्चाईयो को लेकर सर्वदा सजग सचेत और आन्दोलित रहेगा वही समाज वास्तव में आनंदित रहेगा। फक्कड़ कबीर का जीवन सीसे की तरह आर-पार दिखने वाला जीवन था। आज तथाकथित बाजारवादी सभ्यता और संस्कृति के दौर में लोग ढोंग, ढकोसला का जीवन जी रहे हैं। ढोंग ढकोसला पर आधारित नकली और बहुरुपिया जीवन जीने वाले लोग तनाव और बिमारियों की चपेट में आते जा रहे हैं। स्वस्थ और प्रसन्नचित्त जीवन के लिए जरूरत है साफ सुथरा वास्तविक और फक्कड़ कबीर की तरह पारदर्शी जीवन जीने की ।

खैर मेरी तरफ से आपको, सबको और समस्त देशवासियों को कबीरा-- सा --रा-- रा --रा -----

**मनोज कुमार सिंह**
**लेखक / साहित्यकार**
**उप-सम्पादक कर्मश्री मासिक पत्रिका**

# सृजन की शक्ति हैं पवित्र नीति और नीयत, रोवर्स रेंजर समागम के उद्घाटन में बोली डॉ. संगीता बलवंत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रविवार को 32वें अंतरमहाविद्यालयी रोवर्स-रेंजर्स जनपदीय समागम का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथियों का सम्मान स्कार्फ-अलंकरण, अंगवस्त्रम् एवं स्मृतिचिह्न से किया गया। महाविद्यालय के प्रबन्ध समिति के पूर्व सचिव श्री कवींद्रनाथ शर्मा ने अथितियों का स्वागत करते हुए कहा कि उत्तरवाहिनी गंगा तट पर अवस्थित महाविद्यालय से आध्यात्मिक चेतना और रोवर्स-रेंजर्स से मानसिक व शारीरिक चेतना जनपद में जाग्रत हो रही है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य डॉ. संगीता बलवंत ने ध्वजारोहण कर परेड

की सलामी ली तथा रोवर्स-रेंजर्स को सम्बोधित किया। अपने सम्बोधन में डॉ. बलवंत ने कहा कि रोवर्स-रेंजर्स एक ऐसा माध्यम है जो विद्यार्थों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यह परोपकार, देशसेवा, पर्यावरण एवं प्रकृति प्रेम ले लिए प्रेरित करता है। पवित्र नीति और नीयत से उत्तम नियति का निर्माण होता है जिससे जीवन के महान ध्येय को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. शम्भू राम, जिला मुख्य आयुक्त पूविवि ने पर्यावरण संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए रोवर्स-रेंजर्स को इसके प्रति जागरूक होने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. वी के राय ने कहा कि इस समागम में रेंजर्स प्रतिनिधित्व रोवर्स से अधिक है। यह निश्चय ही महिला सशक्तिकरण को ऊर्जा व शक्ति प्रदान करेगा। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय राय ने किया। कहा कि रोवर्स-रेंजर्स जैसे शिक्षणेत्तर कार्यक्रम समाजहित में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करते हैं। समागम में जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों से आये रोवर्स-रेंजर्स ने मार्चपास्ट, वर्दी, क्विज, पोस्टर, निबन्ध, व्याख्यान, सैंड स्टोरी, लोकगीत एवं लोकनृत्य जैसी अनेक प्रतियोगिताओं में सहभागिता की। इसके अतिरिक्त रोवर्स-रेंजर्स ने नाईट स्काउटिंग, क्रू-टीम इंकॉन्सिल, कलर पार्टी, ध्वज शिष्टाचार आदि का प्रदर्शन किया। समागम में रोवर्स-रेंजर्स के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन जिला संयोजक स्काउट गाइड गाजीपुर श्री दिनेश यादव के निर्देशन में हुआ। समागम के आयोजन सचिव डॉ. सतीश राय एवं डॉ0 निवेदिता सिंह रहे। मंचसंचालन डॉ. प्रमोद कुमार श्रीवास्तव 'अनंग' ने किया।

## गुंडागर्दी व बलात्कार का वांछित अभियुक्त चढ़ा बरेसर पुलिस के फंदे

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक जनपद गाजीपुर आदेश के क्रम में अपराध एवम् अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण व क्षेत्राधिकारी मुहम्मदाबाद के निकट पर्यवेक्षण में शनिवार को थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 24/2024 धारा 376,504,506 भादवि में वांछित चल रहे अभियुक्त राजकुमार पुत्र रामनाथ निवासी राजापुर थाना कासिमाबाद जनपद गाजीपुर को अलावलपुर चट्टी से गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त को गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है । गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में एसओ शैलेन्द्र प्रताप सिंह थाना बरेसर, कांस्टेबल अतुल कुमार थाना बरेसर, कांस्टेबल दुलीचन्द थाना बरेसर, कांस्टेबल अनिल मद्धेशिया थाना बरेसर जनपद गाजीपुर शामिल रहे।

# हुए मगन अब सारे!

**भर रहे हुंकार सभी ।**
**बढ़ने की तैयारी ।।**
**हो रहे हैं बेकरार ।**
**करनी जीत भारी ।।**
**अपनी अपनी धुन में ।**
**हुए मगन अब सारे ।।**
**बोल रहे हैं जनता के ।**
**हम ही हैं दुलारे ।।**
**जनता का मन मोहने की ।**
**है कोशिश भरपूर ।।**
**घूम रहे हैं पास पास ।**
**जाना भी सुदूर ।।**
**कर दिया है वादा ।**
**है राहत पहुंचाना ।।**
**जोर शोर से भाषण ।**
**है अमल में लाना ।।**

**-कृष्णेन्द्र राय**

# अल्पसंख्यक आबादी के 80 प्रतिशत पसमांदा मुसलमान को सभी पार्टियों ने ठगा-जावेद मलिक

शाहगंज (जौनपुर)। आजतक देश की सभी पार्टियों ने सिर्फ पसमांदा मुसलमानों को वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल उनको शिक्षा और तकनीक से दूर रखा गया।अगर किसी ने पसमांदा मुसलमानों के बारे सोचा तो वो हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जो पसमांदा मुसलमानों के हित की बातें भरे मंच से करते हैं और आज जितनी भी सरकारी योजनाएं चलती है उसमें 37 प्रतिशत लाभ पसमांदा मुसलमानों को मिल रहा है। उक्त बातें रविवार को नगर के आजमगढ़ रोड स्थित एक होटल में आयोजित पसमांदा मुसलमान युवा सम्मेलन को बतौर मुख्य अतिथि अखिल भारतीय पसमांदा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष जावेद मलिक ने सम्बोधित करते हुए कहीं। उन्होंने कहा की अभी तक किसी भी सरकार ने पसमांदा मुस्लिमों की सुध नहीं ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने ही पसमांदा मुसलमानों का दर्द समझा है। मदरसों को सरकार एनसीआरटी और कम्प्यूटर शिक्षा से जोड़ विकास की मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य किया। श्री मलिक ने कहा कि आजादी के बाद से देश और प्रदेश में कांग्रेस, सपा समेत अन्य विपक्षी दलों ने पसमांदा मुस्लिमों को गुमराह किया है। जबकि भाजपा सरकार ने बिना भेदभाव पिछड़े मुस्लिम समाज को सभी योजनाओं का लाभ पहुंचाया। मुफ्त राशन, मुफ्त घर, मुफ्त शौचालय और पांच लाख तक के मुफ्त इलाज की सुविधा दी है। ऐसे में पसमांदा मुस्लिम समाज को भी आने वाले चुनाव में भाजपा को मजबूत करने का काम करना चाहिए। वरिष्ठ भाजपा नेता प्रदीप जायसवाल ने कहा कि अंत्योदय के पायदान पर खडे. व्यक्ति को लाभ पहुंचाने का काम मोदी और योगी सरकार जिम्मेदारी के साथ पूरा कर रही है। कार्यक्रम में आतिशबाज समाज के लोगों ने समाज की समस्याओं से सम्बंधित एक ज्ञापन सेराज आतिश के नेतृत्व में सौंपा। उक्त मौके पर इरशाद मुख्तार,चिंताहरण शर्मा, बेलाल आतिश,डाक्टर तारिख शेख, समद बाबा, सुफियान अंसारी, ओम चौरसिया,दानिश मंसूरी,डाक्टर तय्यब अंसारी, रईस मंसूरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मुस्तकीम अहमद ने किया।

## सीएसआर फंड से हुआ विद्यालय का कायाकल्प

पिंडरा। पिंडरा ब्लॉक के पूर्व माध्यमिक विद्यालय बाबतपुर और सराय व देवराई भी स्मार्ट विद्यायल हुए। उक्त स्कूल के छात्र सीएसआर फंड से लगे बड़े स्मार्ट से पढ़ाई करेंगे। रविवार को अम्बुजा सीमेंट व एचडीएफसी बैंक द्वारा सीएसआर फंड से उक्त तीनों विद्यालय का कायाकल्प करने के बाद हस्तांतरण प्रक्रिया के तहत हैंडओवर किया। जिसमें उक्त विद्यालय में स्मार्ट क्लास, लाइब्रेरी, शुद्ध पेयजल, खेल सामग्री, पाठ्यपुस्तक , टेबल बेंच समेत अनेक सुबिधाये होगी। इस दौरान एचडीएफसी बैंक क्वाडिनेटअजय सिंह, प्रोग्राम ऑफिसर सुनील सिंह, दीनानाथ सिंह, सरिता सिन्हा , शशिकांत, सुनील पटेल , सचिदानंद सत्यप्रकाश समेत अनेक शिक्षक उपस्थित रहे।

## लोसपा ने किया धरने पर बैठे किसानों का समर्थन

पिंडरा। काशी द्वार भूमि विकास योजना के विरोध में क्षेत्रीय किसानों द्वारा गत चार दिनों से चल रहे अनिश्चितकालीन धरना को रविवार को लोक जन सोशलिस्ट पार्टी ने भी नैतिक समर्थन देते हुए किसानों के लड़ाई साथ रहने का आश्वासन दिया। पिंडरा तहसिल गेट के पास चल रहे किसानों के धरने के बीच पहुचे उक्त पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ वीरेंद्र विश्वकर्मा ने आंदोलनरत किसानों को अपना समर्थन दिया। उन्होंने कहाकी इस योजना के लिए भूमि अधिग्रहण से प्रभावित किसानों की समस्या को सुने बगैर बलपूर्वक भूमि अधिग्रहण किया जाना अन्याय है।उन्होंने सरकार से मांग की है कि प्रभावित किसानों की समस्याओं को सुनकर उनका उचित समाधान किया जाए। इस दौरान किसान मजदूर मोर्चा के अध्यक्ष फतेह नारायण सिंह, रूपचंद, सतीश पटेल, गौरी शंकर विश्वकर्मा, रवि पटेल,राजेश विश्वकर्मा,कुलदीप शत्रुघ्न, आशीष,राम जीत सिंह, विकास विश्वकर्मा, अब्बास खान व रामचंद्र यादव सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। वही किसान बारिश व ठंड में रविवार को भी धरने पर बैठे रहे।इस दौरान कुछ किसान अस्वथ्य भी हो गए हैं। किसान संतोष पटेल ने कहाकि धरना स्थल पर किसी चिकित्सक के न पहुचने से रोष दिखा।

# विकसित भारत संकल्प पत्र के सुझाव शामिल होगा भाजपा घोषणा पत्र में : प्रमोद वर्मा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। रविवार को जखनियां विधानसभा - 373 के जखनियां मण्डल प्रथम में विकसित भारत संकल्प पत्र सुझाव अभियान के तहत लोगो का आम लोगो का सुझाव पेटिका में डाला गया। इस दौरान भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष प्रमोद वर्मा ने बताया कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विकसित भारत संकल्प पत्र अभियान शुरू किया है। उन्होंने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य जन-जन की आकांक्षाओं को सीधे प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंचना है ताकि वे विकसित भारत संकल्प पत्र का आधार बन सकें। उन्होंने बताया कि यह अभियान जनता के समर्पण और विश्वास का प्रमाण होगा। इस अभियान के तहत आगामी लोकसभा चुनाव के घोषणापत्र के लिए एक करोड़ से अधिक लोगों के सुझावों, आकांक्षाओं और विचारों को जानने का पार्टी ने लक्ष्य निर्धारित किया है। विधानसभा संयोजक ओमप्रकाश राम ने बताया कि जनसंपर्क गतिविधियों के माध्यम से पार्टी के कार्यकर्ता लोगों के सुझाव एकत्रित किया जा रहा है। इसके अलावा मोबाइल में मिस्ड कॉल नंबर और नमो एप के जरिए भी लोग अपने सुझाव दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस संकल्प पत्र के जरिए देश का हर वोटर अपने सुझाव दे सकता है। उन्होंने सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को अपील करते कहा कि वह अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों के सुझाव भाजपा के पास पहुंच सकें। उन्होंने कहा कि इस अभियान में प्रत्येक विधानसभा के मंडलो में सुझाव पेटियां लगाई जाएंगी। इस अवसर पर विकसित भारत संकल्प पत्र सुझाव पेटिका में वहां उपस्थित बाजार के कई लोगों ने अपने सुझाव पत्र लिखकर प्रेषित किया। इस मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष धर्मवीर राजभर, उपाध्यक्ष शिव शंकर चौहान, सेक्टर प्रमुख अजय विक्रम सिंह, संजीव त्रिपाठी, सुभाष चौहान, बंटी पांडेय, शैलेंद्र प्रजापति, जयप्रकाश गुप्ता, इरशाद अंसारी, सुनीता गुप्ता, सुदर्शन राजभर, अशोक सिंह, सोनू चौहान, कैलाश गोड़, संजय कुमार सहित प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

## हर घर नल योजना की दुर्दशा, ग्राम बरुइन में पेयजल की आस छोड़ चुके 15 हजार ग्रामवासी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जमानियाँ क्षेत्र के ग्राम बरुइन में ग्रामवासियों को शुद्ध पेय जल पहुंचाने के उद्देश्य से हर घर नल योजना के तहत करोड़ों रुपये की लागत से पानी टंकी बनाई गई। जो आज शोपीस बनी हुई है तथा हर घर नल योजना दम तोड़ता नजर आ रहा है। शासन द्वारा पानी टंकी का निर्माण पूर्व मंत्री ओमप्रकाश सिंह के प्रस्ताव पर करीब सन- 2016 में करोड़ों रुपए की लागत से शुरू हुआ था जो करीब चार वर्षो में बनकर तैयार हुआ तथा सीसी बनी गलियों को खोदकर पाइप डालने का कार्य भी आधा अधूरा ही हुआ। पाइप डालने के बाद गलियों को उसी तरह छोड़ दिया गया। पानी टंकी का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद अधूरे पड़े पाइप लाइन से ही गॉव में सप्लाई शुरू हुई तो मानक विहीन पाइप जगह-जगह से फट कर लिकेज करने लगा तथा गॉव की गलियाँ कीचड़ युक्त हो गई। जिससे ग्रामवासियों को पैदल चलने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। शुद्ध पेय जल व लिकेज बन्द के लिए ग्रामीणों ने विभाग सहित आला अधिकारियों तक गुहार लगाई तो विभाग लिकेज बन्द करने के लिए ठेकेदार को निर्देशित किया। ठेकेदार एक ओर का लिकेज बन्द करता था तो दूसरी ओर लिकेज शुरू हो जाता है। लिकेज का बन्द करना व पुनः दूसरे जगह लिकेज का होना यह क्रम निरंतर चलता रहा। जिससे सप्लाई बन्द कर दी गई। आठ माह से बन्द सप्लाई के कारण 15 हजार ग्रामवासी शुद्ध पेय जल के लिए तरस रहे है तथा हैंडपंप का उपयोग कर जलापूर्ति हेतु दूषित पानी पीने के लिए विवश है। परंतु यहां के लोगों की समस्या दूर करने के लिए जल निगम के अधिकारी तो दूर की बात है जनप्रतिनिधि भी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे है। ज्ञात हो कि ग्राम बरुइन में शुद्ध पेय जल की आपूर्ती हेतु सन- 1978 में ही जल निगम की टंकी बनी हुई थी। जो निर्माण काल से ही शुद्ध पेयजल ग्रामीणों को उपलब्ध करा रहा था। पानी टंकी पुरानी हो जाने के कारण समय की मांग के अनुसार शासन ने नई पानी टंकी का निर्माण तो करा दिया लेकिन वह आज तक शुचारू रुप से संचालित नहीं हो सका। जिससे ग्रामीणों की परेशानियों का हल निकलता नजर नहीं आ रहा है। ग्रामीण अजय सिंह, अमरेन्द्र सिंह, गोपाल सिंह, अमरनाथ सिंह आदि ने बताया कि तहसील दिवस से लेकर जल निगम के अधिकारियों तक गुहार लगाई गई लेकिन आजतक हमलोगों को शुद्धपेय जल नसीब नहीं हुआ। ऐसे में समस्त ग्रामवासी दूषित पानी पीने के लिए मजबूर है।

## संक्षिप्त खबरें

### घर का ताला तोड़कर लाखों के जेवरात सहित नगदी भी उठा ले गये चोर

प्रखर सहजनवा गोरखपुर।आदर्श थाना सहजनवां थाना क्षेत्र में चोरों का आतंक जारी,नहीं थम रही चोरी कि घटनाएं शनिवार की रात्रि चोरों ने फिर एक घर का ताला तोड़कर लाखों के जेवरात सहित नगदी उठा ले गये और किसी को भनक नहीं लगी। मिली जानकारी के अनुसार चन्दौली उर्फ मठिया निवासी भास्कर त्रिपाठी पुत्र काशी नाथ त्रिपाठी ने सहजनवां थाने में तहरीर देकर बताया है कि वह अपने परिवार के साथ नगर पंचायत सहजनवां वार्ड नं-9 स्थित मकान में रहते हैं। जो किसी काम से शनिवार को अपने गांव रन्दौली उर्फ मठिया गये हुए थे। इसी मौके का फायदा उठाकर चोरों ने घर के मेन दरवाजे का ताला तोड़कर अंदर घुसे ताला तोड़कर उसमें रखे सोने के जेवरात,जैसे-2सेट बाली, 2 सेट झुमका, 4अंगूठी,2पायल,2सोने का चैन, 5 चांदी का सिक्का,आदि समेत 10 हजार रूपए नगदी भी उठा ले गए। जिसके बाद उसने इसकी सूचना सहजनवां पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच-पड़ताल कर चोरों की खोजबीन में जुटी हुई हैं। उक्त घटना के संदर्भ में बात करने पर थाना प्रभारी सहजनवां महेंद्र मिश्रा ने कहा तहरीर के आधार पर घटना की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

### मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आईजीएल में शुरु हुआ विधिवत पूजन

प्रखर सहजनवां गोरखपुर। 03 मार्च 2024 को भगवान शंकर जी के प्राण प्रतिष्ठा के पूजन प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में इंडिया ग्लाईकोल्स लिमिटेड के बिजनेस हेड एस के शुक्ल के मार्गदर्शन में पुरे विधि विधान से पूजन शुरू हुआ। इस अवसर पर आईजीएल हेड ऑफिस से आये हुए अधीर कुमार श्रीवास्तव और प्लांट हेड शैलेन्द्र कुमार पांडेय सहित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पुरे जोश और उत्साह के साथ पूजा विधि में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने बताया की आईजीएल में ये पूरा सप्ताह प्राण प्रतिष्ठा तक धर्म पखवाड़ा के तरह मनाया जा रहा है। पुरे फैक्ट्री परिसर में भगवान भोलेनाथ के भक्तो में हर हर महादेव की धुन ही छायी हुयी है और ओम नमः शिवाय मन्त्र का जाप पुरे जोर शोर से किया गया काशीपुर उत्तराखंड से विशेष रूप से आये हुए पंडित गिरीश पोखरिया एवं उनके सहयोगी एवं प्लांट से शैलेश चन्द,आशीष गुप्ता, ए के सिंह, अजीत कुमार त्रिपाठी, विष्णु दत्त पाण्डेय, संजय मिश्रा, अतुल पांडेय, आनंद सिंह, रजनीकांत पाण्डेय, अमित कश्यप, अखिलेश कुमार शुक्ल, राजीव कुमार त्रिपाठी, जगदीश धाकड़, शिवानी शर्मा, मनीष शाही, एस के राय, अरुण कुमार चतुर्वेदी, रतन सिंह, पी वी कुनहप्पन, विशाल, आदि अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

### बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड' पर संपन्न हुआ 'निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

प्रखर वाराणसी। अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान' वाराणसी की 'महिला मण्डल' शाखा की तरफ से 3 मार्च 2024 रविवार को आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर' में करीब साढ़े 400 लोगों ने अपना चेकअप कराया और आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श लिया` संस्थान के अध्यक्ष अघोराचार्य महाराजश्री बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी की अध्यक्षता में हुए इस 'निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर' में वाराणसी शहर के जाने-माने चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दी` वाराणसी के जाने माने चिकित्सकों, डॉ. राजीव सिंह (फिजीशियन), डॉ. सुनील सिंह व डॉ. नीलम सिंह (डेंटल), डॉ. प्रज्ञा ओझा (स्त्री रोग विशेषज्ञ), डॉ.अजय मौर्या (नेत्र रोग विशेषज्ञ) तथा डॉ. प्रासंगिक बोस की अगुवाई में चले 'निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर' में सुबह से ही आवेदनकताओं का आगमन, रविन्द्रपुरी स्थित संस्थान के मुख्यालय, 'बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड' पर शुरू हो गया था। मरीजों के रजिस्ट्रेशन तथा सम्बंधित डॉक्टर द्वारा चेकअप के बाद मरीजों को आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया गया, साथ ही, यथासंभव जरुरी दवाइयों को भी उपलब्ध कराया गया` हमेशा की तरह इस बार भी रुबी सिंह, संगीता सिंह, बबिता, सत्या, चिंता ओझा,नीलम पाण्डेय, सुनित्या, सीमा इत्यादि के नेतृत्व में 'महिला मण्डल' शाखा ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कमर कस ली थी। मरीजों के आगमन, रजिस्ट्रेशन, चिकित्सकीय परामर्श और दवाइयों की उपलब्धता को सुचारु रुप से संचालित करने के लिए 'महिला मण्डल' शाखा ने सुबह से लेकर शिविर की समाप्ति तक अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

### ट्रैक्टर के धक्के से 17 वर्षीय किशोर की मौत, ग्रामीणों ने लगाया चक्का जाम

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गाजीपुर कोतवाली थाना क्षेत्र के अंधऊ के पास ट्रेक्टर के धक्के से खिदिराबाद निवासी साइकिल सवार किशोर रोहित बिंद 17 वर्ष पुत्र स्व राम आसरे जंगीपुर बाजार से समान खरीद कर वापस लौट रहा था तभी अचानक तेज रफ्तार ट्रेक्टर ने अंधऊ हनुमान मंदिर के पास पीछे से टक्कर मार दिया जिससे किशोर की मौके पर मौत हो गई। मौके पर घटना के बाद आस पास के ग्रामीण इकट्ठा हो गए और चक्का जाम कर दिया। मृतक के परिजन दहाड़े मार कर रोने बिलखने लगे तथा पूरे गांव में सन्नाटा पसर गया। घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने समझा बुझाकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। वही मौके पर ट्रेक्टर चालक ट्रेक्टर छोड़ कर फरार हो गया। मृतक रोहित बिंद अपने दादी चाचा के साथ रहता था रोज की तरह जमानियां मोड़ ठेला पर फुल्की भेजने का कार्य करता था।

### नन्दगंज पुलिस ने किया गैर जमानती वारंट के गैंगस्टर से संबंधित वारण्टी को गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक नगर के कुशल निर्देशन में एवं क्षेत्राधिकारी भुड़कुड़ा के निकट पर्यवेक्षण मे रविवार को उप निरीक्षक जयप्रकाश सिंह मय हमराह आरक्षी विपिन नायक के द्वारा मा0 अपर सत्र न्यायाधीश जनपद गाजीपुर द्वारा निर्गत गैर जमानतीय वारण्ट सम्बन्धित उ0प्र0 गैंगेस्टर एक्ट के वारण्टी दीपचन्द्र यादव पुत्र रामबरन यादव निवासी ग्राम भितुआ थाना नन्दगंज जनपद गाजीपुर उम्र करीब 62 वर्ष को उसके घर पर दबिश के दौरान गिरफ्तार किया गया । वारण्टी उपरोक्त का नियमानुसार मेडिकल परीक्षण कराकर सम्बन्धित न्यायलय भेजा जा रहा है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उप निरीक्षक जयप्रकाश सिंह थाना नंदगंज, आरक्षी विपिन नायक थाना नंदगंज जनपद गाजीपुर शामिल रहे।

## मुख्य मंत्री ने किया प्रोजेक्ट अलंकार का शिलान्यास, जिलाधिकारी ने देखा सजीव प्रसारण

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। प्रोजेक्ट अलंकार के अंतर्गत राजकीय, अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अतिरिक्त कक्षा कक्ष, स्वच्छ पेयजल, बालक, बालिका शौचालय, प्रयोगशाला, पुस्तकालय कक्ष, मल्टीपर्पज हॉल का शिलान्यास तथा राजकीय, अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम की स्थापना व स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तीकरण योजना के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को टैबलेट, स्मार्टफोन का वितरण कार्य मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किया गया। जिसका सजीव प्रसारण कलेक्ट्रेट सभागार मे जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की उपस्थिति में देखा गया। जिलाधिकारी ने बताया कि हमारे जनपद में 28 राजकीय, अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के लिए वर्ष 2022-23 में 31 करोड़ की धनराशि मिलनी है, जो की अभी आपेक्षीत है, धनराशि आने के पश्चात राजकीय, अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में निर्माण कार्य किया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकरी संतोष कुमार वैश्य, जिला विद्यालय निरीक्षक एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

## आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में स्मार्ट फोन पाकर खिले छात्र -छात्राओं के चेहरे

प्रखर महराजगंज। नगर पंचायत स्थिति आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में रविवार को स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक बजरंग बहादुर सिंह एवं विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने 369 छात्र-छात्राओं को स्मार्ट फोन वितरित किया।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि बजरंग बहादुर सिंह ने कहा कि आलमाइटी संस्थान ने इस क्षेत्र में शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है। लक्ष्य के प्रति समर्पण से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।सरकार प्रदेश के युवाओं को हाइटेक बनाना चाहती है।छात्र-छात्राओं को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने के लिए स्मार्ट फोन एक जरूरी माध्यम है।

## पीजी कालेज में हुआ राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रविवार को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ राघवेंद्र कुमार पाण्डेय के निर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी चारों इकाईयों का सप्त दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन कुशलपाल श्रोतशाला में प्रभारी प्राचार्य डा0 बद्री नाथ सिंह एवं एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग डॉ लव जी सिंह, की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ, मुख्य अतिथि डा0 बद्री नाथ सिंह द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ तत्पश्चात स्वयं सेविकाओं ने माँ सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत कियो इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा0 बद्री नाथ सिंह ने स्वयं सेवकों एवं स्वयं सेविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि कैसे विभिन्न योजनाओं एवं जागरूकता अभियान द्वारा समाज को जागरुक किया जा सकता है। राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयं सेवकों के व्यक्तित्व विकास का एक सशक्त माध्यम है जिससे वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का दृढ़ होकर मुकाबला कर सकता है उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना के लोगो के अर्थ को विस्तार से बतायो लोगो का लाल एवं नीला रंग स्वयं सेवकों को राष्ट्र निर्माण, सामाजिक गतिविधियों के लिए सक्रिय और ऊजार्वान होने के लिए प्रेरित करता है लोगो का पहिया निर्माण, संरक्षण के चक्र का प्रतिनिधित्व करता है डॉ लव जी सिंह ने स्वयं सेवकों एवं स्वयं सेविकाओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयं सेवकों को समाज से जोड़ता है साथ ही उन्होंने स्वयं सेवकों को अनुशासित एवं संयमित रहने की प्रेरणा भी प्रदान की' इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डा0 रुचि मूर्ति सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया ' वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डा0 शिव शंकर यादव ने कार्यक्रम का सकुशल संचालन किया' इस विशेष अवसर पर महाविद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डा0 त्रिनाथ मिश्र, कार्यक्रम अधिकारी श्री धर्मेन्द्र एवं सहायक कर्मचारी श्री राम प्रवेश, राष्ट्रीय सेवा योजना के सभी स्वयं सेवक और स्वयं सेविकाएं उपस्थित रहे।

## आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में स्मार्ट फोन पाकर खिले छात्र-छात्राओं के चेहरे

प्रखर महराजगंज। नगर पंचायत स्थिति आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में रविवार को स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक बजरंग बहादुर सिंह एवं विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने 369 छात्र-छात्राओं को स्मार्ट फोन वितरित किया।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि बजरंग बहादुर सिंह ने कहा कि आलमाइटी संस्थान ने इस क्षेत्र में शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है। लक्ष्य के प्रति समर्पण से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।सरकार प्रदेश के युवाओं को हाइटेक बनाना चाहती है।छात्र-छात्राओं को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने के लिए स्मार्ट फोन एक जरूरी माध्यम है। स्मार्ट फोन का उपयोग करके छात्र अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। महाविद्यालय के प्रबंधक महमूद आलम ने कहा कि आज के तकनीकी युग में सूचनाओं का संकलन तथा आदान- प्रदान स्मार्ट फोन से आसान हो गया है। उन्होंने कहा कि

उपस्थित छात्र-छात्रा स्मार्ट फोन का उपयोग ज्ञानार्जन तथा तकनीकी दक्षता प्राप्त करने में करें। विशिष्ट अतिथि राकेश जायसवाल ने कहा कि इस संस्थान के बच्चों में भरपूर प्रतिभा है। स्मार्ट फोन का सकारात्मक दिशा में प्रयोग कर वे आसमान की बुलन्दियों को प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन तथा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यर्पण से हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के उप प्रबंधक मकसूद अहमद, प्राचार्य डॉ० महेश भारती, मुख्य नियन्ता अनवर अली, महताब आलम,अम्ब्रीश चौहान, आलमाइटी इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य सुनील कुमार, ईश्वरचंद चैरसिया, मोहम्मद फारूक सिद्दीकी, शबी अहमद, अंगद प्रसाद, मोहम्मद अशफाक सिद्दीकी, प्रेमशंकर चौहान आदि उपस्थित रहे।

## राष्ट्रीय सेवा योजना के बैनर तले सात दिवसीय विशेष शिविर का हुआ उद्घाटन

प्रखर जौनपुर। फरीदुल हक मेमोरियल पी जी कॉलेज सबरहद शाहगंज में राष्ट्रीय सेवा योजना के बैनर तले सात दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन दिनांक 3-3.2024 दिन रविवार को हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज के प्राचार्य डॉ तबरेज आलम द्वारा स्वामी विवेकानंद की तस्वीर पर माल्या अर्पण कर किया गया इस अवसर पर कॉलेज के प्रवक्ता सूर्यप्रकाश यादव,डॉ निजामुद्दीन ने स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला।महाविद्यालय प्राचार्य डॉ तबरेज आलम ने सेवा योजना के विषय में स्वयंसेवकों को राष्ट्रहित के विषय में अवगत कराते हुए कहा कि समाज में व्यक्त अपने व्यक्तित्व के माध्यम से विकास करता है और साथ ही साथ व्यक्तित्व के विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वयंसेवक अपने व्यक्तित्व के माध्यम से ही समाज में अपना एक स्थान स्थापित कर सकता है और इसी के साथ राष्ट्र हित भी हो सकता है इसके उपरांत वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ अमित कुमार गुप्ता ने उपस्थिति कार्यक्रम में सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

## लोकसभा चुनावों के दृष्टिगत एसडीएम व क्षेत्राधिकारी ने भारी फोर्स के साथ किया रूटमार्च

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। रविवार को आगामी लोकसभा चुनाव वर्ष-2024 के दृष्टिगत थाना जमानियाँ क्षेत्र के संवेदनशील व अति संवेदनशील बुथो से सम्बन्धित स्थानो का एरिया डोमिनेशन, रुट मार्च उपजिलाधिकारी जमानियाँ व क्षेत्राधिकारी जमानियाँ व प्रभारी निरीक्षक जमानियाँ तथा पैरामिलीट्री फोर्स के साथ किया गया तथा आम जन से आगामी लोकसभा चुनाव वर्ष-2024 को शान्तिपूर्वक सम्पन्न कराये जाने हेतु चुनाव आयोग द्वारा जारी आदेशो व निदेशों से अवगत कराया गया ।

संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील व बरनेबल पाकेट के बुथो के स्थानो का किये गये एरिया डोमिनेशन, रुट मार्च का विवरण इस प्रकार है

1.कस्बा जमानियाँ, 2. बरुईन बाजार, 3. खरगशीपुर उर्फ नई बाजार, 4.अभईपुर, 5.धुस्का, 6.असैचन्दपुर, 7.देवढी, 8.दरौली, 9.मच्छरमारा बरनेबल पॉकेट, 10. देवैथा, 11. करमहरी।

## आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में स्मार्ट फोन पाकर खिले छात्र-छात्राओं के चेहरे

प्रखर महराजगंज। नगर पंचायत स्थिति आलमाइटी पी०जी० कालेज बृजमनगंज में रविवार को स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक बजरंग बहादुर सिंह एवं विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने 369 छात्र-छात्राओं को स्मार्ट फोन वितरित किया।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि बजरंग बहादुर सिंह ने कहा कि आलमाइटी संस्थान ने इस क्षेत्र में शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है। लक्ष्य के प्रति समर्पण से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।सरकार प्रदेश के युवाओं को हाइटेक बनाना चाहती है।छात्र-छात्राओं को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने के लिए स्मार्ट फोन एक जरूरी माध्यम है। स्मार्ट फोन का उपयोग करके छात्र अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। महाविद्यालय के प्रबंधक महमूद आलम ने कहा कि आज के तकनीकी युग में सूचनाओं का संकलन तथा आदान- प्रदान स्मार्ट फोन से आसान हो गया है। उन्होंने कहा कि



उपस्थित छात्र-छात्रा स्मार्ट फोन का उपयोग ज्ञानार्जन तथा तकनीकी दक्षता प्राप्त करने में करें। विशिष्ट अतिथि राकेश जायसवाल ने कहा कि इस संस्थान के बच्चों में भरपूर प्रतिभा है। स्मार्ट फोन का सकारात्मक दिशा में प्रयोग कर वे आसमान की बुलन्दियों को प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन तथा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यर्पण से हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के उप प्रबंधक मकसूद अहमद, प्राचार्य डॉ० महेश भारती, मुख्य नियन्ता अनवर अली, महताब आलम,अम्ब्रीश चौहान, आलमाइटी इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य सुनील कुमार, ईश्वरचंद चैरसिया, मोहम्मद फारूक सिद्दीकी, शबी अहमद, अंगद प्रसाद, मोहम्मद अशफाक सिद्दीकी, प्रेमशंकर चौहान आदि उपस्थित रहे।

## भाजपा युवा मोर्चा ने किया अलीपुर बनगावा में युवा चौपाल का आयोजन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भारतीय जनता युवा मोर्चा नंदगंज मण्डल अंतर्गत युवा चौपाल का आयोजन अलीपुर बनगावा स्थित श्री शिव साई मंदिर पर संपन्न हुई।

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि लोकसभा गाजीपुर के लोकसभा संयोजक एवं पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्ण बिहारी राय ने कहा कि भारत एक युवा राष्ट्र है और भारत का युवा सजग एवं सशक्त है।भारत की युवा पीढ़ी ने 2014 से पूर्व कांग्रेस के शासनकाल में हो रहे भ्रष्टाचार को समाप्त करते हुए 2014 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में कमल खिलाने का काम किया। जिससे देश में सकारात्मक परिवर्तन प्रारंभ हुआ जो निर्बाध निरंतर जारी है। मोदी जी ने युवाओं, महिलाओं, पिछड़े, दलितों के उत्थान के लिए काम करना अपना संकल्प बनाए हुए है और वो उस संकल्प से विकसित भारत का निर्माण करने की सिद्धि की ओर पहुंचाने का काम कर रहे है। उन्होंने ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री शनरेन्द्र मोदी ने देश की सुरक्षा के लिए जो काम किए है वो अभूतपूर्व है। पाकिस्तान द्वारा किए गए हर नकारात्मक प्रयासों का मोदी ने सर्जिकल और एयर स्ट्राइक के माध्यम से खुल के जवाब दिया। उन्होंने ने कहा कि मोदी सरकार के पहले लोग वीजा नहीं देते थे , आज वही देश और उसके प्रतिनिधि प्रोटोकॉल तोड़ कर मोदी की आगवानी में पलक पावडे बिछाए रहते है। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष विनीत कुमार शर्मा, महामंत्री संतोष पाण्डेय, अभिनव सिंह छोटू, विजय सिंह, मनोज सिंह, संतोष सिंह मनोज, हर्षित सिंह, अंकुर श्रीवास्तव, प्रतीक सिंह कुशवाहा, शशिकांत सिंह आदि उपस्थित रहें। लोकसभा संयोजक कृष्ण बिहारी राय ने बनगांवा में सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों से संपर्क कर संगठन द्वारा चलाए जा रहे लाभार्थी संपर्क अभियान में लोगों से सम्पर्क कर मिस्ड काल कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बूथ अध्यक्ष राधेश्याम पाण्डेय और संचालन गौरव श्रीवास्तव ने किया।

## स्वास्थ्य शिविर कैम्प में 350 मरीजों का हुआ उपचार

प्रखर खेतासराय जौनपुर। नगर के प्राथमिक विद्यालय में रविवार को अतुल्य वेलफेयर ट्रस्ट किन्नर समिति के लोगों ने स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया । दर्जन भर अलग-अलग डाक्टरों के पैनल ने मरीजों का उपचार किया । करीब साढ़े तीन सौ रोगियों के उनके स्वास्थ्य की जाँच की गई । कैम्प का उद्घाटन शाहगंज विधायक रमेश सिंह ने किया । इस मौके पर विशेषज्ञों ने लोगों को बीमारी से बचने के टिप्स दिए । यहाँ पूर्वाह्न 11 बजे आयोजित शिविर में डॉक्टरों की टीम ने लोगों की जाँच की । जिसमें हृदय, शुगर, ब्लड प्रेशर, सांस फूलना, नाक कान, स्किन, आर्थो, बाल रोगों का उपचार किया गया । जिसमें सबसे अधिक संख्या बाल व आर्थो के मरीज शामिल रहे । ट्रस्ट के अध्यक्ष उर्वशी सिंह ने बताया कि हमारी समिति स्वास्थ्य और शिक्षा पर काम करती है । जनपद के 50 टीबी मरीजों का न्यूट्रिशन निःशुल्क करा चुकी है । हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ रॉबिन सिंह ने कहा कि चूंकि हड्डी तेजी से रिमोल्ड करती है, ऐसे में लोगों अपने डाइट में पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम और विटामिन डी ग्रहण करना चाहिए । इस मौके पर स्किन रोग विशेषज्ञ डॉ देवेंद्र प्रताप सिंह, टीबी एवं सांस रोग विशेषज्ञ डॉ राजीव रतन यादव, नाक कान व गला डॉ एकता कन्नौजिया, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ सलिल, स्त्री रोग विशेषज्ञ एमडी डॉ शैली, मनीष गुप्ता समेत अन्य लोग शामिल रहे । अंत मे बिट्टू किन्नर ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया ।

# एक्शन करने का मेरा समय

## - कियारा आडवाणी

अपने शानदार अभिनय और प्रसिद्ध, कियारा आडवाणी ने फिल्म उद्योग में अपनी यात्रा और स्टारडम बढ़ना किसी से कम नहीं है। थिएटर और ओटीटी प्लेटफॉर्म दोनों पर लगातार हिट फिल्मों के साथ, उन्होंने बहुमुखी और प्रतिभाशाली कलाकार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। ''एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी'' में अपनी ब्रेकआउट भूमिका से लेकर ''कबीर सिंहः'' ''शेरशाह'', ''जुग जुग जियो'' और ''भूल भुलैया 2'' में अपनी हालिया सफलताओं तक ''डॉन 3'' में एक्शन भूमिका निभाने के बारे में बात करते हुए, अभिनेत्री ने कहा- ''मुझे लगता है कि यह सचेत निर्णय है, मै कुछ अलग करना चाहती थी। मै इसे अपने लिए बदलना चाहती थी और यह शैली पाने के लिए मै तरस रही थी। यह रोमांचक है? अभिनेता के रूप में, आप लगातार अलग-अलग किरदारों में कदम रख रहे है और दुनिया को यह विश्वास दिला रहे है कि आप वही है। मेरे पास करने के लिए समय है वह। मै बहुत उत्साहित हूं, इसलिए मैने कभी कोई एक्शन फिल्म नहीं की है। अब कुछ एक्शन करने का मेरा समय है!'' कियारा की आगामी प्रोजेक्ट जैसे ''गेम चेंजर'' और अन्य अघोषित प्रोजेक्ट का बेसब्री से इंतजार है।

## एटली कहते हैं, "मुझे पैन इंडिया शब्द पसंद नहीं"

उद्योग में बड़ी हिट देने वाले निर्देशक एटली, जिन्होंने 2013 में ''राजा रानी'' के साथ निर्देशन की शुरुआत की और शाहरुख खान अभिनीत ''जवान'' दी, ने सफलता हासिल की है। ''थेरी,'' ''मर्सल,'' और ''बिगिल'' सहित उनकी फिल्मों ने न केवल बॉक्स ऑफिस पर दबदबा बनाया है, बल्कि पहचान और पुरस्कार भी हासिल किए है। उन्होंने कहा, ''फिल्म बिरादरी के पेशेवर व्यक्ति के रूप में...मुझे पैन इंडिया की दुनिया पसंद नहीं है, भारत एक है और विविधता में एकता एक है। भाषा सिर्फसंचार माध्यम है। वे ज्ञान नहीं है। केजीएफ सबसे बड़ी हिट है, केजीएफ के बाद यश भारतीय सुपरस्टार है, अल्लू अर्जुन - पुष्पा, विजय - विल्लू...तो मुझे लगता है कि हम एक है और हम कभी नहीं इसे पैन इंडिया फ़िल्में कहना पसंद है या क्रॉस ओवर सिनेमा, हम इसे भारतीय फ़िल्म, भारतीय फ़िल्म बिरादरी कहना पसंद करते है।''

## जसविंदर ने किया रहस्य, ड्रामे का खुलासा

अभिनेत्री जसविंदर गार्डनर, जो ''रेडी'', ''वी फॉर विक्टर'' और ''मिसिंग'' जैसी फिल्मों में भूमिकाओं के लिए जानी जाती है, ने सीरीज ''स्टेट वर्सेस आहूजा'' में (अश्मित पटेल) अंश आहूजा की पत्नी दिव्या आहूजा की भूमिका निभाई। जसविंदर ने कहा, ''शादी के बाद दिव्या की जिंदगी बदल जाती है। वे बताती है कि कैसे वह कॉलेज गई, उसे प्यार हो गया, उसका सपना उसके प्रेमी अंश के सपने को पूरा करने में मदद करना बन गया और शादी के बाद अंश का सपना, उसकी प्राथमिकता बन गई। वह बस इतना चाहती थी कि अंश वह सब कुछ हासिल करे, जिसका उसने सपना देखा था। दिव्या अपनी जिंदगी में कठिन पड़ाव से गुजरती है, जब उसके पति पर बलात्कार जैसे जघन्य अपराध का आरोप लगाया जाता है। उसका जीवन अचानक अस्त-व्यस्त हो जाता है। मुझे बहुत मज़ा आया।'' 'स्टेट वर्सेस आहूजा' बॉलीवुड सुपरस्टार के जीवन पर आधारित सीरीज है, बवंडर तब आ जाता है, जब उस पर नौकरानी के बलात्कार का आरोप लगाया जाता है। रहस्य, जाँच और अदालती ड्रामा की कहानी है, जहाँ कई खुलासे चौका देते है। वॉचो पर उपलब्ध शो में अनुरेखा भगत, सारिका सिंह, स्वप्निल रालकर, अपेक्षा वर्मा, दृष्टि पाटिल, मनीष जेटली, अर्जुन कृष्णा, विक्की बैद्यनाथ और हर्ष गौतम जैसे कलाकार शामिल है

## राहुल के पास 50 जोड़े से अधिक जूते

लोफर्स से लेकर फैशनेबल स्टाइल्स तक विशिष्ट स्टाइल का आईना होते हैं और परिधान की खूबसूरती को बढ़ा देते हैं। एण्डटीवी के 'अटल' में अवध बिहारी वाजपेयी का किरदार निभा रहे राहुल जेठवां के पास 50 से ज्यादा जूतों का बेमिसाल कलेक्शन है। जेठवा ने बताया,

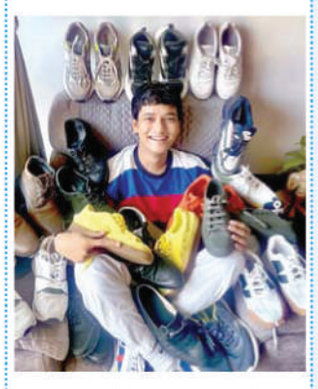

''बचपन में हमारे पास बहुत सीमित वित्तीय संसाधन थे, ऐसे में जूते खरीदना लग्जरी हुआ करता था। जूतों को लेकर मेरा प्यार जागा और वह आज भी बरकरार है। जूते पहनना सिर्फ फैशन नहीं है इससे आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही कम्फर्ट के साथ-साथ स्टाइल में भी चार-चांद लगते हैं। मुझे डांस करना भी पसंद है। इसलिए जूत आरामदायक और टिकाउ होने चाहिए। उनमें आर्च और एंकल सपोर्ट होना चाहिए जिससे डांस करते समय चोट नहीं लगे और कठिन से कठिन डांस मूव्स भी स्थिर रहें। मुझे भड़कीले रंग बहुत पसंद हैं, यह मेरी जिंदादिल शख्सियत को बयां करते हैं। मेरे पास 50 से अधिक जोड़ी जूतों का कलेक्शन है, और उनका कलेक्शन कराना मजेदार एडवेंचर है। हर पेयर की अलग कहानी है - इन सबकी डिजाइनें, मैटेरियल और वाइब्स अलग-अलग होती हैं। क्रेजी कलर्स और पैटर्न्स भी खुद को मजेदार तरीके से अभिव्यक्त करने में मदद करते हैं। यह सिर्फ जूतों के बारे में नहीं है, जूतों की दुनिया रोजमर्रा की जी में रोमांच लेकर आती है। यह सिर्फ फुटवियर को लेकर नहीं है बल्कि उस दुनिया में कदम रखने जैसा है जहां हर पेयर की अपनी कहानी है और आपकी व्यक्तिगत स्टाइल खुद को अभिव्यक्त करती है। मैं स्मार्ट खरीदार हूं लेकिन मेरा भाई विशाल महारथी है और महंगे जूतों पर बहुत खर्च करता है। जूते आत्म-अभिव्यक्ति को लेकर मेरे सफर एवं प्यार को बयां करते हैं।''

## महमूद ने किया डिलीवरी ब्वॉय का काम

कलाकारों द्वारा मेथड ऐक्टिंग को आजमाने, अनगिनत ऑडिशन्स देने और किरदारों में ढलने की काबिलियत दिखाने की पुरजोर कोशिशों के लिये डिलीवरी ब्वॉय बनने के बारे में सुना है? महमूद हाशमी फिलहाल एण्डटीवी के 'अटल' में प्रमुख विरोधी 'तोमर' का किरदार अदा कर रहे हैं। हाशमी ने कहा, ''मैं जबलपुर में

डिलीवरी ब्वॉय बन गया। इस दौरान मैं हर दिन 10-12 घंटों तक साइकिल चलाया करता था इससे मुझे सिर्फ दो महीनों में ही 12 किलों वजन कम करने में मदद मिली। यह काम बहुत मुश्किल था, लेकिन इसके बावजूद मैंने शूटिंग में आसानी से बदलाव कर लिया। यह अनुभव बहुमूल्य साबित हुआ और इससे मुझे बतौर ऐक्टर अपनी बॉडी को शेप में लाने में मदद मिली। डिलीवरी ब्वॉय के रूप में उस दौर ने मुझे दृढ़ता और लचीलेपन के बारे में सिखाया, जिसे मैं अपने ऑन-स्क्रीन परफॉर्मेंस में शामिल करता रहा हूं।''

## सृष्टि निभाएंगी पहला नेगेटिव रोल

जीटीवी के शो कुमकुम भाग्य में आए 20 साल के लीप के बाद इसमें मोनिशा का किरदार सृष्टि जैन निभाएंगी। सृष्टि इसमें अलग तरह की उलझन पैदा करेंगी। जैन बताती है, ''पहली बार नेगेटिव किरदार निभाना मेरे लिए रोमांचक चुनौती है। मुझे एक्टर के तौर पर अपनी कला के इस नए पहलू को जानने समझने का मौका मिलेगा। मेरी एंट्री दिलो दिमाग पर गहरा असर करेगा, जहां मै सबका दिल जीतना चाहती हूं।''

## टीवी

## गीतांजलि मिश्रा

### दान की 10 सालों की बचत

गीतांजलि मिश्रा ने अनूठी मिसाल कायम की। साधारण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखने वाली गीतांजलि मिश्रा ने न सिर्फ बतौर अभिनेत्री कामयाबी हासिल की है बल्कि जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिये अपनी दस सालों की बचत को दान कर महान उद्देश्य का विकल्प भी चुना। मिश्रा ने कहा. ''मेरा मानना है कि समाज की भलाई के लिये किये जाने वाले काम में खूबसूरती होती है।

समाज के प्रति जिम्मेदार होना मुझे यह सोचने के लिये प्रेरित करता है कि मैं व्यक्तिगत तौर पर क्या हासिल कर सकती हूं और मेरे किन कार्यों से समुदाय में सकारात्मक बदलाव आ सकता है। कोविड संकट जब अपने चरम पर था, उस समय मेरी कामवाली आई उसने मुझे बताया कि उसके लिये दो वक्त की रोटी जुटाना भी काफी मुश्किल हो रहा है। तभी मैंने अगले कुछ महीनों का राशन उपलब्ध करवाया, क्योंकि 'चैरिटी की शुरूआत घर से ही होती है'। उसके जरिये ही मुझे पता चला कि उसके समुदाय में ऐसे कई परिवार हैं, जिन्हें दैनिक जरूरत के सामान जुटाने में दिक्कतें आ रही थीं। यह सब जानने के बाद मैंने उन सभी को संपूर्ण राशन किट देकर उनकी मदद करने का फैसला किया।

इस राशन किट में चावल, दाल, चीनी, नमक और बिस्कुट के अलावा साबुन, सैनिटाइजर्स, मास्क वगैरह जैसे आइटम भी शामिल थे। जरूरतमंद लोगों की पूरी मदद करने की कोशिश की, फिर चाहे वे जहां भी रहते हों। वह कठिन समय थ लेकिन मेरा ध्यान वित्तीय सहायता प्रदान करने के बजाय, लोगों की आवश्यक जरूरतों को पूरा करने पर था।

मैंने राशन किट पहुंचाने में सहयोग करने के लिये विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया और लगभग 25 लाख रूपये निवेश किये, जो मेरी तकरीबन 10 सालों में कड़ी मेहनत से कमाई गई आमदनी की बचत थी। मैंने याद रखा है कि पैसा जमीन पर रहकर कमाया है, यह आज लोगों की जरूरत है, पैसे वापस जमा कर लेंगे और ऊपर वाले के सीसीटीवी में सब कैप्चर होता है।''

## दरोगा की बेटी बन गई एसीपी

एण्डटीवी का शो 'हप्पू की उलटन पलटन' में मलाइका (सोनम पंवार) धाकड़ एसीपी बनकर चौंका देगी। मलाइका वफादार और ईमानदार ऑफिसर बनने की ट्रेनिंग ले चुकी है। वह दरोगा हप्पू सिंह (योगेश त्रिपाठी) से उलट है। मलाइका चूंकि हप्पू की बेटी है इसलिये हप्पू को चुनौती मिलेगी। सोनल ने कहा. ''मैंने हमेशा टीनेज लड़कियों (किषोरियों) की भूमिकाएं की हैं। असल जिन्दगी में मेरी शख्सियत बहुत कुछ मलाइका जैसी है। इसलिये पुलिस ऑफिसर के किरदार में ढलना चुनौतीपूर्ण और रोमांचक रहा। मैंने पहली बार पिस्टल पकड़ी और पुलिस की यूनिफॉर्म पहनने से स्क्रीन पर मेरे व्यक्तित्व को ताकत मिली। मैं अपने किरदार को असलीपन देना चाहती थी और अपनी बेबाक तथा दबंग शख्सियत दिखाना चाहती थी। मलाइका की यह हिम्मतवाली भूमिका मुझे और महिला सशक्तिकरण का दमदार संदेश देती है। यह दिखाती है कि महिलाएं अपनी हिमायत के लिये पुरुष के बिना भी बहादुर और खूबसूरत लग सकती हैं। सुपरकॉप बनकर गलत लोगों से भिड़ रही हूँ लेकिन कॉमेडी के तड़के के साथ।''

## आलिया, शाहिद, अनन्या, बॉबी, आयुष्मान, मौनी देंगे परफॉर्मेंस

मीडिया एवं एंटरटेनमेंट दिग्गज ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइज़ेस लिमिटेड बॉलीवुड का जश्न - मारुति सुजुकी अरेना प्रेजेंट्स जी सिने अवार्ड्स 2024 लेकर आ रहा है। साल 2023 ऐसा साल रहा, जहां भारतीय फिल्मों ने रिकॉर्ड-तोड़ ब्लॉकबस्टर फिल्मों के साथ वापसी की। बॉलीवुड के जाने-माने कलाकारों, डायरेक्टर्स, प्रोड्यूसर्स और फिल्म टेक्निशियन्स इस का हिस्सा बनेंगे। बॉलीवुड सुपरस्टार आलिया भट्ट ने 22वें जी सिने अवॉर्ड्स 2024 की ट्रॉफी का अनावरण किया। - बॉबी देओल, अपारशक्ति खुराना और मौनी रॉय पुरानी

यादों में खो गए दिलचस्प किस्से याद किए। आलिया भट्ट, शाहिद कपूर, कृति सैनन, अनन्या पांडे, बॉबी देओल, आयुष्मान खुराना, मौनी रॉय, उत्कर्ष शर्मा और सिमरत कौर समेत कई सितारों की परफॉर्मेंस शामिल होंगी। आयुष्मान और अपारशक्ति खुराना होस्ट करेंगे, हाजिरजवाबी में माहिर सुनील ग्रोवर मजेदार सेगमेंट्स की कमान संभालेंगे। शाहरुख खान 7 साल के बाद परफॉर्म करने जा रहे है। आलिया भट्ट ने कहा, ''मुझे लाइव परफॉर्म करने का इंतजार रहता है! इस साल का एक्ट बेहद स्पेशल होगा और यह रिश्ता गुजरते वर्षों के साथ और मजबूत हो गया है। लाइव परफॉर्मेंस का रोमांच और जोश बेमिसाल होता है।'' बॉबी देओल ने कहा, ''बेहद उत्साहित हूं तो अबरार 'जमाल कुड्डू' पर सबको नचाने के लिए तैयार है, साथ ही कुछ अनोखे सरप्राइज़ लेकर आने को बेकरार है।''

## प्रेम और बलिदान के अटूट बंधन

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन की महाकाव्य गाथा श्रीमद रामायण ने रानी कैकेयी द्वारा भगवान राम को अयोध्या से निर्वासित करने और भरत को राजा बनाने की मांग देखी है। भाईचारे के अपने अटूट बंधन को दर्शाते हुए, भरत भगवान राम से मिलने के लिए चित्रकूट जाते है, जहां वह उनसे वापस आने और राजा के रूप में अपने सही स्थान का दावा करने का अनुरोध करते भरत भाई की पादुकाएं ले लेंगे और उन्हें भगवान राम के अधिकार के प्रतीक के रूप में सिंहासन पर रखेंगे। भरत का किरदार निभाने वाले निखलेश राठौड़ कहते है, ''वफादारी और प्रेम की इस गाथा में, भरत की अपने भाई भगवान राम के प्रति अटूट भक्ति निःस्वार्थता और बलिदान के मार्ग को रोशन करती है, जहां सिंहासन भाईचारे के बंधन के सामने फीका पड़ जाताहै। भरत के चरित्र से गहरा सबक मिला।''

## नाकिया देवी का अवतार

स्टार भारत पर प्रसारित शो 'शैतानी रस्में' में नाकिया हाजी परिवार की रक्षा के लिए सभी बाधाओं को पार कर बहादुरी से लड़ती है। नाकिया को त्रिशूल धारण की हुई देवी के अवतार में देखेंगे। नाकिया बताती है- ''मै ऐसे व्यक्तित्व को चित्रित कर रही हूँ, जो मानव संघर्ष की गहराई तक जाकर उसके आंतरिक परिस्थितियों को बयां करता है और उस पर विजय प्राप्त करता है। चुनौतियां भले ही अंधेरी खाई से गुजरने के समान है लेकिन आत्मशक्ति ही हमें इन कठिनाइयों से बाहर निकलने में मदद करती है और हमें सशक्त बनाती है। कहावत है न कि औरत, देवी और दुर्गा दोनों का रूप ले सकती है। महिलाओं के अनुभवों को भी प्रतिबिंबित करती है, जो उनके असीम साहस, प्रेम और लचीलेपन का प्रतीक मानी जाती है। यह नारी जाति की सामूहिक शक्ति का प्रतीक है, जो हमारी विविध भूमिकाओं को दर्शाता है जो माँ, बहन, पत्नी, बेटी और हमारी प्रत्येक शक्ति की अनूठी अभिव्यक्ति से ओत-प्रोत है। यह अदम्य भावना का प्रतीक है जो हमें परिभाषित करती है, उन अटूट बंधनों का प्रतीक है जो परिवारों को एकजुट करती है। संक्षेप में, यह शक्तिशाली चित्रण है, जो महिला शक्ति और एकता के सार को दर्शाता है।''

## संगीत निपुणता लेकर आईं नेहा कक्कड़

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन का शो 'सुपरस्टार सिंगर' 9 मार्च से तीसरी किस्त के साथ वापस आ रहा है! नेहा कक्कड़ इस सीज़न में 'सुपर जज' की भूमिका में कदम रखेंगी। नेहा ने साझा किया- ''प्रतिभा के बीज बहुत कम उम्र में बोए जाते है। मै इसकी गारंटी दे सकती हूं क्योंकि मैंने भी कम उम्र में अपनी संगीत यात्रा की शुरुआत की है और तब से, यह सीखने और मेरी प्रतिभा को समृद्ध करने का उतार-चढ़ाव भरा सफर रहा है। सुपरस्टार सिंगर न सिर्फ सीखने का बढ़िया मंच है, बल्कि हमारे देश की युवा संगीत प्रतिभा को निखारने के लिए आदर्श मार्गदर्शक शक्ति भी है। मै इन युवा गायकों के विकास को देखने और उनकी कला को निखारने में मदद करने के लिए उत्सुक हूं। संगीत में दुनिया को एकजुट करने और प्रेरित करने की शक्ति है। इन छोटे बच्चों द्वारा अपनी गायकी से जादू बिखेरने से बेहतर क्या हो सकता है, मै उत्साह, सकारात्मकता, प्रोत्साहन और रचनात्मक प्रतिक्रिया लाने की उम्मीद करती हूं। मै उन्हें खुद पर और अपनी प्रतिभा पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करना चाहती हूं।''

## दिलीप का गुस्सा

सोनी सब का 'पुष्पा इम्पॉसिबल' पुष्पा (करुणा पांडे) के मजाक को देखकर दिलीप पटेल (जयेश मोरे) गुस्से से आग बबूला हो जाता है। मोरे ने कहा- ''दिलीप के लिए यह कहानी काफी दिलचस्प है। यह व्यक्ति के अंदरूनी संघर्ष को दर्शाता है जो खुद को बदलकर बेहतर इंसान बनना चाहता है, फिर भी उसे अपने मूल स्वभाव पर काबू पाना चुनौतीपूर्ण लगता है। दिलीप की बुरी प्रवृत्तियां लगातार उभरती रहती है, जिससे वह ऐसी चालों और साज़िशों में शामिल हो जाता है जो पुष्पा के जीवन को और अधिक जटिल बना देती है।''

## कॉमेडी चैंपियन के रूप में हुमा कुरैशी

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन नया कॉमेडी शो, 'मैडनेस मचाएंगे - इंडिया को हंसाएंगे' लॉन्च करेगा! हुमा कुरैशी कॉमेडी चैंपियन की भूमिका निभाएंगी। हुमा कहती हैं- ''कॉमेडी यूनिवर्सल स्ट्रेस बस्टर के रूप में काम करती है और हमारा उद्देश्य सरल है: एक समय में एक चुटकुला सुनाना और खुशियां फैलाना। आज की तेज-तर्रार दुनिया में, हमारा मानना है कि हर कोई हँसी-मजाक से भरे ब्रेक का हकदार है, और मैडनेस मचाएंगे यही देने आ रहा है। मैं कॉमेडी चैंपियन के रूप में इसका हिस्सा हूं, जिसमें मैं अलग-अलग सेगमेंट्स में टास्क के साथ चुनौती दूंगी, जो उनकी काबिलियत का परीक्षण करेंगे।''

## लाइट्स, कैमरा, कॉमेडी

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन ताज़ा कॉमेडी शो 'मैडनेस मचाएंगे - इंडिया को हंसाएंगे' के साथ 9 मार्च से शुरू हो रहा है। शो हास्य कलाकारों - परितोष त्रिपाठी, स्नेहिल दीक्षित, गौरव दुबे, केतन सिंह, अंकिता श्रीवास्तव, कुशाल, इंदर साहनी और हेमांगी के साथ कॉमेडी की विभिन्न शैलियों को पेश करेगा। परितोष त्रिपाठी ने कहा, ''मै भारतीय टेलीविजन पर कॉमेडी को शैली के रूप में पुनर्जीवित करते हुए, चुटकुलों, मजाक और मनमोहक प्रदर्शन से भरी ताजा, मनोरंजक सामग्री लाने के लिए उत्सुक हूं। मुझे विश्वास है कि वे इस शैली में माहिर है। कॉमेडी कठिन शैली है, यही वजह है कि मै इसे पसंद करता हूं। मै अभिनेता के रूप में खुद को तलाशना पसंद करूंगा।'' स्नेहिल कहती है, ''अवसर, चुनौती जिसे मै उत्सुकता से स्वीकार करती हूं। सोशल मीडिया, ओटीटी और फिल्मों की खोज करने के बाद, मुझे टेलीविजन में कदम रखना पड़ा।''

## जोखिम भरे कर्ज से घर खतरे में

सोनी सब का 'आंगन अपनों का' सिंगल पिता जयदेव शर्मा (महेश ठाकुर) और उनकी बेटियों की कहानी है। पल्लवी (आयुषी खुराना) ने विवाहित जीवन की शुरुआत कर दी है। आयुषी कहती है, ''पल्लवी पिता के लिए चिंतित रहती है। अब, उनकी वित्तीय स्थिरता और उनके घर की किस्मत दांव पर है। पिता के रूप में उन्होंने अपनी बेटियों के लिए बहुत त्याग किया है लेकिन ज़रूरत के समय में उसकी मदद न कर पाने के विचार से उन्हें असहाय की भावना महसूस होती है।''

## दीपिका सिंह ने नाक छिदवा ली

कलर्स का शो 'मंगल लक्ष्मी' गृहिणी और उसकी छोटी बहन के इर्द-गिर्द घूमती कहानी है, जो प्यार और शादी के आधार - सम्मान पर प्रकाश डालती है। बहनों के रिश्ते में, दीपिका सिंह बड़ी बहन मंगल, अपनी छोटी बहन सानिका अमित लक्ष्मी के लिए उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती है। मंगल, अपने पति से अपमान सहते हुए, लक्ष्मी के लिए ऐसा दूल्हा चाहती है जो उसे चुटकी भर सम्मान से सम्मानित करेगा। दीपिका ने कहा, ''बचपन में, मै हमेशा अपनी नाक छिदवाना चाहती थी लेकिन मै ऐसा नहीं कर पाई। मै हमेशा स्टिक-ऑन बिंदी या एक्सेसरीज़ का उपयोग करती। हालांकि, इस किरदार के लिए, मैंने नाक छिदवा ली है और मै रोमांचित हूं कि यह मुझ पर अच्छी लग रही है। पियर्सिंग करवाने का अनुभव काफी यादगार और डरावना था। याद है कि मेरी नाक से थोड़ा खून बह रहा था। मुझे वापस जाना पड़ा और इसे दोबारा करवाना पड़ा। यह दर्दनाक था, लेकिन अंत में, यह इसके लायक था। मंगल घरेलू महिलाओं के साथ मेल खाता है और नाक छिदवाना उसकी पहचान का महत्वपूर्ण पहलू है। मै नाक छिदवाकर इसका सम्मान करना चाहती थी।''

# विवादित चेहरों से किनारा, खराब रिपोर्ट कार्ड वालों का भी कटा पत्ता

## 20 फीसदी से ज्यादा वर्तमान सांसदों के टिकट काटे

**भाजपा** की 195 लोकसभा उम्मीदवारों की पहली सूची में कुछ संदेश छिपे हैं, जो इस बात का संकेत हो सकते हैं कि बाद की सूचियों में क्या होने वाला है। बीजेपी की इस लिस्ट में सबसे बड़ा एक संदेश केंद्रीय मंत्रियों के लिए है कि यदि उन्हें भविष्य में केंद्रीय मंत्रिपरिषद में अपनी जगह बनाए रखना है, तो उन सभी को जमीन पर उतरना होगा और जनादेश हासिल करना होगा। शायद इसीलिए बीजेपी ने अपनी पहली सूची में मोदी सरकार के 34 मंत्रियों को चुनावी मैदान में उतारा है। कई केंद्रीय मंत्री जो वर्तमान में राज्यसभा सांसद हैं, उन्हें भी भाजपा ने आगामी लोकसभा चुनाव में उतारने का फैसला किया है। बीजेपी ने जिन 195 संसदीय सीटों के लिए अपने उम्मीदवारों की सूची जारी की है, उनमें से 155 सीटों पर पार्टी ने 2019 के चुनावों में जीत हासिल की थी। भाजपा ने अपनी पहली सूची में 20 फीसदी से ज्यादा वर्तमान सांसदों के टिकट काट दिए हैं। इस पार पार्टी ने 50 वर्ष से कम उम्र के 47 उम्मीदवारों को टिकट दिया है।

## किसे-कहां से मिला टिकट

| स्थान | प्रत्याशी |
|---|---|
| वाराणसी | नरेंद्र मोदी |
| अंडमान-निकोबार | विष्णुपदा रे |
| अरुणाचल वेस्ट | किरण रिजिजू |
| अरुणाचल ईस्ट | तापिर गाव |
| उत्तर गोवा | श्रीपद येस्सो नाइक |
| दमन एवं दीव | लालूभाई पटेल |
| **असम** | |
| करीमगंज | कृपानाथ मल्ला |
| सिलवर | परीमल शुक्ला वैद्य |
| आटोनोमस | अमर सिंह |
| गुवाहाटी | बिजुली कलिता मेदी |
| मंगलदोई | दिलीप सहकिया |
| तेजपुर | रणजीत दत्ता |
| नौगांव | सुरेश बोरा |
| कलियाबौर | कामाख्य प्रसाद तासा |
| जोरहाट | तपन कुमार गोगोई |
| डिब्रूगढ़ | सर्वानंद सोनोवाल |
| लखीमपुर | प्रधान बरोआ |
| **छत्तीसगढ़** | |
| सरगुजा | चिंतामणि महाराज |
| रायगढ़ | राधेश्याम राठिया |
| जाजगीर चंपा | कमलेश जांगड़े |
| कोरबा | सरोज पांडे |
| बिलासपुर | तोखन साहू |
| राजनंदगांव | संतोष पांडे |
| दुर्ग | विजय बघेल |
| रायपुर | बृजमोहन अग्रवाल |
| महासमुंद | रूपकुमारी चौधरी |
| बस्तर | महेश कश्यप |
| कांकेर | भजराज नांद |
| **दिल्ली** | |
| चांदनी चौक | प्रवीण खंडेलवाल |
| उत्तर पूर्वी दिल्ली | मनोज तिवारी |
| नई दिल्ली | बांसुरी स्वराज |
| पश्चिमी दिल्ली | कमलजीत सहरावत |
| दक्षिणी दिल्ली | रामवीर सिंह बिधूड़ी |
| **गुजरात** | |
| कच्छ | विनोदभाई लखमाशी चावड़ा |
| बनासकांठा | रेखाबेन हितेशभाई चौधरी |
| पाटण | भरतसिंहजी दाभी |
| गांधीनगर | अमित शाह |
| अहमदनगर प. | दिनेशभाई कोडरभाई मकवाना |
| राजकोट | परषोत्तम रुपाला |
| पोरबंदर | मनसुखभाई मंडाविया |
| जामनगर | पूनमबेन माडम |
| आणंद | मितेशभाई रमेशभाई पटेल |
| खेड़ा | देवुसिंह चौहान |
| पंचमहल | राजपालसिंह महेंद्रसिंह जाधव |
| दाहोद | जसवन्तसिंह भाभोर |
| भरूच | मनसुखभाई वसावा |
| बारडोली | प्रभुभाई नागरभाई वसावा |
| नवसारी | सीआर पाटिल |
| **जम्मू एवं कश्मीर** | |
| उधमपुर | जितेंद्र सिंह |
| जम्मू | जुगल किशोर शर्मा |
| **झारखंड** | |
| राजमहल | ताला मरांडी |
| दुमका | नील सोरेन |
| गोड्डा | निशिकांत दुबे |
| कोडरमा | अन्नपूर्णा देवी |
| रांची | संजय सेठ |
| जमशेदपुर | विद्युत बरण महतो |
| सिंहभूम | गीता कोड़ा |
| खूंटी | अर्जुन मुंडा |
| लोहारदगा | समीर उरांव |
| पलामू | विष्णु दयाल राम |
| हजारीबाग | मनीष जयसवाल |
| **केरल** | |
| कासरगोड | एम.एल. अश्विनी |
| कण्णूर | सी.रघुनाथ |
| वडकरा | प्रफुल्ल कृष्ण |
| कोजिक्कोड | एम.टी. रमेश |
| मलप्पुरम | अब्दुल सलाम |
| पोन्नानी | निवेदिता सुब्रमण्यन |
| पालक्कड | सी. कृष्णकुमार |
| त्रिशूर | सुरेश गोपी |
| अलपुझा | शोभा सुरेंद्रन |
| पत्तनमतिट्टा | अनिल के. एंटनी |
| अट्टिंगल | वी. मुरलीधरन |
| तिरुवनंतपुरम | राजीव चन्द्रशेखर |

## खराब रिपोर्ट कार्ड वालों के टिकट कटे

पार्टी ने अपनी पहली लिस्ट के जरिए उन मौजूदा सांसदों को कड़ा संदेश दिया है, जिनका प्रदर्शन उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहा है। हालांकि पहली सूची में भाजपा ने उन सीटों पर फोकस किया है, जो 2019 के चुनावों में वह हार गई थी। पिछले आम चुनावों में जीती गईं कुछ सीटों पर बीजेपी ने अपने उम्मीदवार बदल दिए हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण दिल्ली की सीटें हैं। पार्टी ने पहली सूची में दिल्ली की जिन 5 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा की है, उनमें से केवल एक मौजूदा सांसद को उम्मीदवार के रूप में बरकरार रखा है।

भोजपुरी सिंगर और एक्टर मनोज तिवारी एक बार फिर उत्तर पूर्वी दिल्ली सीट से चुनाव लड़ेंगे। लेकिन चांदनी चौक से हर्षवर्धन, नई दिल्ली से मीनाक्षी लेखी को पार्टी ने टिकट नहीं दिया है। भगवा पार्टी ने एक और बड़े संदेश में दक्षिण दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी, पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश साहिब सिंह वर्मा और भोपाल की सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर सहित से किनारा कर लिया है। बिधूड़ी ने पिछले साल संसद में दानिश अली के खिलाफ अपनी नफरत भरी सांप्रदायिक टिप्पणियों से विवाद खड़ा कर दिया था, जबकि प्रज्ञा सिंह ठाकुर की महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का जश्न मनाने वाली टिप्पणी खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पसंद नहीं आई थी।

## जनाधार वाले नेताओं का किया सम्मान

भाजपा ने अपनी पहली सूची में तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों और दो पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे-बेटी को टिकट देकर यह संदेश दिया है कि वह अपने मेहनती और जनाधार वाले नेताओं को भूलती नहीं है। पार्टी ऐसे नेताओं का सम्मान बरकरार रखती है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को बीजेपी ने विदिशा से चुनाव लड़ाने का फैसला किया है। इस बात की भी पूरी संभावना है कि केंद्र में सरकार बनने पर उन्हें कोई बड़ा पद दिया जाएगा। इसी तरह त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब और असम के पूर्व सीएम सर्बानंद सोनोवाल को पार्टी ने क्रमशः त्रिपुरा वेस्ट और डिब्रूगढ़ से टिकट दिया है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया के बेटे दुष्यंत सिंह को झालावाड़ और दिल्ली की पूर्व सीएम सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज को नई दिल्ली से भाजपा ने अपना प्रत्याशी बनाया है।

## बड़े चेहरे फिर उतरे मैदान में

उत्तर प्रदेश की वाराणसी सीट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर उम्मीदवार होंगे। लखनऊ से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को टिकट दिया गया है। गुजरात की गांधीनगर सीट से गृह मंत्री अमित शाह फिर से चुनाव लड़ेंगे। अमेठी से लगातार तीसरी बार केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी चुनाव मैदान में होंगी। खीरी से केंद्रीय मंत्री अजय मिश्र टेनी को मौका मिला है। गुना से ज्योतिरादित्य सिंधिया, कोटा से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, पोरबंदर से स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया, कांग्रेस से आईं सिंहभूम की मौजूदा सांसद गीता कोडा को सिंहभूम से भाजपा ने टिकट दिया है। खजुराहो से मध्य प्रदेश भाजपा प्रमुख वीडी शर्मा और तिरुवनंतपुरम से केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर चुनाव लड़ेंगे। श्रीपद नाइक गोवा पश्चिम से चुनाव लड़ेंगे। वह वर्तमान में केन्द्र सरकार में राज्यमंत्री हैं।

## इन पूर्व मुख्यंत्रियों को मिला मौका

मध्य प्रदेश की चर्चित विदिशा सीट से प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान चुनाव लड़ेंगे। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा को भी टिकट मिला है। उन्हें खूंटी सीट से टिकट मिला है। त्रिपुरा पश्चिम सीट से से त्रिपुरा के पूर्व सीएम बिप्लब देव चुनाव मैदान में होंगे। असम के पूर्व मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल डिब्रूगढ़ से प्रत्याशी बनाए गए हैं। इसके अलावा सूची में गुजरात के मुख्यमंत्री रहे नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे राजनाथ सिंह के नाम भी हैं। मध्य प्रदेश में भोपाल सांसद साध्वी प्रज्ञा की जगह भोपाल के पूर्व मेयर आलोक शर्मा को टिकट दिया है। शर्मा विधानसभा चुनाव में भी उतरे थे। हालांकि, उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। सतना सांसद गणेश सिंह और मंडला सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते को भी फिर से टिकट दिया गया है। ये दोनों सांसद 2023 के विधानसभा चुनाव के दौरान भी मैदान में थे। दोनों को हार का सामना करना पड़ा था।

## चार भोजपुरी सितारे भी होंगे मैदान में

भाजपा की सूची में चार भोजपुरी सितारों को जगह मिली है। पवन सिंह को पश्चिम बंगाल की आसनसोल सीट से टिकट दिया गया है। यहां से अभिनेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शत्रुघ्न सिन्हा टीएमसी के सांसद हैं। 2019 में यहां से गायक और पूर्व केंद्रीय मंत्री बाबुल सुप्रियो भाजपा के टिकट पर जीते थे। सुप्रियो ने बाद में सांसदी से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद वह टीएमसी में शामिल हो गए। ममता बनर्जी ने उन्हें विधानसभा चुनाव में उतारा जबकि, आसनसोल से भाजपा के ही पूर्व नेता शत्रुघ्न सिन्हा को उतारा था। इसी तरह गोरखपुर से भोजपुरी सितारे और मौजूदा सांसद रवि किशन चुनाव लड़ेंगे। एक और भोजपुरी स्टार मनोज तिवारी लगातार तीसरी बार उत्तर पूर्वी दिल्ली से मैदान में होंगे। आजमगढ़ सांसद दिनेश लाल यादव भी फिर से मैदान में हैं। यादव 2019 में यहां से सपा प्रमुख अखिलेश यादव से चुनाव हार गए थे। हालांकि, 2022 में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद अखिलेश ने सांसदी से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद हुए उप-चुनाव में दिनेश लाल यादव ने अखिलेश के भाई धर्मेंद्र यादव को हराया था।

## पैराओलंपियन झाझरिया को भी टिकट

पद्मभूषण से सम्मानित जैवलिन थ्रोअर देवेंद्र झाझरिया की राजनीति में एंट्री हो गई है। उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने चुरू से टिकट दिया है। 2019 में यहां से भाजपा के राहुल कस्वां जीते थे। 28 फरवरी को दो बार पैरालंपिक में स्वर्ण विजेता देवेंद्र झाझरिया ने भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) के नौ मार्च को होने वाले चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए बुधवार को नामांकन पत्र दाखिल किया। उनके अलावा किसी ने इस पद के लिए आवेदन नहीं दिया है। ऐसे में झाझरिया का निर्विरोध निर्वाचन होना तय है। वर्तमान में दीपा मलिक इसकी चेयरमैन हैं।

## दिल्ली में पांच नाम , सिर्फ मनोज तिवारी को दोबारा मिला टिकट

भोजपुरी स्टार मनोज तिवारी को एक बार फिर उत्तर पूर्वी दिल्ली से उम्मीदवार बनाया गया है। मीनाक्षी लेखी की जगह पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज को नई दिल्ली सीट से टिकट दिया गया है। दक्षिण दिल्ली से रमेश बिधूड़ी की जगह दिल्ली विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी को टिकट मिला है। पश्चिम दिल्ली से कमलजीत सहरावत और चांदनी चौक से प्रवीण खंडेलवाल भाजपा उम्मीदवार होंगे। चांदनी चौक से पूर्व स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन मौजूदा सांसद हैं। वहीं, पश्चिम दिल्ली से प्रवेश साहिब सिंह वर्मा मौजूदा सांसद हैं।

## मुझे भी गिलहरी की तरह योगदान देने का अवसर मिला : शिवराज सिंह

**भोपाल।** लोकसभा चुनाव के लिए विदिशा से प्रत्याशी घोषित किए जाने पर पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसे गिलहरी की तरह योगदान देने का अवसर बताया है। साथ ही कहा है कि जनता की सेवा करने मे कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। चौहान ने सोशल मीडिया पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी युगपुरुष और युगदृष्टा हैं। उन्होंने भारत का अभूतपूर्व विकास कर जनकल्याण का इतिहास रचा और अब विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने में मुझे भी गिलहरी की तरह योगदान देने का अवसर मिला है। विदिशा से प्रत्याशी बनाए जाने पर उन्होंने लिखा है कि विदिशा संसदीय क्षेत्र से मेरा अत्यंत आत्मीय रिश्ता है, यहां की जनता ने पांच बार सांसद के रूप में चुनकर मुझे सेवा करने का सौभाग्य दिया। एक बार पुनः पार्टी ने अपने इसी परिवार की सेवा का अवसर दिया है। चौहान ने आगे लिखा है कि प्रधानमंत्री देश की जनता के दिल में हैं। उनके नेतृत्व में भाजपा 400 से अधिक सीटें प्राप्त कर सरकार बनाएगी।

**जनता की सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा**

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को विदिशा से लोकसभा का टिकट मिलने के बाद मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उनके निवास पर पहुंचकर पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई दी।

## चुनाव प्रबंधन समिति का गठन, हेमंत को कमान

**भोपाल।** भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनाव के लिए चुनाव प्रबंधन समिति का गठन किया है। समिति का संयोजक विधायक हेमंत खंडेलवाल को एवं मंत्री राव उदय प्रताप सिंह, प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी और प्रदेश महामंत्री रणवीर सिंह रावत को सह-संयोजक बनाया गया है। पार्टी प्रदेश कार्यालय में शनिवार को चुनाव प्रबंधन की विभिन्न टोलियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, लोकसभा चुनाव प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह व प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद उपस्थित रहे। शर्मा ने कहा कि लोकसभा चुनाव की दृष्टि से चुनाव प्रबंधन समिति का गठन किया गया है। समिति के संयोजक पूर्व सांसद व विधायक हेमंत खंडेलवाल हैं, वहीं प्रदेश शासन के मंत्री राव उदय प्रताप सिंह, प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी और प्रदेश महामंत्री रणवीर सिंह रावत को चुनाव प्रबंध समिति का सह संयोजक बनाया गया है।

**राव उदय प्रताप, सबनानी एवं रावत सह-संयोजक**

शर्मा ने कहा कि लोकसभा चुनाव की दृष्टि से बैठक आयोजित की गई है। बैठक में लोकसभा चुनाव में प्रदेश के सभी 64523 बूथों में चुनाव जीतने को लेकर चर्चा हुई। इसके साथ ही प्रदेश के हर बूथ पर 370 वोट बढ़ाने और प्रदेश में 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने के लिए पार्टी जुटी हुई है। अच्छे से अच्छा चुनाव प्रबंधन कैसे किया जाए, इस पर भी चर्चा हुई है। भारतीय जनता पार्टी की पूरी टीम लोकसभा चुनाव में पार्टी को ऐतिहासिक जीत दिलाने के लिए कार्य कर रही है।

## मेनका-वरुण के टिकट पर पेंच

**सुल्तानपुर,** पीलीभीत और कैसरगंज जैसी चर्चित सीटों पर भाजपा ने अभी प्रत्याशियों के नाम की घोषणा नहीं की है। बताते चलें कि सुल्तानपुर से मेनका गांधी और पीलीभीत से वरुण गांधी वर्तमान सांसद हैं। वरुण गांधी की बात करें तो वर्ष 2013 में पार्टी अध्यक्ष रहते राजनाथ सिंह ने उन्हें अपनी टीम में शामिल किया था। वह पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव बनाए गए थे। वह भाजपा में अब तक के सबसे युवा राष्ट्रीय महासचिव रहे हैं। मोदी सरकार आने के बाद वरुण अक्सर अपने बयानों से चर्चा में रहते हैं। कभी किसान तो कभी बेरोजगारी पर वह खुले मंच से अपनी ही सरकार से सवाल करते नजर आते हैं। वहीं वरुण गांधी की मां मेनका गांधी, मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में केंद्र में मंत्री बनाई गईं। लेकिन, मोदी 2.0 पर उन्हें स्थान नहीं मिला।

## बृजभूषण की सीट भी फंसी

***पिछले*** वर्ष सबसे चर्चित नामों में बृजभूषण शरण सिंह का नाम शामिल है। वह वर्तमान में कैसरगंज सीट से सांसद हैं। कुश्ती संघ के अध्यक्ष रहते उन पर महिला पहलवानों ने शोषण के आरोप लगाए। पहलवानों ने धरना भी दिया। यह मामला पूरे देश में चर्चित रहा। इस दौरान उन्होंने प्रियंका गांधी को किसी भी सीट से चुनाव हराने तक की बात कही। लेकिन, अब उनकी ही सीट फंसी दिख रही है। ऐसे में राजनीतिक पंडित अपने-अपने अनुमान लगा रहे हैं। हालांकि भाजपा की पिछली रणनीतियों को देखा जाए तो वह किसी के भी कयास से बिल्कुल हटकर रही हैं। अब इस बार देखना होगा कि ऊंट किस करवट बैठता है। इन दिग्गजों की सीट बचती है या जाती है।

## आशीष के टिकट पर विश्नोई ने कसा तंज

**भोपाल।** लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा के जबलपुर सीट से प्रत्याशी आशीष दुबे को टिकट देने पर पाटन से विधायक अजय विश्नोई ने तंज कसा है। उन्होंने कहा है कि हमें भूलना होगा कि आशीष ने पार्टी के विरोध में काम किया था। विश्नोई ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा है कि भाजपा ने आशीष दुबे को लोकसभा उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने पार्टी के निर्णय का स्वागत करते हुए लिखा है कि हमें भूलना होगा कि हमारे चुनाव में आशीष ने पार्टी के विरोध में काम किया था। उन्होंने आगे लिखा है कि भाजपा को विजयी बनाना ही हमारा लक्ष्य होगा। विश्नोई चंडीगढ़ के एक अस्पताल में भर्ती हैं और शनिवार को उनका ऑपरेशन हुआ है।

## संक्षिप्त खबरें

### फुटबॉल महासंघ ने नये महिला कोच पर की चर्चा

**नई दिल्ली।** अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) की महिला समिति ने शनिवार को यहां राष्ट्रीय टीमों के लिए नए कोच की नियुक्ति तथा 'ए' और 'बी' लाइसेंसधारक कोचों की भर्ती पर चर्चा की। भारतीय टीम ने हाल के दिनों में अच्छा प्रदर्शन किया था। वह ढाका में खेली गई सैफ अंडर-19 महिला चैंपियनशिप में संयुक्त विजेता रही जबकि इसके बाद सीनियर महिला टीम ने तुर्की महिला कप में दूसरा स्थान हासिल किया था। भारत की अंडर-16 टीम अभी सैफ चैंपियनशिप में भाग ले रही है और उसने अपना पहला मैच आसानी से जीता है। एआईएफएफ के कार्यवाहक महासचिव सत्यनारायण ने कहा,'महिला सीनियर टीम को कई महीनो तक अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने का मौका नहीं मिला। टीम को निकट भविष्य में अधिक से अधिक मैच खेलने का मौका देने की योजना है।' समिति ने नए प्रशिक्षकों की नियुक्ति के अलावा विभिन्न महिला राष्ट्रीय टीमों के प्रदर्शन की समीक्षा भी की।

### जेसिका पेगुला सैन डिएगो ओपन के सेमीफाइनल में

**सैन डिएगो।** शीर्ष वरीयता प्राप्त जेसिका पेगुला ने तीन सेट तक चल कड़े मुकाबले में अन्ना ब्लिंकोवा को 6-1, 2-6, 6-2 से हराकर सैन डिएगो ओपन के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। विश्व में पांचवें नंबर की खिलाड़ी पेगुला का सामना अब मार्ता कोस्त्युक से होगा, जिन्होंने अनास्तासिया पाव्लुचेनकोवा को पहला सेट गंवाने के बाद 3-6, 6-4, 6-3 से पराजित किया। तीसरी वरीयता प्राप्त एम्मा नवारो ने डारिया सैविले को 6-4, 6-2 से हराकर लगातार दूसरे वर्ष सेमीफाइनल में प्रवेश किया। उनका मुकाबला केटी बोल्टर से होगा, जिन्होंने 2022 की उपविजेता डोना वेकिच को 6-4, 6-3 से हराया। यह एक साल से भी कम समय में नवारो का टूर स्तर पर पांचवां सेमीफाइनल होगा। उन्होंने इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के होबार्ट में अपना पहला डब्ल्यूटीए खिताब जीता।

### गौतम गंभीर की राजनीति से संन्यास की घोषणा

**नई दिल्ली।** भारतीय टीम के पूर्व सदस्य और पूर्वी दिल्ली के सांसद गौतम गंभीर ने सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने का फैसला किया है। गंभीर ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष जय प्रकाश नड्डा को संबोधित पोस्ट में लिखा, 'मैंने माननीय पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा जी से अनुरोध किया है कि मुझे मेरे राजनीतिक कर्तव्यों से मुक्त करें ताकि मैं अपनी आगामी क्रिकेट प्रतिबद्धताओं पर ध्यान केंद्रित कर सकूं। मै माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और माननीय गृह मंी अमित शाह को हृदय से धन्यवाद देता हूं जिन्होने मुझे लोगों की सेवा करने का अवसर दिया। जय हिन्द।' गौरतलब है कि आगामी लोकसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवारों की पहली सूची आने से पहले गंभीर ने राजनीतिक करियर को अलविदा कहा है।

### यूएस ओपन कप में नहीं खेलेंगे लियोनेल मेसी

**शिकागो।** अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी अमेरिका के महत्वपूर्ण फुटबॉल टूर्नामेंट यूएस ओपन में भाग नहीं लेंगे। मेसी की अमेरिकी टीम इंटर मियामी ने इस बार यूएस ओपन कप में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। मेजर लीग सॉकर की 26 टीमों में से केवल आठ टीम ही इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगी। मेजर लीग सॉकर की जिन 8 टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने का फैसला किया है उनमें अटलांटा, डलास, ह्यूस्टन, कैनसस सिटी, लॉस एंजिल्स एफसी, साल्ट लेक, सैन जोस और सिएटल शामिल हैं। इस प्रतियोगिता में कुल 96 टीमें अपना भाग्य आजमाएंगी।

### एमबापे की जगह फिर उतरा स्थानापन्न खिलाड़ी

**पेरिस।** स्टार फुटबॉलर किलियन एमबापे को लगातार दूसरे मैच में आधे खेल से बाहर बुला दिया गया, लेकिन इसके बावजूद मोनाको ने पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) को फ़्रांसीसी फुटबॉल लीग में गोलरहित बराबरी पर रोक दिया। पीएसजी ने मध्यांतर के बाद एमबापे को बाहर बुलाकर उनकी जगह स्थानापन्न खिलाड़ी उतारा। यह लगातार दूसरा मैच है जबकि इस स्टार स्ट्राइकर की जगह किसी अन्य खिलाड़ी को स्थानापन्न के रूप में मैदान पर उतारा गया। पिछले साल सितंबर के बाद यह दूसरा अवसर है जबकि पीएसजी की टीम गोल करने में नाकाम रही। पीएसजी ने दूसरे नंबर पर काबिज ब्रेस्ट पर 12 अंक बढ़त कर ली।

# देशपांडे और शार्दुल ने तमिलनाडु की पहली पारी 146 रन पर समेटी

**मुंबई (भाषा)।** तुषार देशपांडे (24 रन पर तीन विकेट) और शार्दुल ठाकुर (48 रन पर दो विकेट) की शानदार गेंदबाजी के सामने तमिलनाडु की टीम रणजी ट्रॉफी के दूसरे सेमीफाइनल के पहले दिन मुंबई के खिलाफ अपनी पहली पारी में महज 146 रन पर आउट हो गयी।

दिन का खेल खत्म होने तक मुंबई ने दो विकेट पर 45 रन बना लिये। मुंबई की टीम पहली पारी में अभी तमिलनाडु से 101 रन पीछे है और उसके आठ विकेट बचे हुए है। स्टंप्स के समय मुशीर खान 24 और रात्रि प्रहरी मोहित अवस्थी एक रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। कुलदीन सेन ने सलामी बल्लेबाज पृथ्वी साव (पांच) को जबकि किशोर ने भूपेन लालवानी (15) को आउट किया। तमिलनाडु के कप्तान बी साई किशोर का टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला उलटा पड़ गया क्योंकि यहां के बीकेसी मैदान में तेज गेंदबाजों को स्विंग जबकि स्पिनरों को टर्न मिल रहा था। तमिलनाडु ने 17 रन तक चार और 42 रन तक पांच विकेट गंवा दिए थे। अनुभवी विजय शंकर (44) और वाशिंगटन सुंदर (43) ने छठे विकेट के लिए 48 रन की साझेदारी कर टीम कुछ हद तक राहत दिलायी। शार्दुल ठाकुर ने पारी की चौथी गेंद पर बी साई सुदर्शन को पगबाधा किया। इसके बाद अवस्थी ने तमिलनाडु के लिए इस सत्र में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले एन जगदीशन (चार) को शॉट लेग पर मुशीर के हाथों कैच कराया। पहले बदलाव के बाद गेंदबाजी के लिए आये देशपांडे ने प्रदोष रंजन पॉल, आर साई किशोर को आउट कर तमिलनाडु को बैकफुट पर धकेल दिया। टीम का स्कोर अभी 42 रन तक ही पहुंचा था कि बाबा इंद्रजीत ने देशपांडे की गेंद को तनुष कोटियान के हाथों में खेल दिया। लंच के सत्र से पहले और बाद में शंकर और वाशिंगटन ने डट कर मुंबई के गेंदबाजों का सामना किया। शंकर ने इस दौरान देशपांडे की गेंद पर कुछ शानदार चौके लगाये। इस साझेदारी को तोड़ने के लिए मुंबई के कप्तान अजिंक्य रहाने ने गेंद एक बार फिर शार्दुल को थमाई और इस गेंदबाज ने शंकर की 109 गेंद में आठ चौके की मदद से 44 रन की पारी को खत्म किया। दूसरी स्लिप में शम्स मुलानी ने उनका शानदार कैच लपका। शंकर के आउट होने के बाद वाशिंगटन से तेजी से रन बनाना शुरू किया। मोहम्मद मोहम्मद (17) ने शार्दुल के ओवर में तीन चौके लगाकर उनका कुछ हद तक साथ दिया। मुशीर ने मोहम्मद को पगबाधा किया जबकि कोटियान ने अजित राम (15) को चलता किया। वाशिंगटन कोटियान का दूसरा शिकार बने।

■ पहले दिन मुंबई ने दो विकेट पर बनाये 45 रन

**रणजी सेमीफाइनल**

■ विदर्भ के लिए करुण नायर ने खेली 105 गेंदों पर 63 रन की अर्धशतकीय पारी

मुंबई : रणजी ट्रॉफी में मुंबई के लिए गेंदबाजी करते तुषार देशपांडे।

## आवेश खान के चार विकेट, मप्र के खिलाफ विदर्भ 170 रन पर आउट

**नागपुर (भाषा)।** आवेश खान की अगुआई वाली गेंदबाजी इकाई के शानदार प्रदर्शन की बदौलत मध्य प्रदेश ने शनिवार को यहां रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल मैच के पहले दिन विदर्भ को पहली पारी में महज 170 रन पर समेट दिया। मध्य प्रदेश (मप्र) के लिए आवेश ने 49 रन देकर चार विकेट झटके जबकि कुलवंत खेजरोलिया ने 38 रन देकर और वेंकटेश अय्यर ने 28 रन देकर दो-दो विकेट चटकाकर उनका बखूबी साथ निभाया।

मध्य प्रदेश ने स्टंप तक पहली पारी में एक विकेट गंवाकर 47 रन बना लिये थे जिससे वह अभी 123 रन से पीछे है। वीसीए स्टेडियम की पिच इतनी हरियाली लिये हुए थी कि मध्य प्रदेश ने दिन में कुल 56.4 ओवर में से स्पिनरों से केवल 2.4 ओवर ही डलवाये। बायें हाथ के स्पिनर कुमार कार्तिकेय ने विदर्भ के अंतिम बल्लेबाज उमेश यादव का विकेट झटका। वहीं अन्य स्पिनर जैसे सारांश जैन दर्शक बने रहे। विदर्भ के लिए बल्लेबाजी में सिर्फ करुण नायर ही क्रीज पर टिककर खेल सके जिन्होंने 105 गेंद में नौ चौके से 63 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। भारतीय तेज गेंदबाज आवेश ने सलामी बल्लेबाज ध्रुव शोरे (13 रन) के स्टंप उखाड़कर मध्य प्रदेश को अच्छी शुरूआत करायी। फिर विदर्भ ने लगातार अंतराल पर विकेट गंवा दिये और टीम के लिए सबसे बड़ी भागीदारी अर्थव तायडे (39 रन, आठ चौके) और अमन मोखाडे (13 रन, 75 गेंद) के बीच 36 रन की रही। कर्नाटक के खिलाफ क्वार्टरफाइनल में शतक जड़ने वाले तायडे (63 गेंद) अय्यर की गेंद पर विकेटकीपर हिमांशु मंत्री को कैच दे बैठे। विदर्भ के लिए इस सत्र में सबसे ज्यादा रन जुटाने वाले करूण अब क्रीज पर उतरे। लेकिन उन्हें दूसरे छोर पर साथ नहीं मिला और आवेश ने मोखाडे को आउट कर दिया। मेजबान टीम ने फिर जल्द ही पांच रन के अंदर यश राठौड़ और कप्तान अक्षय वाडकर के विकेट गंवा दिये जिससे स्कोर पांच विकेट पर 106 रन हो गया। विदर्भ की कम से कम 200 रन तक पहुंचने की उम्मीद भी तब खत्म हो गयी जब करूण पुल शॉट खेलने के प्रयास में खेजरोलिया की गेंद पर बोल्ड हो गये।

■ पहले दिन का खेल समाप्त होने तक मध्य प्रदेश ने बनाये 1/47 रन

### भारत के तीनों खिलाड़ियों ने बाजी ड्रॉ खेली

**प्राग (भाषा)।** भारत के तीनों खिलाड़ियों आर प्रज्ञाननंदा, डी गुकेश और विदित गुजराती ने प्राग मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट के चौथे दौर में अपनी बाजियां ड्रॉ खेली। लगातार दो मैच में हार के बाद प्रज्ञाननंदा के लिए इसे अच्छी वापसी कहा जा सकता है। इस भारतीय खिलाड़ी ने स्थानीय खिलाड़ी नगुयेन थाई दाई वान के साथ अंक बांटे।

गुकेश ने उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसत्तारोव को कोई मौका नहीं दिया और अंक बांटे जबकि गुजराती पोलैंड के माट्यूस बार्टेल को खास चुनौती पेश नहीं कर पाए।

चौथे दौर में किसी भी बाजी का परिणाम नहीं निकला और इस तरह से खिलाड़ियों की स्थिति में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

### फिडे ने भाग लेने वाले खिलाड़ियों को वीजा जारी करने की अपील की

**नई दिल्ली (भाषा)।** प्रतिष्ठित कैंडिडेट्स प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को वीजा जारी करने में देरी पर चिंता जताते हुए अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ फिडे ने आवेदनों पर तत्काल कार्रवाई करने की अपील की। कनाडा तीन से 22 अप्रैल तक टोरंटो में होने वाले इस प्रतिष्ठित शतरंज टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा। इस प्रतियोगिता में भारत के पांच खिलाड़ी भाग लेंगे जिनमें दो महिला खिलाड़ी थी शामिल हैं। इस प्रतियोगिता से ओपन और महिला वर्ग दोनों में मौजूदा विश्व चैंपियन को चुनौती देने वाले खिलाड़ी का निर्धारण होगा। भारत से आर प्रज्ञाननंदा, विदित गुजराती और डी गुकेश ने इस प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया है जिसमें आठ खिलाड़ी डबल राउंड रोबिन आधार पर एक दूसरे का सामना करेंगे।

# न्यूजीलैंड के सामने 369 रन का लक्ष्य

**वेलिंगटन (न्यूजीलैंड) (एपी)।** कामचलाऊ ऑफ स्पिनर ग्लेन फिलिप्स ने 45 रन देकर 5 विकेट लिए जिससे न्यूजीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया को दूसरी पारी में 164 रन पर आउट करके पहले टेस्ट क्रिकेट मैच में अपनी उम्मीद जगा दी।

पहली पारी में 204 रन की बढ़त हासिल करने वाले ऑस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी में लचर प्रदर्शन के बावजूद न्यूजीलैंड के सामने 369 रन का लक्ष्य रखा। न्यूजीलैंड ने तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी दूसरी पारी में तीन विकेट पर 111 रन बनाए हैं और इस तरह से वह लक्ष्य से 258 रन पीछे है।

ऑस्ट्रेलिया ने सुबह अपनी दूसरी पारी दो विकेट पर 13 रन से आगे बढाई लेकिन चार घंटे से भी कम समय में उसने अपने बाकी बचे विकेट गंवा दिए। फिलिप्स ने अपने करियर में पहली बार पारी में 5 विकेट लेने का कारनामा किया।

उन्होंने उस्मान ख्वाजा (28), पहली पारी में शतक बनाने वाले कैमरून ग्रीन (34), ट्रैविस हेड (29), मिच मार्श (00) और एलेक्स कैरी (03) के विकेट हासिल किये। मैट हेनरी ने 36 रन देकर 3 विकेट लिए।

**पहला टेस्ट**

■ आस्ट्रेलिया के लिए पार्ट टाइम स्पिनर फिलिप्स ने झटके पांच विकेट

फिलिप्स के इस प्रदर्शन से न्यूजीलैंड मैच में वापसी करने में सफल रहा। उसका दारोमदार अब रचिन रविंद्र (नाबाद 56) और डेरिल मिशेल (नाबाद 12) पर टिका है। रविंद्र ने दिन का खेल समाप्त होने से कुछ देर पहले 77 गेंद पर अपना अर्धशतक पूरा किया। ऑस्ट्रेलिया ने हालांकि अंतिम सत्र में केन विलियमसन (09) का महत्वपूर्ण विकेट लेकर न्यूजीलैंड को करारा झटका दिया। पहली पारी में खाता खोले बिना रन आउट होने वाले विलियमसन को नाथन लियोन ने पहली स्लिप में स्टीव स्मिथ के हाथों कैच कराया जो मैच के परिणाम में अहम भूमिका निभा सकता है।

स्मिथ ने इसके बाद हेड की गेंद पर विल यंग (15) का कैच भी लिया। टॉम लैथम (08) आउट होने वाले पहले बल्लेबाज थे जिन्हें लियोन ने विकेट के पीछे कैच कराया। मैच के चौथे दिन बारिश होने की भविष्यवाणी की गई है और ऐसे में मैच ड्रॉ भी समाप्त हो सकता है।

## मसौदे को नजरअंदाज करने की खबरें गलत : हॉकले

**सिडनी (भाषा)।** क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीईओ निक हॉकले ने उन खबरों का खंडन किया है जिनमें कहा गया था कि टेस्ट क्रिकेट को बचाने के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने जो मसौदा पेश किया था उस पर तीन प्रमुख देशों भारत, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया ने गौर नहीं किया।

सिडनी मार्निंग हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार क्रिकेट के तीन शक्तिशाली बोर्ड ने उस दस्तावेज को नजरअंदाज कर दिया जिसे न्यूजीलैंड क्रिकेट के अध्यक्ष मार्टिन स्नेडेन ने तैयार किया था और जिसमें टेस्ट क्रिकेट को बचाने के लिए भविष्य के दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) में बदलाव करने की सिफारिश की गई थी।

हॉकले ने एसईएन क्रिकेट से कहा, 'स्पष्ट रूप से मुझे लगता है कि इस बारे में गलत रिपोर्टिंग की गई है। निश्चित तौर पर अभी हम इस पर विचार कर रहे हैं कि क्रिकेट कैलेंडर को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है और विश्व भर में क्रिकेट को कैसे आगे बढाया जा सकता है।' क्रिकेट में बदलाव के लिए जो मसौदा तैयार किया गया है, उसमें इंडियन प्रीमियर लीग की तरह अन्य टी20 लीग के लिए भी अतिरिक्त 'विंडो' रखने, विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की अंक प्रणाली में बदलाव करने, एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में ओवरों की संख्या घटाकर 40 करने, टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से जुड़ी आशंकाएं आदि शामिल हैं। हॉकले ने कहा क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया खेल के तीनों प्रारूपों को आगे बढाने में आईसीसी की मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, 'हम इस काम में पूरी तरह से शामिल हैं। मुझे लगता है कि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया का अच्छा प्रभाव है और मेरा मानना है कि खेल को आगे बढाने के संबंध में हमें आईसीसी के साथ वास्तव में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।' हॉकले ने कहा, 'मेरा मानना है कि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने इस खेल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है फिर चाहे वह विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की शुरुआत हो। मैं आईसीसी के एफटीपी कार्य समूह का हिस्सा हूं तथा यह सुनिश्चित कर रहा हूं कि हम तीनों प्रारूपों को मजबूत बनाए रखें।'

■ टेस्ट क्रिकेट को बचाने के लिए न्यूजीलैंड के पेश किये गये मसौदे पर गौर न करने का आरोप तीन बड़े देशों पर लगा था

# मिजोरम, दिल्ली संतोष ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

**ईटानगर (भाषा)।** मिजोरम ने रेलवे के खिलाफ 4-0 की बड़ी जीत के साथ ही शनिवार को यहां संतोष ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया। एक अन्य मैच में मणिपुर ने दिल्ली को 2-1 से पराजित किया। लेकिन दिल्ली भी अंतिम आठ में पहुंच गयी है।

शनिवार को ग्रुप बी के आखिरी दौर के मैचों से पहले ही मणिपुर, दिल्ली और रेलवे की टीमें अंतिम आठ में जगह बना चुकी थी।

ग्रुप बी से मिजोरम, महाराष्ट्र और कर्नाटक के पास क्वार्टर फाइनल में पहुंचने का मौका था। मिजोरम बड़ी जीत के साथ इस मौके को भुनाने में सफल रहा। मिजोरम से शिकस्त झेलने वाली रेलवे की टीम चार मार्च को पहले क्वार्टर फाइनल में सेना का सामना करेगी। इसी दिन गोवा और दिल्ली के बीच दूसरा क्वार्टर फाइनल होगा। पांच मार्च को मणिपुर का मुकाबला असम से होगा, जबकि मिजोरम का सामना केरल से होगा।

दिल्ली के खिलाफ मणिपुर के लिए संथोई मीतई और संगकर सिंह ने गोल किया। जबकि दिल्ली के लिए रिषभ दाब्रियाल ने एकमात्र गोल दागा। अंतिम मैच में महाराष्ट्र ने कर्नाटक को 3-1 से हराया। महाराष्ट्र के लिए मोहम्मद अराफात अंसारी ने तीनों गोल किये। रशीद ने कर्नाटक का गोल दागा।

■ ग्रुप बी के मैच में मिजोरम ने रेलवे को और मणिपुर ने दिल्ली को हराया

# मुंबई इंडियंस ने आरसीबी को सात विकेट से हराया

**बेंगलुरु (भाषा)।** मुंबई इंडियंस ने गेंदबाजी और बल्लेबाजी में खिलाड़ियों के अच्छे प्रदर्शन की बदौलत शनिवार को यहां महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के एकतरफा टी20 मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) पर 29 गेंद रहते सात विकेट से जीत हासिल की। बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद आरसीबी की बल्लेबाज मुंबई इंडियंस की गेंदबाजों के खिलाफ संघर्ष करती दिखीं जिससे टीम छह विकेट पर 131 रन ही बना सकी।

मुंबई इंडियंस ने फिर बल्लेबाजी में भी दबदबा बनाते हुए यह लक्ष्य 15.1 ओवर में तीन विकेट पर 133 रन बनाकर हासिल कर लिया। मुंबई की टीम चार मैच में तीसरी जीत से छह अंक लेकर तालिका में शीर्ष पर पहुंच गयी जबकि आरसीबी को लगातार दूसरी शिकस्त झेलनी पड़ी। मुंबई के लिए अमेलिया केर नाबाद 40 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहीं। उनके अलावा सलामी बल्लेबाज यास्तिका भाटिया ने 31 रन, हेली मैथ्यूज ने 26 रन और निमतित कप्तान हरमनप्रीत कौर की अनुपस्थिति में टीम की अगुआई कर रही नैट साइवर ब्रंट ने 27 रन का योगदान दिया। यास्तिका ने 16 गेंद में चार चौके और दो छक्के से 31 रन बनाकर टीम को तेज शुरुआत करायी। फिर मैथ्यूज और नैट साइवर ब्रंट ने उपयोगी योगदान दिया। अमेलिया की 24 गेंद में सात चौके जड़ित नाबाद पारी से मुंबई ने आसान जीत दर्ज की।

इससे पहले आरसीबी के लिए अगर एलिसे पैरी ने नाबाद 44 रन और जॉर्जिया वारेहैम ने 27 रन नहीं बनाये होते तथा दोनों ने छठे विकेट के लिए 52 रन की भागीदारी नहीं की होती तो आरसीबी इस स्कोर तक भी नहीं पहुंच पाती। मुंबई की टीम अपनी नियमित कप्तान हरमनप्रीत और मुख्य तेज गेंदबाज शबनीम इस्माइल के बिना उतरी जो चोटों से उबर रही हैं।

**स्कोर बोर्ड (प्लेयर ऑफ द मैच : अमेलिया केर)**

**रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु महिला :**

| | |
|---|---|
| स्मृति मंधाना का नेट साइवर बो वोंग | 09 |
| सोफी डिवाइन पगबाधा बो साइका | 09 |
| सब्बीनेनी मेघना का कीर्थाना बो नेट साइवर | 11 |
| एलिस पेरी नाबाद | 44 |
| रिचा घोष का साजना बो वस्त्रकार | 07 |
| सोफिया मोलिन्यूक्स बो वस्त्रकार | 12 |
| जॉर्जिया वारेहेम का अमेलिया बो नेट साइवर | 27 |
| श्रेयांक पाटिल नाबाद | 07 |
| **अतिरिक्त :** | **05** |
| **कुल** (20 ओवर में छह विकेट पर) | **131** |

**विकेट पतन** : 1/14, 2/31, 3/33, 4/42, 5/71, 6/123

**गेंदबाजी** : नेट साइवर ब्रंट 4-0-27-2, हेली मैथ्यूज 4-0-29-0, इसी वोंग 3-0-20-1, साइका इशाक 2-0-9-1, अमेलिया केर -03-0-20-0, पूजा वस्त्रकार 3-0-14-2, कीर्थाना बालकृष्णन 1-0-11-0

**मुंबई इंडियंस महिला :**

| | |
|---|---|
| यास्तिका भाटिया का रिचा बो डिवाइन | 31 |
| हेली मैथ्यूज का मंधाना बो श्रेयांक | 26 |
| नेट साइवर ब्रंट का मोलिन्यूक्स बो वारेहेम | 27 |
| अमेलिया केर नाबाद | 40 |
| पूजा वस्त्रकार नाबाद | 08 |
| **अतिरिक्त :** | **01** |
| **कुल** (15.1 ओवर में तीन विकेट पर) | **133** |

**विकेट पतन** : 1/45, 2/69, 3/118

**गेंदबाजी** : रेणुका सिंह ठाकुर 2-0-25-0, सोफी मोलिन्यूक्स 3-0-26-0, सोफी डिवाइन 2-0-16-1, जॉर्जिया वारेहेम 2.1-0-18-1, श्रेयांक पाटिल 2-0-15-1, सिमरन बहादुर 1-0-11-0, एलिस पेरी 2-0-10-0, आशा शोभना 1-0-12-0

**परिणाम : मुंबई इंडियंस सात विकेट से विजयी**

मुंबई इंडियंस के लिए जिताऊ पारी खेलतीं अमेलिया केर।

# मुंबई सिटी से हार गई पंजाब एफसी

**नई दिल्ली । (एजेंसी)।** मुंबई सिटी एफसी ने शनिवार को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में खेले गए इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2023-24 के डबल हेडर के पहले मुकाबले में पंजाब एफसी को 3-2 से हरा दिया। मुंबई सिटी एफसी की जीत में विंगर लल्लियानजुआला छांगटे ने 16वें और स्पेनिश स्ट्राइकर इकर गुआरोटक्सेना ने 53वें व 64वें मिनट में गोल किए। मुंबई सिटी के राइट-बैक के जयेश राणे को दो गोल में सहायता प्रदान करने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया।

उधर बेंगलुरु एफसी ने अपने मैदान कांतीरवा स्टेडियम में केरला ब्लास्टर्स को 1-0 से हरा दिया। बेंगलुरु के लिए स्पैनिश मिडफील्डर हावी फर्नांडीज ने 89वें मिनट में एकमात्र गोल किया।

आइलैंडर्स की संघर्षपूर्ण जीत से चेक हेड कोच पीटर क्रैटकी राहत महसूस कर रहे होंगे। मुंबई सिटी एफसी 17 मैचों में दस जीत, पांच ड्रॉ और दो हार से 35 अंक लेकर तालिका में तीसरे से दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। वहीं, पंजाब एफसी की हार से ग्रीक हेड कोच स्टाइकोस वेरगेटिस निराश होंगे। पंजाब एफसी 17 मैचों में चार जीत, पांच ड्रॉ और आठ हार से 17 अंक लेकर तालिका में दसवें स्थान पर बनी हुई है।

मैच का पहला गोल 16वें मिनट में आया, जब विंगर लल्लियानजुआला छांगटे ने मुंबई सिटी को शुरुआती बढ़त दिलाते हुए स्कोर 1-0 कर दिया। बॉक्स के अंदर बायीं तरफ से विंगर बिपिन सिंह के शॉट को गोलकीपर रवि कुमार ने ब्लक जरूर किया लेकिन रिबाउंड पर दाहिनी तरफ पहुंची गेंद को छांगटे ने लेफ्ट फुटर शॉट लगाकर गोल लाइन के पार पहुंचा दिया। 37वें मिनट में फ्रेंच प्लेमेकर मादीह तलाल ने गोल करके पंजाब एफसी को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। कोलंबियाई स्ट्राइकर विल्मर जॉर्डन गिल ने बॉक्स के अंदर थ्रू-पास लेने के बाद गेंद को माइनस करके तलाल को दिया। तलाल ने बक्स के अंदर घुसने के बाद करारा लेफ्ट फुटर शॉट लगाकर गेंद को टप राइट कर्नर के अंदर गोल जाल में उलझा दिया जबकि मुंबई सिटी के गोलकीपर पूरबा लछेन्पा हवा में जंप करने के बावजूद बचाव नहीं कर पाए। यह सीजन में तलाल का चौथा गोल है। 39वें मिनट में कोलंबियाई स्ट्राइकर विल्मर जॉर्डन गिल ने इस सीजन का अपना चौथा गोल करके पंजाब एफसी को बढ़त दिलाते हुए स्कोर 2-1 कर दिया। फ्रेंच प्लेमेकर मादीह तलाल ने बायीं तरफ बक्स के अंदर घुसने के बाद क्रॉस डालकर सेकेंड पोस्ट की तरफ गेंद को सेंटर किया और जहां मौजूद गिल ने हेडर लगाकर गेंद को बॉटम राइट कॉर्नर के अंदर भेज दिया जबकि मुंबई सिटी के गोलकीपर पूरबा लछेन्पा खड़े-खड़े देखते रह गए।

**बेंगलुरु एफसी भी जीता**

# सुरेश रैना ने बल्ले से मचाई धूम, छत्तीसगढ़ को हराकर फाइनल में पहुंची वीवीआईपी उत्तर प्रदेश

**ग्रेटर नोएडा।** इंडियन वेटरन प्रीमियर लीग (आईवीपीएल) के दूसरे सेमीफाइनल में शनिवार की देर रात वीवीआईपी उत्तर प्रदेश ने छत्तीसगढ़ वॉरियर्स को 19 रन से मात दी। इस जीत के साथ उत्तर प्रदेश ने फाइनल में जगह बना ली है। अब फाइनल में रविवार को उसका मुकाबला मुंबई चैंपियंस से होगा, जिसने पहले सेमीफाइनल में रेड कार्पेट दिल्ली को 60 रन से पराजित किया।

शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले गये सेमीफाइनल में वीवीआईपी उत्तर प्रदेश ने 20 ओवर में 8 विकेट गंवाकर 203 रन का स्कोर खड़ा किया। इस पारी में पवन नेगी ने 50 गेंद पर 94 रन की पारी खेली। वहीं कप्तान सुरेश रैना के बल्ले का भी जलवा दिखा और उन्होंने 33 गेंद पर 58 रन की पारी खेली। जवाब में छत्तीसगढ़ वॉरियर्स की टीम ने शुरुआत अच्छी की लेकिन मिडिल ओवर्स में पारी डगमगाई और टीम दो विकेट गंवाकर सिर्फ 184 रन ही बना सकी। उत्तर प्रदेश के लिए कप्तान सुरेश रैना और पवन नेगी ने तीसरे विकेट के लिए 142 रन की साझेदारी की। रैना और नेगी के बाद अंत के ओवर्स में परविंदर सिंह ने 16 गेंद पर 33 रन बनाए और उत्तर प्रदेश का स्कोर 200 पार पहुंचाया।

203 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी छत्तीसगढ़ वॉरियर्स को नमन ओझा और जतिन सक्सेना ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों ने 96 रन की ओपनिंग पार्टनरशिप की। नमन ओझा और सौरभ तिवारी पवेलियन लौट गए। मिडिल ओवर्स में टीम का रन रेट कम हो गया। इसी कारण वॉरियर्स की टीम सेमीफाइनल मुकाबले में जीत नहीं दर्ज कर पाई।

इससे पहले खेले गये सेमीफाइनल में मुंबई चैंपियंस के लिए फिल मस्टर्ड (73), निर्वान अत्री (56) और अभिषेक झुनझुनवाला (51) ने शानदार अर्धशतकीय पारियां खेलीं जिसकी बदौलत मुंबई ने तीन विकेट खोकर 253 रन का स्कोर खड़ा किया। फिल मस्टर्ड को प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया। जवाब में दिल्ली की टीम 193 रन ही बना पाई और 60 रन से मुकाबला हार गई। जवाब में रेड कार्पेट दिल्ली को पहले ओवर में ही करारा झटका लगा और इन फॉर्म खिलाड़ी रिचर्ड लेवी रनआउट हो गए। इस विकेट से टीम को बड़ा नुकसान हुआ। यहां से फरमान अहमद और असेला गुणारत्ने ने भी निराश किया। थिसारा परेरा भी कुछ खास योगदान नहीं दे पाए। अंत में दिल्ली 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 193 रन ही बना पाई।

**इंडियन वेटरन प्रीमियर लीग**

हमारी पसंद-नापसंद से हमारे व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। मिसाल के तौर पर आप घूमने के लिए किस तरह के स्थान पर जाना पसंद करते हैं? किस तरह के स्थल आपको आकर्षित करते और कैसे तरीके सुकून प्रदान करते हैं? इनसे भी आपके व्यक्तित्व के बारे में काफी कुछ जाना जा सकता है। कैसे, यहां बता रहे हैं आपको।

## कहां घूमना है पसंद आपको बताता है आपकी पर्सनालिटी

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

कई जाने-माने मनोवैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं का मानना है कि पर्यटन के लिए आप किन जगहों का या कैसे तरीकों का चयन करते हैं, इससे आपके व्यक्तित्व का बहुत कुछ अंदाजा लगाना संभव है। यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जिनीया के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया कि कोई भी व्यक्ति अपनी पर्सनालिटी के आधार पर ही पर्यटन स्थल का चयन करता है।

### अध्ययन के निष्कर्ष

ये अनुसंधानकर्ता इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि आखिर क्यों बहुत से लोग छुट्टियों में पहाड़ों की ओर रुख करते हैं, तो कई मैदानी इलाकों को पसंद करते हैं, कुछ लोगों को नदी, समंदर और झीलें अपनी ओर खींचती हैं, तो कुछ लोग जंगली इलाकों में सैर-सपाटे में रोमांच का अनुभव करते हैं। कुछ ऐसे ही सवाल हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू में भी उठाए गए। अमेरिका की पर्यटन संस्था 'यूएस ट्रैवल एसोसिएशन' के मुख्य अधिकारी और अमेरिकन इंटरप्राइज इंस्टीट्यूट के ऑफिसर आर्थर सी. ब्रुक्स, जो 'द कंजर्वेटिव हार्ट' के लेखक भी हैं, ने भी इस विषय पर काफी अध्ययन किया है। मनोविज्ञानी डॉ. स्टेनले सी प्लौग ने भी करीब दो लाख पर्यटकों से बातचीत करने और उनकी आदतों और चयन प्रक्रिया पर तीन दशकों तक अध्ययन करने के बाद पाया कि अलग-अलग पर्सनालिटी वाले लोगों के मनोरंजन और रोमांच की जरूरतें भी अलग होती हैं, इसलिए हर कोई अलग प्रकार के टूरिस्ट स्पॉट पर जाकर आनंद की अनुभूति करता है। डॉ. प्लौग ने अपने अध्ययन के नतीजों और अनुभवों को तीन किताबों में समेटा है। लीजर ट्रैवलः अ मार्केटिंग हैंडबुक, लीजर ट्रेवलः मेकिंग इट अ ग्रोथ मार्केट अगेन और चेंजिंग पर्सपैक्टिव्स इन मेंटल इलनेस। आइए जानते हैं, पर्यटन के स्थान और तौर तरीके क्या इंगित करते हैं हमारे व्यक्तित्व के बारे में?

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट : सी बीच

समुद्र के किनारे दूर-दूर तक बिखरी सुनहरी रेत, सूरज की धूप से चमकते बालू के कण और नीली आभा लिए समुद्र की लहरें पसंद करने वाले नेचर लवर होते हैं। घर से दूर जाकर, लहरों का शोर सुनना और अजनबी लोगों के साथ बैठना इन्हें खूब भाता है। इन्हें खुली जगहें पसंद आती हैं।

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट हिस्टोरिकल-आर्टिस्टिक प्लेसेस

प्राचीन स्मारकों, ऐतिहासिक स्थलों और कलात्मक स्थलों में घूमना पसंद करने वाले कलाप्रेमी और बुद्धिजीवी होते हैं। इन्हें कलात्मक भवन, शिल्पकला के नमूने और कला की बारीकियां देखना, सीखना और उन्हें सराहना अच्छा लगता है। इनके मन में परंपराओं, संस्कारों के प्रति आदर होता है, इतिहास के प्रति जिज्ञासा होती है और कुछ नया सीखने की ललक भी होती है। ऐसे लोग अपने अतीत से भी काफी प्यार करते हैं, उससे जुड़ाव महसूस करते हैं।

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट : क्रूज

जिन लोगों को जमीन से दूर सागर की लहरों पर सवार क्रूज में बैठकर दुनिया की सैर करने का शौक होता है, वे दूसरों से खूब बातें करना पसंद करते हैं और बहिर्मुखी होते हैं। ये लोग खतरों से डरते नहीं और जिंदगी में जोखिम उठाना पसंद करते हैं। नए-नए प्रयोग करना और नई चीजों को आजमाना इनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण होता है।

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट फील्ड एरिया

मैदानी इलाकों में घूमना पसंद करने वाले लोग सेफजोन में रहने वाले और शांत स्वभाव के होते हैं। मैदानी इलाकों और तीर्थस्थानों को अपने पर्यटन स्थल के रूप में चुनने वालों को अकसर जोखिम वाले काम पसंद नहीं होते हैं। ये परंपराओं में विश्वास रखते हैं और नए-नए प्रयोग करने से कतराते हैं।

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉटः हिल स्टेशंस

पहाड़ी इलाकों की यात्रा पसंद करने वाले लोग रोमांचकारी अनुभवों के शौकीन होते हैं। इन्हें पहाड़ों में चौतरफा बिखरी हरियाली और ऊपर फैला नीला आसमान खूब लुभाता है। ये क्रिएटिव होते हैं, हवाएं बादल और बर्फ इन्हें आकर्षित करती हैं। ऐसे लोग शांत रहना पसंद करते हैं और आमतौर पर अंतर्मुखी होते हैं।

### फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट हेल्थ रिलेटेड डेस्टिनेशंस

कई लोग छुट्टी मिलने पर या तो किसी ऐसे शहर या कस्बे का चयन करते हैं, जहां जलवायु परिवर्तन का लाभ मिले और कुदरती सौंदर्य बिखरा हो या फिर ऐसी जगह का जहां जाने-माने योग या आयुर्वेद उपचार केंद्र हों। इन्हें फल-सब्जियां, स्वच्छ आबोहवा और दिनचर्या में परिवर्तन करना ज्यादा पसंद आता है। इन दिनों ऐसे हेल्थ टूरिस्ट्स की संख्या सिर्फ अपने देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी काफी बढ़ रही है।

यहां बताए गए विवरण के अनुसार आप फेवरेट टूरिस्ट स्पॉट के आधार पर ना केवल आप अपनी पर्सनालिटी के बारे में जान सकते हैं, किसी दूसरे की पर्सनालिटी के बारे में भी काफी कुछ समझ सकते हैं कि वो बंदा कैसा है, उसे क्या पसंद है और उसका नेचर कैसा है? *

### ऐसे भी होते हैं कुछ पर्यटक

**हर पल का रखते हैं हिसाबः** ये पर्यटक कहीं भी जाते हैं, वहां अपनी डायरी या नोटबुक में पल-पल का अनुभव संजोते हैं और साथ ही कैमरे से वीडियो या फोटोग्राफी भी करते हैं। इतना ही नहीं ये लोग फेसबुक और व्हाट्सएप के माध्यम से अपने दोस्तों को भी अपनी यात्रा का ब्यौरा देते रहते हैं। ये जिंदादिल और शौकीन स्वभाव के होते हैं और यात्रा का एक-एक पल पूरी तबीयत के साथ जीते हैं। ये किसी म्यूजियम या स्मारक में जाते हैं तो वहां के इतिहास जानने की कोशिश भी करते हैं और फिर अपने यात्रा संस्मरण अखबारों, पत्रिकाओं या सोशल मीडिया के माध्यम से सबके साथ बांटना चाहते हैं। *

**एकला चलो रेः** ये पर्यटक कहीं भी मित्रों, रिश्तेदारों या परिजनों के साथ जाने की बजाय अकेले ही जाना पसंद करते हैं। ये आत्मविश्वासी होते हैं और स्वतंत्र विचारक होते हैं। इन्हें नए अनुभव करना पसंद होता है और सोचा-समझा जोखिम उठाना भी। ये अधिकतर बातूनी होते हैं और किसी भी दूसरे व्यक्ति से आसानी से घुल-मिल जाते हैं। ये दोस्ताना स्वभाव के होते हैं। यात्रा करने का इनका मूल उद्देश्य खुद को अनजान परिस्थितियों में ढालना और किसी दूसरे के निर्णयों से दूर रहना होता है। *

**खतरों के खिलाड़ीः** कुछ लोगों को सीधे-सीधे घूम फिर कर लौट आने में मजा नहीं आता। ये लोग जिंदगी में कुछ रोमांचक और स्पाइसी चाहते हैं। ऐसे लोगों को ऐसे पर्यटन स्थल भाते हैं, जहां जरा मशक्कत करनी पड़े, भाग-दौड़ हो, उछल-कूद हो या खतरों से दो-दो हाथ करने का अवसर मिले। ऐसे लोग उन पर्यटन स्थलों को चुनते हैं, जहां वे बंजी-जंपिंग का आनंद ले सकें, वह जगह सबसे गर्म स्थान या सबसे ठंडा स्थान हो, जहां बर्फ जैसे ठंडे पानी में तैराकी का मौका मिले, स्कूबा डाइविंग का लुत्फ मिले या फिर जंगल में घूमना हो या पहाड़ों पर चढ़ना हो। *

## कहां से आया धरती पर पानी

पानी हम सभी को इतनी सहजता से उपलब्ध होता है कि इसके स्रोत और इसकी उत्पत्ति के बारे में ज्यादा गंभीरता से हम सोचते ही नहीं हैं। हालांकि इस बारे में अनेक धारणाएं प्रचलित हैं जिनके बारे में जानना बहुत रोचक है। साथ ही इससे पानी की महत्ता के बारे में भी पता चलता है।

{ रहस्य / एन. के. अरोड़ा }

अगर आपसे पूछा जाए कि इस धरती पर पानी कहां से, कब और कैसे आया? तो आप कहेंगे ये कैसा सवाल हुआ भला! दरअसल, हममें से अधिकतर लोगों ने तो इस सवाल के बारे में शायद ही कभी सोचा हो। लेकिन पिछले कुछ समय से वैज्ञानिक इस सवाल पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। पानी के बारे में कई तरह की अजीब कहानियां सदियों से कही और सुनी जाती रही हैं। हालांकि अभी तक वैज्ञानिकों को इस संबंध में कोई अंतिम जानकारी नहीं मिली है कि दूसरे ग्रहों में ना मिलने वाला पानी, धरती में क्यों पाया जाता है, इसका स्रोत क्या है या यह पानी इतना साफ क्यों होता है?

**प्रचलित हैं कई अवधारणाएंः** हमारे सौर मंडल में कोई ऐसा दूसरा ग्रह नहीं है, जहां इतनी भारी मात्रा में पानी हो और वो भी इतना साफ हो। पानी के धरती पर उपलब्धता से जुड़ी कई कहानियां प्रचलित हैं। पर किसी के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि यही अंतिम सत्य है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि पानी, चट्टानों और धूल से बना है, क्योंकि इनसे ही हमारा यह ग्रह बना है। कुछ वैज्ञानिकों के मुताबिक पानी सुदूर ब्रह्मांड से आया है और कुछ का कहना है, धूमकेतुओं की वजह से महासागरों की रचना हुई है। पानी के संबंध में बायोकेमिकल कहानियां भी कुछ कम नहीं हैं। बायोकेमिकल कहानियों के मुताबिक लवणीकरण और फोटोसिंथेसिस प्रक्रिया पानी निर्माण के लिए जिम्मेदार है। फोटोसिंथेसिस थ्योरी के मुताबिक, रासायनिक युग्मों को रेडिएशन प्रक्रिया के तहत विखंडित किया जाता है, इसके परिणामस्वरूप पानी की प्राप्ति होती है।

**क्या पुच्छल तारों में छुपा है रहस्यः** पानी की उत्पत्ति के संबंध में हुए चट्टानीय खनिजों के अध्ययन से यह बात तार्किक रूप से सत्य पाई गई है कि धरती में पानी 4 अरब साल पहले से मौजूद है। लेकिन घूम-फिरकर कहानी फिर अजनबी ग्रहों तक ही पहुंचती है। आखिर ये पानी आया तो आया कहां से? पानी के बारे में एक बड़ी रोचक कहानी ये है कि हैली, हयाकुटके और हेलबॉब यानी पुच्छलतारों के युग्म पानी के वास्तविक जन्मदाता हैं। खोजकर्ताओं के मुताबिक, जिनमें प्रमुख हैं डेविड ज्यूइट, कहते हैं, 'पानी का सबसे विश्वसनीय रिश्ता पुच्छलतारों से ही जुड़ रहा है।

**कठिन है अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचनाः** पानी की उत्पत्ति और उपलब्धता के संदर्भ में अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचना बहुत कठिन है। भले हमें लगे यह बहुत आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन है। लेकिन ऐसा नहीं है। पानी की प्रबंधकीय मात्रा पृथ्वी के विभिन्न रासायनिक तत्वों की हिस्सेदार है। पानी का अणु धरती को मजबूती भी देता है और उसे अपनी जगह बने रहने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। बहरहाल, पानी की कहानी उलझी है, रोचक भी है और यह भी हो सकता है कि अभी तक जो कहा सुना जा रहा है, अंधेरे में तीर मारना हो। पानी इस धरती पर कब, कैसे आया, इस सवाल का जवाब खोजने से भी ज्यादा जरूरी है कि फिलहाल धरती पर उपलब्ध उपयोगी पानी का सही और सीमित इस्तेमाल किया जाए, क्योंकि असीमित पानी में से कुछ ही हिस्सा हमारे उपयोग के योग्य है। *

### बेतहाशा होती है पानी की बर्बादी

पानी के इस्तेमाल के मामले में अमेरिका दुनिया के आम लोगों के मुकाबले बहुत ज्यादा पानी का इस्तेमाल करता है या दूसरे शब्दों में कहें पानी की बहुत बर्बादी करता है। अमेरिका 34,600 करोड़ गैलन पानी का इस्तेमाल हर दिन करता है, जो तकरीबन पूरे मध्यपूर्व देशों में इस्तेमाल होने वाले पानी से भी ज्यादा है। अमेरिका में 80 फीसदी पानी, सिंचाई और बिजली बनाने में इस्तेमाल होता है। अमेरिका का हर आदमी 80 से 100 गैलन पानी हर दिन इस्तेमाल करता है, जबकि सही मायने में दुनिया के हर व्यक्ति के खाते में 5 लीटर पानी भी एक दिन में उपलब्ध नहीं है।

{ कविता / अलका 'सोनी' }

## अकसर पुल बनाए जाते हैं

अकसर पुल बनाए जाते हैं
किनारों को
जोड़ने के लिए।
लेकिन उन्हें बनाते वक्त
ध्यान रखा जाता है कि
उनकी ऊंचाई इतनी
जरूर हो कि
नीचे बह सके नदी भी
बेरोक-टोक।
साथ ही यह भी कि
जब आए वेग नदी में
तो पुल धराशायी ना हो जाए
जो जोड़े रखता है
नदी के किनारों को।
क्या ऐसे ही पुल
नहीं बनाए जा सकते
मन के किनारों को
जोड़ने के लिए!
आवेगों को थामने के लिए!
जो चल रहे होते हैं
समानांतर,
समय की नदी के
साथ-साथ,
एक-दूसरे को देखते हुए।

{ लघुकथा / डॉ. शैल चंद्रा }

## भविष्य

जाने-माने भविष्यवक्ता के घर पर अपना भविष्य जानने के लिए युवाओं की लाइन लगी थी। इसी लाइन में पैंसठ साल की एक वृद्धा भी खड़ी थी। उसे देखकर भविष्यवक्ता ने पूछा, 'माता जी, आपकी बारी तो राम के घर जाने की है। अब आप अपना क्या भविष्य जानना चाहती हैं?'

वह वृद्धा बोली, 'क्या बताऊं पंडित जी, दूसरों के घर चौका-बर्तन करके किसी तरह अपने दो बेटों को पाल-पोस कर बड़ा किया। बड़ा बेटा अधिकारी है, जो मुझे अब पहचानने से इंकार कर देता है। उसके ऑफिस जाने पर मुझसे कहता है कि बार-बार क्यों आ जाती हो? उसके साथी हंसकर कहते हैं-अरे यार हो सकता है कि यह बूढ़ी महिला, पिछले जन्म में तुम्हारी मां हो। मैं उन्हें कैसे बताऊं कि पिछले जन्म की नहीं मैं इसी जन्म में उसकी मां हूं। दूसरा बेटा दुकानदार है। उसके पास जाने पर मुझे फटकार लगाते हुए वह कहता है, 'मां तुम बोहनी के समय मत आया करो।' यह कहते हुए मेरे हाथों में सौ-पचास रुपए पकड़ा देता है। मैं जानना चाहती हूं कि मेरे भविष्य में बेटों का सुख है या नहीं?'

भविष्यवक्ता बूढ़ी महिला की बात सुनकर कुछ देर उसे देखता रहा फिर लंबी सांस खींचकर बोला, 'माता जी, बेटों का सुख छोड़ो, बुजुर्गों के भाग्य में इस नए जमाने में बस दुख ही दुख है।' *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

## जटिल समय की सहज कविताएं

हाल में नीलेश रघुवंशी का पांचवां कविता संग्रह 'एक चीज कम' प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की कविताएं इस बात की तस्दीक करती हैं कि समय के साथ कवयित्री की दृष्टि जितनी व्यापक हो रही है, उनकी अभिव्यक्ति में उतनी ही गहनता भी समा रही है। वे अपने आस-पास के जीवन में छीजते जा रहे जीवन मूल्यों को सूक्ष्मता से लक्षित करती हैं। साथ ही इनकी अभिव्यक्ति के लिए वे ऐसे बिंब और मुहावरे गढ़ती हैं, जो उनकी कविताओं को कारुणिक सौंदर्य प्रदान करता है। मिसाल के तौर पर ये पंक्तियां देख सकते हैं, *'जीवन में दुख है इतना ज्यादा कि/ रह-रहकर दुख से फूटता है सुख'* (दुख का सुख)। *'चुप तो मुश्किल/ कहो तो मुश्किल/ जागो तो मुश्किल/ सोओ तो मुश्किल'* (समय और मुश्किल)।

कहने की जरूरत नहीं कि ऐसे प्रतीक शब्दों में कविता के माध्यम से हमारे समय के विद्रूप की व्याख्या कोई समर्थ रचनाकार ही कर सकता है। *

**पुस्तकः** एक चीज कम (कविता संग्रह), **लेखिकाः** नीलेश रघुवंशी, **मूल्यः** 199 रुपए, **प्रकाशकः** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

{ छोटी कहानी / शीला श्रीवास्तव }

## अपराधबोध

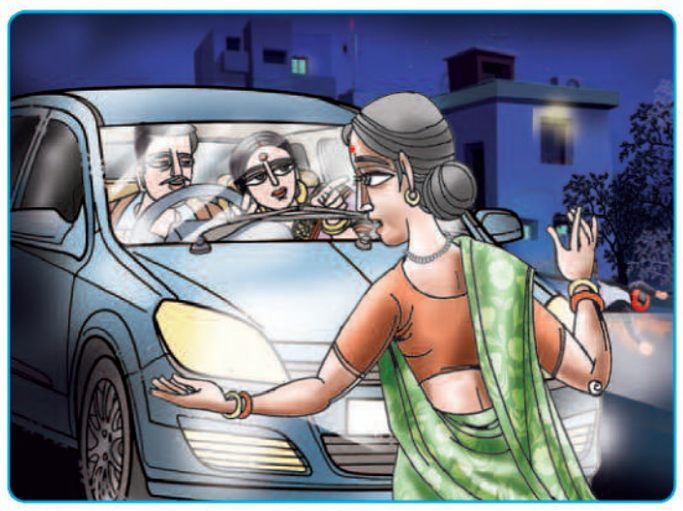

शैलजा और उसके पति नरेश वेडिंग पार्टी से लौट रहे थे। रात के करीब ग्यारह बज चुके थे। मार्केट में ज्यादातर दुकानें बंद हो चुकी थीं, लेकिन बेकरी की शॉप्स, ओपन एयर रेस्टोरेंट और पान-सिगरेट की गुमटियों पर लोग दिखाई दे रहे थे। शैलजा-नरेश का घर शहर से बाहर था। वे नई-नई बसी एक कॉलोनी में रहते थे। यह इलाका काफी सूनी जगह था। आए दिन यहां लूट-पाट की वारदातें होती रहती थीं।

रात काफी हो चुकी थी। शैलजा अंदर ही अंदर डर रही थी। काफी कोशिश के बाद भी कि पार्टी से जल्दी निकलें, लेकिन लौटने में देर हो ही गई थी। तभी अचानक एक महिला उनकी कार के सामने आकर रोकने का इशारा करने लगी। पति ने कार में ब्रेक लगाकर रोका।

'भैया मेरे पति को अस्पताल पहुंचा दें, मैं आपके पैर पड़ती हूं।' वह महिला बुरी तरह गिड़गिड़ाई।

'क्या हुआ तुम्हारे पति को?' शैलजा ने पूछा।

'एक ट्रक वाले ने टक्कर मार दी बहन जी। जल्दी कीजिए, इनकी हालत बहुत नाजुक है।' वह महिला अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए बोली।

शैलजा-नरेश ने देखा एक आदमी औंधे मुंह सड़क पर पड़ा हुआ था। उसकी बाइक जमीन पर पड़ी थी। अंधेरा होने की वजह से स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। शैलजा के दिमाग में शंका आई, 'हो ना हो ये लोग नाटक करके हमें लूटना चाहते हैं।' शैलजा तुरंत उस महिला से बोली, 'नहीं..नहीं.. हमें देर हो रही है। हमारे बच्चे घर पर इंतजार कर रहे हैं। आप पुलिस को फोन लगाएं।'

'कब से पुलिस को फोन कर रही हूं बहन जी, पर कोई फोन नहीं उठा रहा है। हमारी मदद, कीजिए बहन जी।' वह महिला फिर गिड़गिड़ाई।

शैलजा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने पति को कार आगे बढ़ाने का इशारा किया। पति ने एक पल कुछ सोचा, शैलजा की ओर देखा, लेकिन उसके तल्ख भावों को देखते हुए मन मसोस कर कार आगे बढ़ा दी।

'अरे क्या पता, यह इन लोगों की चाल हो। ऐसे लोग किसी भी बहाने से लिफ्ट लेते हैं, फिर लूटते हैं।' शैलजा एक सांस में बोल गई। नरेश पर पत्नी की बातों का कोई असर नहीं हुआ। वह जवाब में कुछ नहीं बोला।

'क्या हुआ, मैंने क्या कुछ गलत कहा?' शैलजा ने पति से पूछा। 'तुम आजकल कुछ ज्यादा ही क्राइम सीरियल्स देखती हो। हो सकता है वह औरत झूठ नहीं बोल रही हो, संकट में हो। ऐसी स्थिति में कोई बड़ा हादसा हो सकता है। ऐसे में सब तुम्हारी तरह सोचने लगे तो...।' आगे का वाक्य नरेश ने अधूरा ही छोड़ दिया। घर पहुंचने तक दोनों के बीच निस्तब्धता छाई रही।

घर पर बच्चे अपने माता-पिता का इंतजार कर रहे थे। बच्चों से बात करके दोनों का मन थोड़ा हल्का हुआ। शैलजा पति की नाराजगी को नजरअंदाज कर सोने चली गई।

सुबह के अखबार में रात वाली जगह पर एक्सीडेंट में एक आदमी की मौत की खबर थी। नरेश की बात सच साबित हुई। शैलजा का अंतर्मन अपराधबोध से भर उठा था। उसे आत्मग्लानि हो रही थी। *

# केंद्रीय कैबिनेट मंत्री व रामनगर औद्योगिक एसोसिएशन के संरक्षक डॉ. महेन्द्र नाथ पांडेय ने रामनगर औद्योगिक क्षेत्र में यूपीसीडा द्वारा किए गए विकास कार्यो का किया लोकार्पण

प्रखर वाराणसी। केंद्रीय कैबिनेट मंत्री व रामनगर औद्योगिक एसोसिएशन के संरक्षक डॉ महेन्द्र नाथ पांडेय ने रामनगर औद्योगिक क्षेत्र में यूपीसीडा द्वारा किए गए विकास कार्यो का लोकार्पण किया` इस अवसर पर रामनगर औद्योगिक एसोसिएशन के अध्यक्ष देव भट्टाचार्य ने कहा कि पूर्व में प्रदेश में जब दूसरी सरकार थी तब रामनगर औद्योगिक क्षेत्र की हालत इतनी खराब थी कि उधमी चन्दौली से पलायन कर रहे थे यहाँ न सड़क थी और न नाली थी तब डॉ महेन्द्र नाथ पांडेय चन्दौली के सांसद बनकर आए और उन्होंने यहाँ की स्थिति देखकर रामनगर औद्योगिक एसोसिएशन के उद्यमियों से वादा किया कि जब प्रदेश में भाजपा की सरकार बनेगी तो इस औद्योगिक क्षेत्र को वे प्रदेश का एक मॉडल औद्योगिक क्षेत्र बना देंगे। तत्तपश्चात उनके प्रयासों से फेज-1 और फेज-2 में कंक्रीट की सड़क 1282.74 लाख व

505 लाख रुपये औद्योगिक क्षेत्र फेज- 2 में आर.सी.सी नाली 422.30 लाख, दोनों फेज में ले-आउट गाइड मैप, चौहान साइनएज लेन बोर्ड 170.58 लाख, औद्योगिक क्षेत्र फेज -2 में प्रशाशनिक भवन के जीर्णोद्धार का कार्य 40.23 लाख फेज 1और फेज- 2 में सार्वजनिक शौचालय 18.67 लाख, पावर हाउस में लगे 10 एम बी ए का ट्रांसफॉर्मर आदि का लोकार्पण किया। डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय ने कहाँ की आगे भी औद्योगिक क्षेत्र के उद्यमियों की कोई भो समस्या होगी तो वे त्वरित कार्यवाही करते हुए समस्याओं का निदान करेंगे जिससे चन्दौली प्रदेश का एक मॉडल औद्योगिक हब बनेगा। मंत्री जी का स्वागत यूपीसीडा के वरिष्ठ प्रबंधक आर के चौहान व अध्यक्ष देव भट्टाचार्य ने किया तत्पश्चात देव भट्टाचार्य ने कहा कि इस अवसर पर यूपीसीडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी मयूर माहेश्वरी के द्वारा किये गए अभूतपूर्व योगदान को भुलाया नही जा सकता,क्योकि उनके द्वारा पूर्व में स्वीकृत किये गये कार्यो के अतिरिक्त 67 करोड़ का एक और स्वीकृति दोनों औद्योगिक क्षेत्रों के लिए किया जा रहा है जिसमे फेज-2 में 7 किलोमीटर आर.सी.सी नाली व फेज -1 में 8 किलोमीटर आर.सी.सी नाली तथा रोड के दोनों तरफ 2-2 मीटर पेवर ब्लॉक, दोनों औद्योगिक क्षेत्रों में पार्को का बाउंड्रीवाल और सुंदरीकरण ,दोनों औद्योगिक क्षेत्रों में सुरक्षा को देखते हुए सीसी कैमरा, सेंट्रल कंट्रोल कमांड के साथ दोनों औद्योगिक क्षेत्रों के चौराहों का सौंदियकरण,नेक्सटिंग हट, बस शेल्टर,फेज-1 में एन्ट्री गेट व ट्रक पार्किंग आदि तमाम कार्य जिससे दोनों औद्योगिक क्षेत्र प्रदेश का एक मॉडल बनेगा। कार्यक्रम के उपस्थित विशिष्ट अतिथि दीनदयाल नगर विधायक रमेश जायसवाल ने कहा कि उद्यमियों की हर सम्भव मदद किया जाएगा` संचालन एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चंद्रेस्वर जायसवाल ने किया। इस अवसर में एसोसिएशन के महामंत्री सतीश गुप्ता, सचिव अजय राय, कोषाध्यक्ष पंकज बिजलानी, राकेश जायसवाल, जग्गनाथ ,वैभव वर्मा, हरिवंश सिंह सहित इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

## सहजनवां में भीषण सड़क हादसा डिसियम-पिकअप की टक्कर में डिसियम चालक घायल, पिकअप चालक व परिचालक की मौके पर मौत

प्रखर सहजनवां गोरखपुर। जनपद के सहजनवां थाना अन्तर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग-28 पर सेंट जेवियर्स स्कूल के सामने,भीटी रावत में रविवार कि सुबह भोर में करीब 5 बजे सड़क दुघर्टना में डिसियम ट्रक और बोलेरो पिकअप की भयंकर टक्कर में पिकअप के चालक और परिचालक की मौके पर हुई मौत,तथा डीसीएम चालक गंभीर रूप से हो गया। रविवार कि भोर में फैजाबाद कि तरफ से गोरखपुर की तरफ जा रही मुगीयो से लदी एक बिहार नम्बर कि पिकअप गाड़ी का टायर भीटी रावत में भ्रष्ट हो गया जहां सड़क पर ही गाडी के बीच घुसकर चालक व परिचालक टायर बदलने कि कोशिश में ही थे की पिछे से तेज रफ्तार में आई डिसीयम ने जोरदार टक्कर मारी दी यह टक्कर इतनी जोरदार थी कि गाड़ियों के परखच्चे उड़ गए,तथा गाड़ी दुसरे लेन पर जा कर पलट गई। इस हादसे में दोनो शख्स की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई,जबकि डिसीयम चालक गंभीर रूप से घायल हो गया है.घायल डिसियम चालक को एंबुलेंस से अस्पताल ले जाया गया। घटना के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर 2 घंटे से अधिक समय तक जाम लग रहा। जिसे एनएचआई द्वारा क्रेन बुला कर चालू करवाया गया। इस पूरी दुर्घटना में सहजनवां पुलिस को काफी मशक्कतो का सामना मना करना पड़ा। खबर लिखे जाने तक मृत्यु की पहचान नहीं हो पाई थी।

## संक्षिप्त खबरें

### निःशुल्क नेत्र परीक्षण का आयोजन

प्रखर चंदवक जौनपुर। ग्राम सभा बहिरी और बरहपुर में समाज सेवक सूबे. मेजर (से.नि.) मिथिलेश कुमार यादव के द्वारा निःशुल्क नेत्र परीक्षण का सफल आयोजन सदगुरु सेवा ट्रस्ट के सदगुरु नेत्र चिकित्सालय चित्रकूट द्वारा आयोजित किया गया । इस नेत्र जाँच शिविर में ग्राम सभा बहिरी और बरहपुर के ४६० महिला पुरुष ने अपनी आँख की जाँच कराया । इनमें ६७ लोगो को मोतियाबिंद की समस्या से पीड़ित पाये गये इनका निःशुल्क ऑपरेशन सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय द्वारा किया जायेगा ।१७५ लोगो को निःशुल्क दवा वितरित की गई ।कार्यक्रम को लेकर सभी क्षेत्रवासियों को बहुत उत्साह था । कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डा. मुकेश वर्मा नोडल अधिकारी सीमओ कार्यालय जौनपुर के द्वारा किया गया ।कार्यक्रम में श्री आशीष यादव राहुल , जितेंद्र यादव,श्री अनिल यादव मैनेजमेंट गुरु के पिता जी श्री मेजर राम करन, श्री संजय पांडेय , श्री साहब चौबे , श्री चंद्रकेश जायसवाल, सुशील सिंह दादा , रामराज यादव , सीताराम,जैकेश कनौजिया , राम प्रवेश सिंह श्री विजय बहादुर सिंह, हीरामनी सिंह जवाहिर यादव ,सुशील सिंह, अरविंद सिंह,कमलेश यादव,विनोद सिंह , डा.कमलेश कुमार, इंदरसेन, विपिन नीतेश, अंश , मनीष , संदीप ,राकेश आदि उपस्थित थे। इस पूरे नेत्र शिविर के लिए क्षेत्रवासियों द्वारा सद्गुरू सेवा संघ का आभार प्रकट किया गया ।

### बृजमनगंज में श्री श्याम जी की निकली कलश यात्रा

प्रखर पूर्वांचल महराजगंज ब्यूरो। जनपद महराजगंज के नगर पंचायत बृजमनगंज कस्बे में प्राइमरी स्कूल के पास मारवाड़ी समाज के ईस्टदेव श्री श्याम मंदिर का निर्माण होने पर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भगवत कथा के साथ आज से प्रारंभ होगा।शनिवार को दोपहर 12 बजे मारवाड़ी समाज के लोगों द्वारा मंदिर से गाजेबाजे के साथ नगर भ्रमण के लिए कलशयात्रा निकाला गया ।कुंदन अग्रवाल, अनूप मोदी,बैधनाथ, नटवर जी गोयल, सोना अग्रवाल ,आदित्य अग्रवाल,चंदन अग्रवाल सहित काफी संख्या में महिलाएं पुरुष सम्मिलित रहे।

### नकबजनी का अपराध कारित करने के आरोप में 01 नफर अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से 01 अदद हैमर मशीन व ब्लोवर बरामद

प्रखर सहजनवां गोरखपुर।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद गोरखपुर द्वारा चोरी के अपराधों पर अंकुश लगाने एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में, पुलिस अधीक्षक उत्तरी के मार्गदर्शन में, क्षेत्राधिकारी गीडा के पर्यवेक्षण में व थानाध्यक्ष सहजनवां के नेतृत्व में उ0नि0 घनश्याम उपाध्याय मय पुलिस टीम द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 120/2024 धारा 457,380 भादवि से संबंधित अभियुक्त भानू प्रताप गिरी पुत्र जनार्दन गिरी निवासी चिरैयाडाढ़ थाना गीडा जनपद गोरखपुर को चोरी के 01 अदद हैमर मशीन व ब्लोवर के साथ गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तार की टीम में उ0नि0 घनश्याम उपाध्याय, हे0का0 राकेश सिह,कां0 इन्द्रजीत यादव,उक्त बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 411 भादवि की बढ़ोतरी की गयी । अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

### टेबलेट एवं स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

प्रखर सहजनवां गोरखपुर। प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी टैबलेट एवं स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम रविवार को गोरखपुर के राजकीय जुबिली इंटर कॉलेज में संपन्न हुआ। जहां हरपुर-बुदहट क्षेत्र कि अर्पना प्रजापति पुत्री राम राम प्रजापति सहित लगभग 500 छात्र-छात्राओं को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों टैबलेट में स्मार्टफोन वितरित किए गए। कार्यक्रम के इस मौके पर बतौर मुख्यातिथि सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा प्रदेश सरकार छात्रों के भविष्य को लेकर सदैव तत्पर है आज के इस डिजिटल युग में स्मार्टफोन और टेबलेट वितरण करने के बाद छात्राओं को अपनी अग्रिम पढ़ाई एवं रोजगार बढ़ाने में आसानी होगी।

# नेशनल ह्यूमन राइट्स एण्ड जस्टिस मूवमेंट बढ़ रहा कारवां

गोरखपुर। नेशनल ह्यूमन राइट्स एण्ड जस्टिस मूवमेंट पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रदेश महासचिव प्रवीण कुमार अग्रवाल ने प्रदेश कार्यालय मिजार्पुर गोरखपुर मे संगठन विस्तार पर चर्चा करते हुए कहा की राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय मोहम्मद अरशद खान पूर्व विधायक के दिशा निर्देश पर प्रदेश अध्यक्ष अशफाक हुसैन मेकरानी की अगुवाई मे अपने प्रदेश उपाध्यक्ष सैय्यद समीउद्दीन समी डा सईद रहबर प्रदेश कोषाध्यक्ष रेहान मारूफी के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश मे मानवाधिकार सेवा देते हुए संगठन मे बहुत बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं सदस्य बनाया गया है।

प्रदेश कमेटी में वरिष्ठ

अधिवक्ता अरुणेश शुक्ला को प्रदेश प्रवक्ता, देवेन्द्र कुमार को जिलाध्यक्ष डा इरफान खान जिला महासचिव गोविन्द कुमार मिश्रा संगठन मंत्री, लाल बाबू श्रीवास्तव ,फजल खान जिला सचिव ,सत्यावन यादव जिला उपाध्यक्ष गोरखपूर वही अमीत पाण्डेय जिलाध्यक्ष अजहरुद्दीन अज्जू जिला महासचिव डा फजलुर्रहमान जिला उपाध्यक्ष सिद्धार्थनगर तथा डा शाहीन फातमा जिलाध्यक्ष,डा पुनम गुप्ता जिला उपाध्यक्ष अमीर सुहेल मीडिया चेयरमैन कुशीनगर मनोनित किया गया।

# रोटरी द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर - महादान 9.0 का आयोजन 10 मार्च को

प्रखर कुशीनगर। अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संगठन रोटरी 3132 द्वारा रोटरी रक्तदान सप्ताह के अंतर्गत 10 से 17 मार्च तक रक्तदान महादान 9.0 का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे 50 से ज्यादा देशों की भागीदारी होगी। इस संपूर्ण मुहिम में 75000 यूनिट ब्लड रक्तदान करने का लक्ष्य रखा गया है। महादान 9.0 अभियान को सफल बनाने हेतु रोटरी क्लब कुशीनगर 3120 की मासिक बैठक कसया स्थित होटल कलश में की गई। बैठक में रोटरी के सचिव अजय सिंह ने बताया कि रक्तदान के माध्यम से हजारों लोगों को जीवनदान मिलेगा। महादान अभियान में रोटरी कुशीनगर इकाई द्वारा भी दिनांक 10 मार्च 2024, दिन रविवार को 11 से 4 बजे तक कुशीनगर जनपद के कसया स्थित पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस (डाक

बंगला) के प्रांगण में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर -महादान 9.0 कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। अध्यक्ष वाहिद अली एवं कार्यक्रम संयोजक विजय कृष्ण द्विवेदी के द्वारा इस महादान अभियान में अधिक से अधिक लोगों से रक्तदान करने की अपील की गई। इस अवसर पर रोटरी के अध्यक्ष वाहिद अली, सचिव अजय सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय कुमार गुप्ता, उपाध्यक्ष दिनेश कुमार यादव, उपाध्यक्ष संदीप रौनियार, कोषाध्यक्ष दुर्गेश चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव अखिलेश शर्मा, निदेशक अमित श्रीवास्तव, निदेशक शंभू कुशवाहा, रक्तदान संयोजक विजय कृष्ण द्विवेदी, डॉ सुनील सिंह, महेंद्र तिवारी मोनू, डॉ. जेके पटेल, राजीव तिवारी, अरूण कुमार मौर्य, डॉ. श्याम बिहारी जायसवाल, अमरेंद्र नारायण सिंह, राजाराम जायसवाल, श्री कृष्णा मद्धेशिया, सरवरे आलम (छोटे), हेमन्त गर्ग एवं आदिल खान उपस्थित रहे।

# इमाम के बताये हुए रास्तों पर चले तो जिंदगी कामयाब- मौलाना सय्यद तहजीबुल हसन

प्रखर वाराणसी। शिया समुदाय के आखिरी इमाम मेंहदी अलैहिस्सलाम की याद में शनिवार रात्रि को दालमंडी स्थित मरहूम हकिम मोहम्मद काजिम के आवास पर महफिल का आयोजन किया गया। हैदरी यूथ फाउंडेशन के बैनर तले आयोजित जश्न ए बकीयतुल्लाह में शहरे बनारस के अलावा प्रदेश भर के कई शायरों ने कलाम पेश किया। महफिल का आगाज कारी इमाम अली ने तिलावत ए कलाम पाक से किया। उसके बाद वहदत जौनपुरी, वारिस जलालपुरी, रेहान जलालपुरी, सय्यद साकिब अब्बास अज्जू, अतश बनारसी, बाकर बलियावी, प्रोफेसर अजीज हैदर, ऋषि बनारसी सहित कई शायरों ने अपने कलाम पेश किये। महफिल की निजामत करते हुए जनाब गुलजार मौलाई ने भी एक से बढ़ कर एक कई कलाम सुनाए। महफिल के बीच मे मौलाना सय्यद तहजीबुल हसन इमामे जुमा रांची ने तकरीर करते हुए कहा कि इंसान इमाम के बताए गए रास्तों पर चले तो उसकी जिंदगी कामयाब है। हर शिया आखिरी इमाम से मिलना चाहता है जबकि वो गैबत में है लेकिन मारफत के साथ इमाम को पुकारा जाए तो वो जरूर आएंगे और आपकी मुसीबत को आसान कर देंगे। महफिल की सदारत मौलाना शमीमुल हसनसाहब ने की। महफिल मे मुख्यरूप से सय्यद साकिब अब्बास, सय्यद सादिक अब्बास, अम्बर तुराबी, रेहान,शमीम अख्तर गदीरी,

मोहम्मद, हसनैन, आजम रिजवी, बाकर रजा, सागर, फराज,जिम्मी,इरफान, प्रिंस सहित कई लोग शामिल थे। कार्यक्रम के बानी जनाब साकिब अब्बास अज्जू ने लोगों का शुक्रिया अदा किया।

# महराजगंज से 9वीं बार बने पंकज चौधरी भाजपा के लोकसभा उम्मीदवार

प्रखर पूर्वांचल महराजगंज/ बृजमनगंज। भाजपा ने पहली लिस्ट में 195 लोकसभा सीटों के लिए अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं. इसमें यूपी की 51 लोकसभा सीट भी शामिल हैं, जिन पर पार्टी ने अपने उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर दिया है।जनपद महराजगंज से सांसद एवं वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी को 9वीं बार भाजपा सरकार द्वारा लोकसभा उम्मीदवार घोषित करने पर उन्होंनेश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया। भारत सरकार केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी को बताते चलें कि महराजगंज से 1991 से लगातार 9वी बार भाजपा में बनाया अपना प्रत्याशी...

राजनैतिक यात्रा1989 सभासद

1990 डिप्टी मेयर 1991 सांसद1996 सांसद 1998 सांसद 1999 हारे 2004 सांसद 2009 हारे 2014 सांसद 2019 सांसद और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री रहे अब तक।

फरेंदा विधानसभा के पूर्व भाजपा विधायक बजरंग बहादुर

सिंह बृजमनगंज नगर पंचायत अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने पंकज चौधरी को बधाई देते हुए भारी बहुमत के साथ लोकसभा चुनाव भाजपा को जीताने की बात की।बृजमनगंज ब्लाक प्रमुख उदयराज पूर्व ब्लाक प्रमुख हरिश्चंद्र सोनकर, बृजमनगंज सभासद मनोज जायसवाल,नंदनी,जेपी गौड़,काजू कन्नौजिया,जितेंद्र कुमार, चंद्रशेखर यादव, प्रदुमन सिंह, सुरेंद्र कुमार,अनूप कुमार, झीनक चौधरी, शिवप्रसाद,धर्मेंद्र, दिलीप गुप्ता सहित भाजपा समर्थकों ने पंकज चौधरी को लोकसभा उम्मीदवार बनने पर बधाई दी।

# परिवार परामर्श केंद्र में प्रस्तुत हुए 26 वाद जिसमें 07 परिवारों की हुई विदाई

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। परिवार परामर्श केन्द्र गाजीपुर द्वारा पुलिसं लाइन्स गाजीपुर के प्रागण मे पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह के कुशल निर्देशन मे कुल 26 परिवारिक विवाद प्रस्तुत हुये। इनमें अन्नु देवी पत्नी निगम राम नि0 आलम पट्टी थाना कोतवाली सदर जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि इसके ससुराल पक्ष के लोग मानसिक व शारिरीक प्रताडना देते रहते है इस पर पति को समझाकर विदाई करवाई गई। अंशू यादव पत्नी दीपक यादव निवासी शहपुर थाना भुडकुडा जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके ससुराल पक्ष के लोग उसके आभूषण को उसे पहनने नही देते है इस पर पति और ससुराल पक्ष के लोगो को समझाकर विदाई करावाई गई।शहजहा खातून पत्नी शमीम खॉ निवासी दजीटोला यसुफपुर थाना मोहम्मदाबाद जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके पति उसके घरेलू खर्च को वहन नही करते है जिससे वह मानसिक रूप से परेशान रहती है इस पर पति को समझाकर विदाई करवाई गई। रानी देवी पत्नी सोनू कुमार निवासी मिरनपुर शक्का थाना कोतवाली

सदर जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके पति उसकी पैत्रिक सम्पत्ति को बेच रहे है मना करने पर उसको मारते पीटते रहते है इस पर पति को समझाकर विदाई करवाई गई। सीमा यादव पत्नी आदित्य यादव निवासी शेखनपुर थाना कासिमाबाद जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके पति दूध पीने के लिये भैस की मांग करते है जबकि उसके पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नही है इस पर पति को समझाकर विदाई करवाई गई। पूजा देवी पत्नी छोटू बिन्द निवासी ग्राम कागदीपुर थाना कासिमाबाद जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके पति उसके आभूषण को लेकर उसको मायके भेज दिये इस पर पति को समझाकर विदाई करवाई गई। आरती राजभर पत्नी जयहिन्द राजभर निवासी सरायगोकुल थाना शदियाबाद जनपद गाजीपुर की शिकायत थी कि उसके पति ननद के कहने पर उसके साथ मारपीट करते रहते है इस पर ननद व पति को समझाकर विदाई करवाई गई। कुशलता के बाद 07 पारिवारिक विवाद को बन्द कर दिया गया 01 पारिवारिक विवाद के प्रकरण मे विधिक कार्यवाही का सुझाव दिया गया 08 पारिवारिक विवाद मे दोनो पक्ष उपस्थित नही थे 03 पारिवारिक विवाद के प्रकरण के निस्तारण मे अगली तिथि निर्धारित की गई इन सभी प्रकरणो के निस्तारण में सरदार दरशन सिंह, विक्रमादित्य मिश्र, वीरेन्द्र नाथराम, सारिता गुप्ता, महिला सहायता प्रकोष्ठ प्रभारी निरीक्षक वीरेन्द्र कुमार वर्मा, उपनिरीक्षक शशिधर मिश्रा, महिला मुख्य आरक्षी सुनिता गिरी, आरक्षी आलेश कुमार, महिला आरक्षी रागिनी चौबे, महिला होमगार्ड उर्मिला गिरी, महिला प्रातीय रक्षा दल गीता देवी आदि लोग उपस्थित रहे।

# सहजनवां तहसील में कार्यरत प्रधान सहायक रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार

प्रखर गोरखपुर। सहजनवां तहसील में कार्यरत प्रधान सहायक को रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया है शिकायतकर्ता घनश्याम कुमार शर्मा पुत्र स्व० ठाकुर प्रसाद, निवासी ग्राम व पोस्ट साहूकोल उर्फ मिजार्पुर बाजार, थाना खोराबार, जनपद गोरखपुर के रहने वाले ने बताया कि सामयिक संग्रह अमीनो की जिला स्तरीय वरिष्ठता सूची में नाम दर्ज करने के एवज में पैसे की मांग किया जा रहा था शिकायत कर्ता ने बताया कि तहसील सहजनवाँ जनपद गोरखपुर में नियुक्त देवेन्द्र पाल सिंह पुत्र स्व० दुर्गविजय सिंह निवासी म०नं0 469/9, बजरंग चौराहा, थाना इन्दिरानगर, जनपद लखनऊ सम्प्रति वासिल बाकी नवीस हइठ (प्रधान सहायक), तहसील सहजनवाँ, जनपद गोरखपुर के पद पर तैनाथ है उनके द्वारा घुस के एवज में 5,000/- रुपए रिश्वत की मांग की गयी, जिसके क्रम में शिकायतकर्ता श्री घनश्याम कुमार शर्मा के प्रार्थना पत्र पर कार्यवाही हुई दिनांक 02.03.2024 को समय 13.05 बजे एण्टीकरप्शन गोरखपुर की टीम द्वारा सहजनवाँ रेलवे स्टेशन के पास स्थित चाय की दुकान से

5,000/- रुपए रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है। आरोपी देवेन्द्र पाल उपरोक्त को समक्ष लोक सेवक साक्षीगण रंगे हाथ गिरफ्तार कर थाना गीडा,भेज दिया गया और उनके ऊपर धारा 7. 13 (1) बी सपठित धारा 13(2) भ्र०नि०अधि० 1988 यथा संशोधित अधि0 2018 के तहत विधिक कार्यवाही करते हुए अभियोग पंजीकृत करते हुए जेल भेज दिया गया। इस कार्यवाही से तहसील में अन्य घुस खोरो मे हड़कम्प मचा हुआ है।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं